अ॰ से॰ माकारेंको

सोवियत स्कूली शिक्षा की समस्याएं

प्रगति प्रकाशन
मास्को

संकलनकर्ता, टिप्पणीकार और भूमिका के लेखक – व० अगाल्सी
ए० पिस्कुनोव, शिक्षाशास्त्र के डॉक्टर

अनुवादक : राजवल्लभ ओझा

अनुक्रम

अ० सें० माकारेंको—एक प्रमुख सोवियत शिक्षाशास्त्री

प्रत्येक ऐतिहासिक युग मे ऐसे शिक्षक रहे है, जिनकी व्यावहारिक क्रियाशीलता और सैद्धांतिक विचारों ने शिक्षाशास्त्र और शिक्षण-प्रणाली को बहुत प्रभावित किया।

चेक यान कोमेन्स्की और अंग्रेज जॉन लाक (१७ वी सदी), फ्रांसीसी ज्यान जाक रूसो (१८ वी सदी), स्विस जोहान पेस्तालोत्ज़ी (१८ वी सदी का अन्त और १९ वी सदी की शुरुआत), जर्मन योहान्न हरबर्ट तथा फ्रेडरिक डाइस्टेरवेग और रूसी क० उशीन्स्की (१९ वी सदी) द्वारा प्रतिपादित शिक्षाशास्त्र-सम्बन्धी अनेक सिद्धान्त विश्व शिक्षाशास्त्रीय चिन्तन-निधि मे बहुमूल्य योगदान है। दशाब्दियो और यहा तक कि सदियो के दौरान इन प्रमुख शिक्षको और चिन्तको के विचारो ने शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार के विकास को बहुत हद तक निर्धारित किया है।

बीसवीं सदी के मध्य मे क्रियाशील सोवियत शिक्षक, सिद्धान्तकार और लेखक अन्तोन माकारेंको की शिक्षाशास्त्रीय देन वही भूमिका अदा कर रही है।

इस अनूठे व्यक्ति की ख्याति, जिन्होंने सोवियत शिक्षाशास्त्र और कम्युनिस्ट शिक्षा-प्रणाली को बहुत ही विकसित किया है, केवल सोवियत संघ मे ही नहीं, बल्कि इसकी सीमाओ से बाहर दूर-दूर तक फैली हुई है। विश्व के विभिन्न भागों मे माकारेंको के शिक्षा-सम्बन्धी उपन्यास "जीवन की ओर" और "कैसे जीएं" बहुत ही दिलचस्पी के साथ पढ़े जाते है।

माकारेंको की कृति "सोवियत स्कूली शिक्षा की समस्याएं" बहुत अर्से से सोवियत शिक्षको की बाइबिल रही है, जो उनके विशद शिक्षाशास्त्रीय

अनुभव का सामान्यीकरण है और जिसमें गहन सैद्धान्तिक निष्कर्षों का उल्लेख है। १९३८ की जनवरी में रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र की शिक्षा की जन-कमिसारियत के स्टाफ़ के सामने माकारेंको द्वारा दिये गये व्याख्यानों का यह संग्रह है।

"बच्चों की शिक्षा पर व्याख्यान" और "मां-बाप और बच्चे" उनकी पुस्तकें सोवियत घरेलू शिक्षा के सम्बन्ध में अपने ढंग के एकमात्र ग्रंथ हैं।

माकारेंको के शिक्षाशास्त्रीय विचार शिक्षा के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षण पर आधारित हैं। उन्होंने इस शिक्षण में निहित विचारों को गोर्की श्रम कोलोनी और द्जेर्जीन्स्की कम्यून दोनों में व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

इस समय केवल सोवियत संघ में नहीं, बल्कि पोलैंड, जर्मन जनवादी जनतंत्र, चेकोस्लोवाकिया, बुलगारिया, रूमानिया, हंगरी, मंगोलिया और अन्य देशों में उनका अनुभव रचनात्मक दृष्टि से लागू किया जा रहा है। विश्व भर में प्रगतिशील शिक्षक शिक्षा के बारे में उनकी पुस्तकें अभिरुचि के साथ पढ़ते हैं।

*

१३ मार्च, १८८८ को खार्कोव गुबेर्निया के बेलोपोल्ये नामक नगर में एक मजदूर परिवार में अन्तोन सेम्योनोविच माकारेंको का जन्म हुआ। उनके पिता रेलवे वर्कशाप में रंगसाज थे और यद्यपि उनकी आर्थिक स्थिति कठिन थी, परन्तु फिर भी उन्होंने नगर के छः वर्ष की पढ़ाई वाले स्कूल में बेटे की शिक्षा और उसके बाद उसी स्कूल में एक साल के लिये शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स के अध्ययन पर होनेवाला खर्च बर्दाश्त किया।

प्रथम रूसी क्रान्ति के ही साल १९०५ में उन्होंने क्रेमेन्चुग (उक्रइना) के एक उपनगर क्र्यूकोव के स्कूल में पढ़ाना शुरू किया। वह रूसी और ड्राइंग पढ़ाते थे। इस युवा शिक्षक ने अपने अध्यापन-कार्य के पहले ही वर्ष स्कूल और परिवार के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने तथा स्कूल के काम को शिक्षा देने की बंधी-बंधाई परम्परागत सीमाओं से बाहर ले जाने की कोशिशें कीं।

१९०५-१९०७ के तूफानी क्रान्तिकारी वर्षों में माकारेंको ने स्कूल की इमारत में रेल मजदूरों को अपनी राजनीतिक सभाएं करने में सहायता

पढ़ाई, रेलवे के स्कूलों में पढ़ानेवाले शिक्षकों की काग्रेस की तैयारी और सचालन में सक्रिय भाग लिया और बोल्शेविको द्वारा प्रकाशित अधिकाश राजनीतिक साहित्य का अध्ययन किया।

१९११ में माकारेको को उकइना मे क्रिवोय रोग से करीब १०० किलोमीटर दूर दोलीन्स्काया स्टेशन के प्राइमरी स्कूल में पढाने का काम मिला। उन्होंने यहा सगठन-सम्बन्धी अपनी प्रतिभा और भी अच्छी तरह प्रकट की: उन्होंने पढाई के अतिरिक्त यहा विद्यार्थियों के लिए विविध प्रकार के कार्यकलाप शुरू किए, वह उन्हें पर्यटन के लिए मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग, सेवास्तोपोल और दूसरे नगर ले जाते, यह समझाया करते कि अवकाश के समय उन्हें क्या पढना चाहिए और उन्हे इसके लिए प्रोत्साहन प्रदान किया करते थे, नाटक, मनोविनोद आदि सम्बन्धी विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया करते थे, अपने खाली समय, विशेष रूप से गर्मी की छुट्टियों का उपयोग आत्मविकास, पठन-पाठन, चित्राकन और सगीत के अध्ययन के लिए करते थे।

१९१४ के पतझड़ मे ६ वर्षों का शिक्षण-अनुभव प्राप्त कर माकारेंको पोल्तावा के शिक्षाशास्त्रीय सस्थान में प्रविष्ट हुए। उन्होंने शिक्षाशास्त्र का गहन स्वाध्याय किया और कविताए तथा कहानिया लिखने का भी अभ्यास किया। १९१७ में उन्होंने ससम्मान स्नातक की उपाधि प्राप्त की और क्र्युकोव के उसी स्कूल मे पढाने चले गए, जहा उन्होंने बारह वर्ष पहले शिक्षक का काम शुरू किया था।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद माकारेंको की शिक्षक-सम्बन्धी असाधारण प्रतिभा पूरे रूप मे विकसित हुई। सार्वजनिक शिक्षा विभाग ने उन्हे एक ऐसे स्कूल का इनचार्ज बनाया, जिसमें करीब एक हजार विद्यार्थी पढते थे। नये शिक्षाशास्त्र को सर्वप्रथम अपनानेवालों में माकारेंको भी एक थे, उन्होंने पुराने स्कूल को मेहनतकश लोगों के सोवियत स्कूल मे परिवर्तित करने के आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया और व्यावहारिक दृष्टि से कई नये तरीके लागू किये। विद्यार्थियों को पूर्ण रूप से संहत समूह में एकजुट करने के उद्देश्य से उनको टोलियों मे विभक्त कर उन्होंने सर्वप्रथम उनके काम को सगठित करने का प्रयास किया। माकारेंको ने बडी सफलता के साथ विविध प्रकार के पाठ्य, विषयेतर कार्यकलाप शुरू किए। शौकिया नाटक-सम्बन्धी कार्यक्रम इन में से एक था: उन्होंने स्वय नाट्याभिनय किए

और इस कार्य की ओर शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को आकृष्ट किया। उन्होंने मजदूरों की निरक्षरता दूर करने के लिए संध्याकालीन कक्षा भी शुरू की।

किन्तु, माकारेंको क्र्युकोव के स्कूल में अधिक समय तक अपना बहुमुखी कार्यकलाप चालू नहीं रख पाये। एक साल बाद गृहयुद्ध फैल जाने के कारण वह पोल्तावा जाने को विवश हो गए, जहां १९१९ के सितम्बर से १९२० के जून तक वह एक नये सोवियत स्कूल को क़ायम करने में संलग्न रहे।

१९२० में मास्को में हुई कोम्सोमोल की तीसरी अखिल-रूसी कांग्रेस में लेनिन ने युवक संघों के कार्यभार के सम्बन्ध में भाषण किया। माकारेंको, उनके सहयोगियों और सामान्यतया सभी सोवियत शिक्षकों ने सोवियत शिक्षा और कम्युनिस्ट निर्माण के बीच अटूट सम्बन्ध, समाजवादी निर्माण में मानवजाति द्वारा संचित उत्कृष्ट अनुभव के उपयोग की आवश्यकता और कम्युनिस्ट नैतिकता को समझाने के उपायों और तरीक़ों के बारे में लेनिन द्वारा निर्धारित प्रस्थापनाओं को सोवियत राज्य में कम्युनिस्ट शिक्षा के एक कार्यक्रम के रूप में अपनाया।

१९२० के पतझड़ में सार्वजनिक शिक्षा विभाग ने माकारेंको को पोल्तावा के निकट अनाथ बच्चों और किशोर अपराधियों के लिये एक श्रम कोलोनी क़ायम करने का काम सौंपा।

१९२१ से गोर्की श्रम कोलोनी के नाम से पुकारी जानेवाली यह कोलोनी कुछ ही वर्षों में एक असाधारण शैक्षिक संस्था के रूप में विकसित हो गई, जिसके अनुभव ने आगे वर्षों तक शिक्षकों और पढ़ानेवालों का ध्यान आकृष्ट किया।

माकारेंको ने अपने व्यावहारिक कार्यकलाप के दौरान यही नये लोगों, समाजवादी समाज के नागरिकों को शिक्षित करने की अपनी प्रणाली विकसित की। गोर्की श्रम कोलोनी में अर्जित अपने अनुभव से उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि सर्वाधिक प्रभावकारी शिक्षाप्रद शक्ति सामाजिक दृष्टि से उपयोगी उत्पादनकारी श्रम है।

उस समय खेती और शिल्प तक सीमित इस कोलोनी के रहनेवालों का उत्पादनकारी श्रम नियमित सामान्य विकास, राजनीतिक, शारीरिक और सौन्दर्य-बोध शिक्षा से संश्लिष्ट था। मूलतः उपयोगी उद्देश्य से शुरू किया गया श्रम शीघ्र ही सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रणाली और कोलोनी के मुख्य कार्यकलाप का आधार बन गया।

१९२७ में खार्कोव के छोर पर बच्चों के महान शुभचिन्तक फेलिक्स द्ज़ेर्जीन्स्की* की स्मृति में अनाथ बच्चों और किशोरों के लिए एक कम्यून स्थापित किया गया। अन्तोन माकारेंको से इस कम्यून की देखरेख के लिए अनुरोध किया गया।

उन्होंने वहां आठ साल काम किया, और इस अवधि के दौरान उनकी प्रणाली को व्यावहारिक रूप से लागू करने के फलस्वरूप, जिसे वह स्वयं शालीनतावश साधारण सोवियत शिक्षा प्रणाली कहते थे, द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून एक सहत समूह के साथ एक आदर्श शैक्षिक संस्था में विकसित हो गया।

गोर्की श्रम कोलोनी की भांति यहां भी उत्पादनकारी श्रम पर ज़ोर दिया गया, जिसका पहले के अपराधियों पर बहुत ही अनुकूल प्रभाव पड़ा। सर्वप्रथम उन्होंने स्कूल की कर्मशालाओं में काम किया, जो नियमित रूप से निर्धारित योजना के अनुसार व्यवस्थित औद्योगिक कारखानों की भांति संचालित होती थीं।

उत्पादनकारी श्रम के प्रति इस गंभीर दृष्टिकोण को अपना लेने के फलस्वरूप कम्यून आर्थिक रूप में पूर्णतया स्वावलम्बी बन गया और धन को बचाने से अन्ततः वह अपनी दो फ़ैक्टरियां – एक विद्युत ड्रिल तथा दूसरी फ़ोटो कैमरा तैयार करनेवाली – निर्मित करने में समर्थ हो गया। इस समय 'फेद' (फेलिक्स एद्मुन्दोविच द्ज़ेर्जीन्स्की) ट्रेडमार्क से युक्त इन कैमरों की ख्याति सारी दुनिया में है।

किन्तु यह सोचना बड़ी भूल होगी कि माकारेंको ने इस कार्य को संगठित करने में केवल आर्थिक उद्देश्यों को अपनी दृष्टि में रखा था। उनकी शिक्षा-प्रणाली का सैद्धान्तिक और विचारधारात्मक आधार शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य-बोध शिक्षा के तालमेल के बारे में तथा सुसंगत रूप से विकसित लोगों की शिक्षा के एक मात्र साधन के रूप में आधुनिक उद्योग में उत्पादनकारी श्रम के साथ स्कूल की शिक्षा के समन्वय के बारे में मार्क्सवादी सिद्धान्त था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि माकारेंको

---

*अखिल-रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अन्तर्गत बच्चों के जीवन को सुधारने के लिये नियुक्त कमीशन के अध्यक्ष की हैसियत से फेलिक्स द्ज़ेर्जीन्स्की ने परित्यक्त बच्चों तथा किशोर-अपराधियों की दशा को सुधारने के लिये प्रभावकारी कदम उठाये और सामान्यतया बच्चों के कल्याण में अपना काफी समय लगाया।

ने क्यों अपने विद्यार्थियो के लिए विद्युत ड्रिल तथा फ़ोटो कैमरा के उत्पादनो जैसे जटिल काम को चुना।

विद्यार्थियो को कई औद्योगिक कौशल की उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के साथ ही सामान्य शिक्षा देना वस्तुत: पॉलीटेकनिक शिक्षा के मार्क्सवादी सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप प्रदान करना था। इसलिए माकारेंको को अपने लेख 'शिक्षकों का ऊहापोह' (१९३२) में यह कहने का पूरा अधिकार था कि द्जेर्जीन्स्की कम्यून मे उन्हे इस बात का ज्ञान नही था कि शारीरिक और मानसिक काम मे कोई अन्तर है। १९३० मे द्जेर्जीन्स्की कम्यून मे स्थापित खार्कोव मशीन-निर्माण संस्थान के प्रारम्भिक संकाय में लड़कों और लड़कियो को उच्च शैक्षिक संस्थाओं मे दाखिले के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। सामान्य विषयो की अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के अलावा ये भावी छात्रगण बहुत ही कुशल मजदूरों की योग्यता भी प्राप्त करते थे।

आधुनिक जटिल उद्यम की उत्पादन प्रक्रियाओं, कार्य-व्यवस्था और प्रबन्ध में प्रत्यक्ष भाग लेना बहुत ही अच्छे चरित्र-निर्माण का प्रभावशाली कारक था और इससे युवाजनों मे ऐसे गुणो, जैसे अनुशासन, सहनशक्ति, धैर्य, सामूहिकतावाद एवं दायित्व की भावना, मार्ग-निर्देशन तथा आज्ञा-पालन की योग्यता का विकास होता था और हाथ से परिश्रम करने के प्रति उन मे सम्मान की भावना पैदा होती थी।

लड़के-लड़कियां दोनों प्रति दिन पांच घंटे उत्पादन-सम्बन्धी काम करते थे और चार घंटे स्कूल मे पढ़ते थे। काम और स्कूल मे पढ़ाई आदि के कुशल नियोजन के फलस्वरूप अन्य कार्यों के लिए उन्हे काफी समय मिलता
, जिससे उनके शारीरिक विकास तथा सांस्कृतिक शिक्षा की प्रगति में सहायता प्राप्त होती थी। कम्यून में कला और विशिष्ट रुचि-सम्बन्धी करीब बीस स्थायी मण्डलियां थीं: नाटक, चित्रकला, नृत्यकला, संगीत, साहित्यिक, ग्लाइडर मॉडल निर्माण और अन्य मण्डलियां।

गैर-स्कूली विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यों में वार्षिक पर्यटन का कार्यक्रम भी शामिल था और इन यात्राओं में विद्यार्थी अपने देश के भूगोल और अर्थव्यवस्था का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे। इस ज्ञान से अपनी मातृभूमि के प्रति उन में देशभक्ति और गौरव की भावना बढ़ती थी। उन्हें ले जाकर प्रमुख उद्यमों को दिखाया जाता था, वे सर्वोत्कृष्ट मजदूरों से मिलते थे और स्वयं काम में भाग लेते थे। यह बहुत ही बड़ी आवश्यकता

गही है कि इन ग्रीष्मकालीन लम्बी यात्राम्रो से ये किशोर अधिक दृढ कुशल और स्वस्थ हो जाते थे।

द्र्जेर्जीन्स्की कम्यून के अनुभव ने उस समय सोवियत सघ आनेवाले अनेक *विदेशी प्रतिनिधि-मण्डलो का ध्यान आकृष्ट किया।*

इस कम्यून के कायम होने के शुरू के पाच वर्षों मे करीब तीस देशो के १२७ प्रतिनिधि-मण्डलो ने इसे आकर देखा, जिन म जर्मनी के ३७, फ्रास के १६, ग्रेट ब्रिटेन के १७, दक्षिण अमरीका के ११ और अमरीका के ८ प्रतिनिधि-मण्डल शामिल थे। इन सभी प्रतिनिधि-मण्डलो ने आगतुक-पजी मे अपनी सराहना व्यक्त की।

एक विख्यात फ्रासीसी राजनीतिज्ञ ए० हेरिग्रोत ने १६३२ के अन्त मे द्र्जेर्जीन्स्की कम्यून को देखने के बाद लिखा "मैं भावाभिभूत हो गया हू आज मैने वास्तविक चमत्कार देखा और यदि मैंने इसे अपनी आखो से न देखा होता, तो कभी भी इस मे यकीन नही करता।"

१६३५ की गर्मी मे माकारेको उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतन्त्र के आन्तरिक मामलो की जन-कमिसारियत के श्रम कोलोनी विभाग के सहायक निदेशक नियुक्त हुए। यद्यपि वह १६३७ तक सरकारी तौर पर द्र्जेर्जीन्स्की कम्यून के प्रधान बने रहे, परन्तु वह अब इस ओर अपना पूरा ध्यान देने मे असमर्थ थे।

१६३७ की जनवरी के अन्त मे माकारेको मास्को चले गए, जहा वह स्थायी रूप से रहने लगे और उन्होंने अपना सारा समय लेखन-कार्य मे लगाया।

उनकी प्रथम महान साहित्यिक कृति "१६३० का अभियान ' (१६३२) नामक शब्दचित्रो का सग्रह है, जिस मे उन्होंने कम्यून का वर्णन प्रस्तुत किया है। मक्सिम गोर्की द्वारा प्रोत्साहित और उनसे सहायता पाकर उन्होंने "जीवन की ओर" (१६३३–१६३५) नामक अपना विख्यात उपन्यास प्रकाशित किया, जिससे वह तत्काल उस समय के सर्वोत्कृष्ट लेखको की कोटि मे आ गए। उपन्यास के रूप मे लिखित इस पुस्तक मे गोर्की श्रम कोलोनी मे उस समय किए गये बहुत शैक्षिक कार्य से बहुत ही आकर्षक रूप मे आम नतीजे निकाले गये हैं।

१६३७ मे माकारेको ने "मां-बाप और बच्चे" नामक कृति प्रकाशित की। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया

जा सकता है कि इसके दस संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और आज भ सोवियत संघ तथा दूसरे देशों में यह पुस्तक व्यापक रूप से पढ़ी जाती है।

माकारेंको ने शिक्षा की समस्याओं पर अनेक लेख, पुस्तकों की समालोचनाएं, सिनेमा के लिए नाटक और कहानियां लिखीं।

उनकी अन्तिम महान कृति "कैसे जीएं" नामक उपन्यास है, जिसमें द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह उनकी प्रथम पुस्तक "जीवन की ओर" से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध है, क्योंकि कम्यून का केन्द्र-बिंदु गोर्की श्रम कोलोनी के भूतपूर्व विद्यार्थियों का वह समूह था, जो माकारेंको के साथ चला आया था।

उन्होंने अपने निजी अनुभव, कम्युनिस्ट शिक्षा और सामान्यतया सोवियत शिक्षाशास्त्र पर शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के मां-बाप के सामने दिये गये भाषणों और अपने साहित्यिक काम में मेल बैठा दिया है।

परन्तु मास्को में उनका उपयोगी तथा बहुत ही बहुमुखी कार्यकलाप शीघ्र ही समाप्त हो गया। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित "कम्युनिस्ट शिक्षा-प्रणाली" नामक अपनी जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का वह जीवन भर सपना देखा करते थे, उसे पूरा करने के पहले ही १ अप्रैल, १६३६ को माकारेंको का असामयिक देहावसान हो गया।

•

माकारेंको ने कम्युनिस्ट शिक्षा के अपने सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उनकी प्रणाली में सोवियत शिक्षण के विकास के अनुभव को सामान्य नियमों में परिणत किया गया है और सोवियत संघ में कम्युनिस्ट निर्माण की अवधि में इसके आगे और विकास की संभावनाओं के लिए व्यवस्था की गई है।

केवल स्कूल के काम तक सीमित न रहकर बच्चों तथा किशोरों के जीवन एवं कार्यकलाप के सभी पहलुओं को समाविष्ट कर शिक्षा की सक्रिय और उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया उनकी प्रणाली की मुख्य विशिष्टता है।

जैसा कि माकारेंको ने सर्वथा उचित ही अपना दृढ़ विचार प्रकट किया है कि विद्यार्थियों पर ठोस प्रभाव डालनेवाले विविध प्रकार के सभी साधनों पर शिक्षा-व्यवस्था का नियंत्रण क़ायम होना चाहिए, उसे उन पर पड़नेवाले किसी भी संभावित अनिष्टकारी प्रभाव को दूर करने में पर्याप्त रूप से सक्षम

उसे हंसमुख, सजीव देखने में चुस्त, संघर्ष और निर्माण करने में सक्षम जीने तथा जीवन से प्यार करने में समर्थ होना चाहिए और खुश रहना चाहिए। और केवल भविष्य में नहीं, बल्कि अभी ही, अपने जीवन में सदैव उसे इसी प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए।"

माकारेंको ने ऐसे गुणों जैसे दृढ़ता, उद्देश्यपूर्णता, परिस्थिति के बारे में तत्काल अनुमान लगाने की योग्यता, कार्य-क्षमता और ईमानदारी को विकसित करने के महत्त्व पर जोर दिया। विशेष रूप से उन्होंने धैर्य और लम्बे वक्त की कठिनाइयों पर विजय पाने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता की ओर संकेत किया। उन्होंने लिखा, "क्या करना है, इस सम्बन्ध में आप चाहे जितने भी सही विचार बना लें, परन्तु यदि आप बच्चों में लम्बी अवधि की कठिनाइयों पर काबू पाने की प्रवृत्ति नहीं पैदा करते, तो इसका अर्थ है कि आपने उसे कुछ भी शिक्षा नहीं दी होगी।"

माकारेंको ने अपनी शिक्षण-प्रणाली में उत्पादनकारी श्रम, सामूहिकता और व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया। सोवियत शिक्षा का अभिप्राय यथार्थतः समष्टिवादी शिक्षा समझते हुए, उन्होंने यह विचार प्रतिपादित किया कि इसे सगठित करने का तरीका सुदृढ़, प्रभावकारी समूहों को क़ायम करना है। स्कूल इसी प्रकार का समूह है—प्रधानाध्यापक के नेतृत्व और निर्देशन में विद्यार्थियों और शिक्षकों का समुदाय।

माकारेंको ने उस शिक्षण-प्रणाली को अस्वीकार किया, जिसमें विद्यार्थी पर शिक्षक के प्रत्यक्ष प्रभाव तक शिक्षा सीमित हो जाती है। फिर भी समुदाय के आदर्शानुरूप गठन, सुदृढ़ीकरण और सतत विकास के लिए अपनी अनवरत चिन्ता में उन्होंने एक पृथक् बच्चे के विकास की ओर से अपनी आंख ओझल नहीं की और सदा व्यक्ति को शिक्षित बनाने के महत्त्व पर जोर दिया।

उन्होंने बुनियादी तौर पर व्यष्टि और समष्टि के बीच सम्बन्धों के नये दृष्टिकोण पर आधारित व्यक्तिगत शिक्षा की नई और मौलिक प्रणाली निर्धारित की। गोर्की श्रम कॉलोनी और द्जेर्जीन्स्की कम्यून के अपने अनुभवों का विश्लेषण करते हुए माकारेंको इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि समुदाय और व्यक्ति के बीच संबंध प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा नहीं, बल्कि शैक्षिक उद्देश्यों के लिए विशेष रूप से गठित (टोलियां, टीम, कक्षा) तथाकथित प्रारम्भिक समूह के जरिए स्थापित सम्पर्क द्वारा कायम होना चाहिए।

माकारेंको द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्थापना सोवियत शिक्षा प्रणाली का मू
है। प्रत्येक शिक्षक, प्रत्येक ज्ञानप्रदाता का अपने व्यावहारिक कार्यकला
में इससे मार्ग-निर्देशन होता है।

बच्चों का समुदाय किस प्रकार क़ायम होना चाहिए, इस प्रश्न प
विस्तार के साथ अपने विचार प्रकट करते हुए माकारेंको ने संकेत किया
कि सही ढंग से समुदाय को संगठित करने और क्रियाशीलता के लिए इसे
अभिप्रेरित करने के लिए "सामूहिक आन्दोलन के नियम" का पालन करना
एक बुनियादी सिद्धान्त है: एक समुदाय का अपना निर्धारित लक्ष्य होना
चाहिए, जिसे प्राप्त करने के लिए प्रयास अपेक्षित है। विशेष रूप से
संगठित सामूहिक प्रयासों द्वारा प्राप्त होनेवाले अधिकाधिक जटिल लक्ष्यों
की प्रणाली में सभी विद्यार्थियों को शामिल करना समुदाय के विकास के
लिए, इसे एकजुट करने और शैक्षिक कारक बनाने के लिए अनिवार्य
शर्त है।

समष्टि की मार्क्सवादी धारणा के आधार पर अपना कार्य करते हुए
माकारेंको ने अपने विद्यार्थियों को समूह के हितों और उद्देश्यों से अपने निजी
हितों और आकांक्षाओं का सामंजस्य स्थापित करने की शिक्षा दी।

उनके दृष्टिकोण से सोवियत समाज की अवस्थाओं में उनके बीच कोई
अन्तर नहीं हो सकता: सामुदायिक उद्देश्यों से ही निजी उद्देश्य प्रादुर्भूत
होने चाहिए। वह सदैव कहा करते थे कि यदि सामूहिक उद्देश्यों द्वारा एक
बाल समुदाय के निजी उद्देश्य निर्धारित नहीं होते, तो विशेष समुदाय ग़लत
ढंग पर संगठित है और उस में दी गई शिक्षा "वास्तविक सोवियत शिक्षा"
नहीं कही जा सकती।

माकारेंको ने ऐसे प्रश्नों जैसे बाल समुदाय की जीवन-शैली और
वातावरण पर बहुत अधिक ध्यान दिया।

जीवन-शैली और वातावरण ऐसे बाहरी लक्षण हैं, जिनसे समुदाय की
क्रियाशीलता अभिव्यक्त होती है और उसके अधिकांश सदस्यों द्वारा
कम्युनिस्ट नैतिकता के आदर्शों का पालन करना प्रकट होता है।

एक विद्यार्थी को सौंपे गए किसी काम के लिए उसकी वास्तविक तथा
गंभीर जिम्मेदारी की अभिव्यक्ति और आत्मनियंत्रण, आत्मसम्मान की रक्षा
करने और परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों, इसे क़ायम रखने की उसकी
योग्यता यह है जीवन-शैली।

माकारेंको कहा करते थे कि सोवियत बाल समुदाय की जीवन शैली की विशिष्टता आनन्दपूर्ण वातावरण, चुस्ती और क्षण भर रा सूचना पर कार्रवाई के लिए तत्परता से अभिव्यक्त होनी चाहिए। आलंकारिक ढंग से माकारेंको ने इन सभी विशिष्टताओं के निचोड को "उल्लासपूर्ण भावना" कहा, उन्होने अपने भविष्य मे समुदाय के अटल विश्वास के सकेत के रूप में इस अवस्था को माना।

इस मनोवृत्ति को प्रोत्साहन प्रदान करने की हिमायत करते हुए माकारेंको ने इसके साथ ही इसे आवश्यक बताया कि बच्चो को मनोवेग को नियंत्रित करने, आत्मनियंत्रण को व्यवहार मे लाने की शिक्षा देनी चाहिए और उन्हें सुसंस्कृत आचरण के आदर्शों का उल्लघन न करने अथवा निश्चित नियमों को न तोड़ने का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उन्होने यह विचार प्रकट करते हुए कि बच्चो को अपने मनोवेग तथा आवाज का नियंत्रित करने की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, असतुलित व्यवहार की कडे शब्दो में निन्दा की।

उन्होंने समुदाय के विकास को सुसाध्य बनानेवाले शैक्षिक साधनो मे बच्चों की क्रियाशीलता मे भावप्रवण साधनो और विशेष रूप से खेल की भूमिका को बहुत महत्त्व प्रदान किया। वह कहा करते थे कि "बच्चो के समुदाय में सुनिश्चित रूप से खेलो की व्यवस्था होनी चाहिए। बच्चो का जो समुदाय नही खेलता, मनोरजन नही करता, वह कभी भी वास्तविक बाल समुदाय नही होगा। इससे समुदाय को उल्लमित, उत्साहपूर्ण मुद्रा मे रखने मे सहायता मिलती है और बच्चे सदैव कुछ उपयोगी, कुछ दिलचस्प तथा विवेकपूर्ण काम करने को तत्पर रहते है।"

सर्वप्रथम समुदाय मे एकता की सुदृढ भावना पैदा करने के साधन के रूप मे माकारेंको ने अच्छी परम्पराओं को माना। उनका मत था कि जब तक समान लक्ष्यो का अनुसरण करनेवाला घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध समुदाय न होगा, ऐसा समुदाय जिसकी परख समय की कसौटी पर हो चुकी हो और जिसने कुछ सराहनीय परम्पराए कायम की हो, तब तक वास्तविक सोवियत शिक्षा अमल मे नही लायी जा सकती। उन्होंने अच्छी स्कूली परम्पराओं के विकास और उनके प्रतिपालन को सर्वोच्च शैक्षिक महत्त्व का काम समझा।

वह स्थिति के अनुकूल एक साथी का आदेश मानने और उसे आदेश देने मे एक विद्यार्थी की योग्यता को सामूहिक रूप से शिक्षित एक व्यक्ति की बहुमूल्य विशेषता मानते थे। इस सम्बन्ध मे एक प्रवर्तक के रूप में उनका अनुभव हमारे लिए बहुत ही बहुमूल्य प्रतीत होता है: गोर्की श्रम कोलोनी और द्जेर्जीन्स्की कम्यून दोनो मे पारस्परिक उपाश्रितता और पारस्परिक निर्भरता पर आधारित सम्बन्धो की मिली-जुली प्रणाली को अस्तित्व मे लाने मे उन्हे सफलता मिली, जो ऐसे दृढ़ सकल्प के, अनुशासित व्यक्तियो को विकसित करने मे उपयोगी सिद्ध हुई, जो आदेश देने का और स्वीकार करने का, दोनो ही काम कर सकते थे।

पारस्परिक निर्भरता के मिश्रित सम्बन्धो को विकसित करने की विधियो की विस्तृत व्याख्या की चर्चा करते समय हमे बच्चों के आत्मनियमन-सम्बन्धी सिद्धान्त और व्यवहार मे माकारेंको के महान योगदान का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। सोवियत सत्ता की स्थापना के प्रारम्भिक काल में, जब पुराना स्कूल टूट रहा था और नये स्कूल की स्थापना हो रही थी, उस समय शिक्षक समूह को विद्यार्थियो के सगठन के स्विमाफ खड़ा करके विद्यार्थियो के आत्मनियमन के प्रश्न को अक्सर गलत ढग से हल किया गया। माकारेंको के अनुभव से शिक्षकों को सही हल प्राप्त करने मे सहायता मिली। उन्होंने अपने सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक, दोनो कार्यों से यह सिद्ध किया कि प्रधानाध्यापक के नेतृत्व मे शिक्षक समूह का एक सुदृढ़ कर्मठ बाल समुदाय और इसके आत्मशासन को सगठित करना है, जो समाज के सक्रिय और सचेत सदस्यो को प्रशिक्षित करने का एक अधिक प्रभावकारी साधन है। आत्मनियमन से विद्यार्थियो को सगठित होने की आदत विकसित करने, समुदाय मे सहभागिता, चेतना और अनुशासन की भावना प्रकट करने मे सहायता मिलती है। शिक्षक समूह, स्कूल के वातावरण और पूरा पार्टीबद्ध सगठना द्वारा समर्थित स्वतन्त्रता की भावना एव उद्देश्य की स्पष्टता इसके लिए पूर्वापेक्षित है।

शैक्षिक कार्य को ठीक ढंग से सगठित करने के लिए शिक्षको के सशक्त समुदाय का होना नितान्त आवश्यक है। माकारेंको ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि आदर्श के अनुरूप सशक्त समुदाय का गठन करने और विशेष रूप से इसके अलग-अलग सदस्यो का निर्देशन करने मे दक्ष नहीं कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती है, जब शिक्षक अलग-अलग नहीं, बल्कि समूह

के रूप में, समान विचारों तथा धारणाओं द्वारा सयुक्त सबल समुदाय
रूप में काम करे, जहां एक व्यक्ति दूसरे की सहायता करता है।

यदि हम समुदाय में शिक्षादान को माकारेंको की शिक्षा प्रणाली
मुख्य विशिष्ट लक्षण मान लें, तो महत्त्व की दृष्टि से दूसरी खास ब
श्रम के जरिए शिक्षा का उनका सिद्धान्त है। केवल सयुक्त, सामाजि
दृष्टि से उपयोगी उत्पादनकारी श्रम के जरिए वास्तविक सोवियत नागरि
की शिक्षा का लक्ष्य पूरा हो सकता है। और किसी प्रकार नहीं, ब
सयुक्त प्रयास, समुदाय मे कार्य, पारस्परिक सहायता और काम
पारस्परिक निर्भरता के जरिए ही लोगों के बीच उपयुक्त ढग के सम्ब
कायम हो सकते हैं, प्रत्येक श्रमजीवी पुरुष और स्त्री में भाईचारे
सम्बन्ध और स्नेहपूर्ण मैत्री कायम हो सकती है और काम से जी चुरानेव
तथा दूसरों के सहारे जीवन-यापन करनेवाले किसी भी व्यक्ति के वि
गुस्से और निन्दा की भावना पैदा की जा सकती है। श्रम में किशोरों
उत्पादनकारी कार्यकलाप का प्रशिक्षण प्राप्त होता है और दूसरे लोगों
प्रति सही दृष्टिकोण अपनाने का ज्ञान प्राप्त होता है। काम करने से
व्यक्ति को अपनी निजी योग्यता में विश्वास प्राप्त होता है और श्रम
उसे बहुत परितोष तथा आनन्द प्राप्त होता है।

अपने सामाजिक महत्त्व के अलावा व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का मुख्य
होने के नाते श्रम बच्चे के निजी जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका
करता है।

कम्युनिस्ट समाज के एक व्यक्ति के बहुमुखी विकास के साधन के
में श्रम को रचनात्मक एव उत्पादनकारी होना चाहिए, इसे उच्च तकनी
साज-सामान से लैस उद्यमों में सगठित करना चाहिए और स्कूली शि
के साथ समन्वित करना चाहिए। लेनिन ने इस सम्बन्ध में यही कहा थ
"युवा पीढ़ी के उत्पादनकारी श्रम के साथ शिक्षा को समन्वित किये बि
आदर्श भावी समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती. उत्पादनकारी श्र
के बिना न तो प्रशिक्षण और शिक्षा को और न समानान्तर प्रशिक्षण एव शि
के बिना उत्पादनकारी श्रम को प्रविधि और वैज्ञानिक ज्ञान के वर्तम
स्तर द्वारा अपेक्षित कोटि तक ऊंचा उठाया जा सकता।"

आधुनिक उद्योग में श्रम माकारेंको का शिक्षा-सम्बन्धी मुख्य साधन
और यही धुरी भी थी, जिसके इर्द-गिर्द उनके विद्यार्थियों का सम्पूर्ण जी

परिश्रमण करता था। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में उत्पादनकारी श्रम की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी कि इससे लड़के-लड़कियों में इसके सामाजिक महत्व की चेतना पैदा हुई, यह चेतना कि उनका प्रयास सोवियत लोगों के सामान्य श्रम का ही अंग था, कि उनके प्रयासों से उनके देश की आर्थिक शक्ति को विकसित करने और समाजवाद के भौतिक एवं तकनीकी आधार के निर्माण में सहायता प्राप्त हो रही थी।

गोर्की श्रम कोलोनी और द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून के अपने अनुभव का विश्लेषण करते हुए, माकारेंको ने संकेत किया कि शिक्षा के साधन के रूप में श्रम पर सदा शैक्षिक प्रणाली के अन्य साधनों के साथ ही विचार करना चाहिए, क्योंकि "जो श्रम राजनीतिक और सामाजिक शिक्षा से संश्लिष्ट नहीं होता, वह बिना किसी शैक्षिक उपयोगिता का एक निष्क्रिय प्रक्रम मात्र बना रहता है।"

माकारेंको ने "उद्देश्यपूर्ण सिद्धान्त" को सोवियत शिक्षा का एक मुख्य सिद्धान्त माना। इसके अनुसार उन्होंने सर्वप्रथम इसकी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की और उसके बाद बड़ी दक्षता एवं प्रभावकारिता के साथ अपनी उद्देश्यपूर्ण प्रणाली को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने इस प्रणाली के सारतत्व की व्याख्या निम्नांकित शब्दों में की: "मनुष्य को जीने के लिए अपने आगे आनन्ददायक कोई चीज होनी चाहिए। मानवीय जीवन में वास्तविक स्फूर्तिप्रद कल की ख़ुशी है... मनुष्य को शिक्षित करने का अर्थ है भावी ख़ुशी प्राप्त करने की संभावना प्रस्तुत करना।" शिक्षण-सम्बन्धी तकनीक में यह एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है, जिसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करना है। बच्चों के समुदाय को सदैव नये लक्ष्यों को प्राप्त करने का काम सौंपना चाहिए, जिसकी उपलब्धि में यद्यपि दृढ़ प्रयास अपेक्षित है, परन्तु इससे उन्हें ख़ुशी प्राप्त होगी।

उनकी उद्देश्यपूर्ण प्रणाली का सर्वोच्च लक्ष्य बच्चों में केवल व्यक्तिगत आकांक्षाएं नहीं, बल्कि सामूहिक आकांक्षाएं पैदा करना था। उन्हें पूर्ण सजीवता के साथ अपनी मातृभूमि के भावी विकास, उसके कठिन परिश्रम और उसकी सफलताओं को अनुभव करने का ज्ञान प्रदान करना था और तब वे अपने जीवन को पूरे समाज के जीवन का अंग महसूस करेंगे और सबके सुखद भविष्य के लिए संघर्ष करेंगे। इस प्रकार सामूहिक उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी के निजी उद्देश्य भी बन जायेंगे।

माकारेंको ने छात्रों को नियत कार्य सौंपने को बहुत महत्त्व प्रदान किया और इसे मानसिक प्रशिक्षण तथा इस प्रकार का कार्यकलाप बताया, जो सामूहिक ढांचे के अन्तर्गत व्यक्ति की प्रतिभा के चतुर्मुखी विकास मे सहायक होता है। ये सौंपे हुए काम व्यावहारिक कार्यभार होने चाहिए और समुदाय द्वारा जिस व्यक्ति के सुपुर्द ये काम किये जायें, उसे समुदाय के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और तब वह अपने कार्य का मूल्यांकन भी करेगा।

माकारेंको की दृष्टि मे व्यक्तिगत उपगम सामूहिक शिक्षा का अभिन्न अंग है। उन्होंने बार-बार इस पर जोर दिया कि समुदाय में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा तथा योग्यता को पूर्ण विकसित करने के लिए उन्हें युक्तिपूर्वक एवं होशियारी से प्रोत्साहित करने का प्रयास करना है। माकारेंको ने कहा, "केवल ऐसी प्रणाली का निर्माण—एक सामान्य, एकल प्रणाली, जो साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपनी निजी गुणों को विकसित करने और अपने व्यक्तित्व को कायम रखने का अवसर प्रदान करेगी—हमारे युग और हमारी क्रान्ति के उपयुक्त संगठनात्मक कार्यभार होगा।" प्रत्येक बच्चा अनेक प्रकार की भावनाओं की जटिल दुनिया को प्रस्तुत करता है। और शिक्षक का महान ध्येय इस दुनिया को जानना, इसके विकास को विवेकपूर्ण ढंग से लक्षित करना और महान आदर्शों के लिए बहुत उत्कृष्ट बनाना है।

बच्चों और किशोरों का चरित्र-निर्माण कैसे किया जाये, उनके विश्व-दृष्टिकोण को कैसे विकसित किया जाये और कैसे उन्हे सर्वोत्कृष्ट नैतिक गुणों से युक्त किया जाये, इस प्रसंग मे माकारेंको के अनुभव से हमें अपूर्व आदर्श प्राप्त होता है। एक समय के जो परित्यक्त और किशोर अपराधी उनकी देखरेख में थे, उनमें से उन्होंने क़रीब तीन हज़ार नये लोगों को शिक्षित बनाया। ये लोग पूर्ण अर्थ में नये थे—ईमानदार, अपने समाजवादी कर्त्तव्य की उच्च भावना से युक्त निष्ठावान सोवियत देशभक्त, इच्छाशक्ति तथा पहलक़दमी के गुणों से युक्त, पर्याप्त अनुशासित और परिश्रमी।

उन्होंने ऐसे प्रश्नों जैसे अनुशासन, क़ायदा, पुरस्कार और दण्ड के प्रश्नों को स्कूली शिक्षा की अन्य अधिक महत्त्वपूर्ण समस्याओं के समकक्ष माना, जिन्हें सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के अंग के रूप मे समझना चाहिए।

सबसे पहले इसका उल्लेख होना चाहिए कि माकारेंको ने एक सोवियत शिक्षाविद् के दृष्टिकोण से अनुशासन की धारणा की नई व्याख्या प्रस्तुत की।

जबकि परम्परागत पूंजीवादी शिक्षण प्रणाली अनुशासन को केवल नम्रता और आज्ञापालन का साधन समझती है, वह इसे शिक्षा का नतीजा मानते हैं। उन्होंने लिखा है, "समस्त शैक्षिक प्रभावों का परिणाम अनुशासन है, जिसमें स्कूली तथा राजनीतिक शिक्षा की प्रक्रिया, चरित्र निर्माण-सम्बन्धी प्रक्रिया, समुदाय के भीतर खटपट और झगड़ों का सामना करने तथा सुलझाने की प्रक्रिया, दोस्ती कायम करने तथा आपसी विश्वासपूर्ण सम्बन्धों को स्थापित करने की प्रक्रिया—संक्षेप में शारीरिक शिक्षा, शारीरिक विकास आदि सहित वे सभी बातें, जो शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत आती हैं, समाविष्ट हैं।"

माकारेंको की दृष्टि में सोवियत अनुशासन बाधाओं पर विजय पाने का अनुशासन है, संघर्ष और प्रगति का अनुशासन है, किसी बात के लिए प्रयास करने, किसी आदर्श के लिए संघर्ष करने का अनुशासन है। उन्होंने कहा, "हमारा अनुशासन कर्तव्य के प्रति पूर्ण चेतना और सुस्पष्ट एवं सुव्यवस्थित बाह्य ढांचे को कायम रखते हुए, जिसमें किसी विवाद, असहमति, आपत्ति, टाल-मटोल अथवा खाली बातों की कोई गुंजाइश नहीं है, कैसे काम किया जाये, इस सम्बन्ध में सबकी पूर्ण रूप से स्पष्ट, सम्मिलित समझदारी का समन्वय है।"

इस पर ज़ोर देते हुए कि समुदाय के सारे जीवन और कार्यकलाप के कुशल संगठन के द्वारा अनुशासन कायम होता है, उन्होंने विश्वासप्रद एवं हृदयगमनीय तरीके से विद्यार्थियों को सोवियत आचरण के नियमों और नैतिक आदर्शों को समझाने की आवश्यकता की ओर संकेत किया, ताकि उनसे इन नियमों के पालन की अपेक्षा की जा सके।

उन्होंने अपने विद्यार्थियों से अपेक्षाएं रखने के बारे में शिक्षक की योग्यता को शैक्षिक कुशलता की महत्वपूर्ण अपेक्षा समझी। अपनी अपेक्षाएं रखने में शिक्षक को उचित ही सख्त और दृढ़ होना चाहिये। वांछित शैक्षिक प्रभाव पैदा करने के लिये उसे अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति, सम्मति और व्यक्तित्व से विद्यार्थियों को प्रभावित करते हुए निश्चित, आत्मसंगत ढंग से अपनी आवश्यकता का उल्लेख करना चाहिए।

अपेक्षा करने के तरीके भिन्न भिन्न हो सकते हैं। उस अवस्था में, जहां बच्चों की विभिन्नता, समझ की कमी और नैतिक आदर्शों की दुर्बलता हो, वहां सहिष्णु आवश्यकता आ सकता है, क्योंकि इस अवस्था

मे अनुभव का ठोस प्रभाव पडने और क्रमश [illegible] करना काफ़ी युक्तिसंगत है। परन्तु, उन अवस्थाओ मे, जहा कोई व्यक्ति जानबूझकर समुदाय का विरोध करता है, इसकी अपेक्षाओ और अधिकारो का उल्लंघन करता है, ऐसी दशा मे जब तक वह व्यक्ति यह स्वीकार न कर ले कि उसे समुदाय की आज्ञा माननी ही चाहिये, तब तक शिक्षक को दृढ अपेक्षाए रखनी चाहिये और अन्त तक इनकी पूर्ति के लिये सचेष्ट रहना चाहिये।

अपने शैक्षिक कार्य मे माकारेको द्वारा प्रयुक्त विविध साधनो मे पुरस्कार और सजा की व्यवस्था ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की। उन्होने इस विचार का प्रतिपादन किया कि व्यक्ति के अच्छे गुणो मे भरोसा और विश्वास की अवस्थाओ मे ही ऐसे साधन, जैसे पुरस्कार और दण्ड, वाछित शैक्षिक प्रभाव पैदा कर सकते है। दोनो पर अच्छी तरह विचार और केवल कभी-कभी इनका इस्तेमाल करना चाहिये। प्रत्येक स्थिति मे सम्पूर्ण समुदाय और इसके प्रत्येक सदस्य की दृष्टि मे इनके महत्त्व को स्पष्ट कर देना चाहिये।

उनके मतानुसार कायदा दैनिक जीवन की सदाचार-संहिता है, सामुदायिक कार्यकलाप मे व्यवस्था कायम करने और तालमेल स्थापित करने का साधन है। उपयुक्त अनुशासन-सम्बन्धी अनुभव संचित करना और *आचरण का सामान्य आदर्श कायम करना मुख्य लक्ष्य है*, जिन्हे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। सर्वोत्कृष्ट शैक्षिक प्रभाव पैदा करने के लिये सम्पूर्ण समुदाय के अनुभव पर आधारित क़ायदा उपयुक्त, सुनिश्चित और सभी सदस्यों के लिये अनिवार्य होना चाहिये।

माकारेंको ने बार-बार संकेत किया कि शैक्षिक कार्य मे स्थिर, अपरिवर्तनीय ढाचा अमान्य है। उन्होंने सर्वाधिक द्वन्द्वात्मक, गतिशील, जटिल और बहुमुखी विज्ञान के रूप मे शिक्षणशास्त्र की विशेषता बताई। शैक्षिक साधन परिस्थितियों के अनुरूप होने चाहिये, क्योंकि वे ही साधन एक स्थिति मे अच्छे और दूसरी स्थिति मे बुरे सिद्ध हो सकते है। शैक्षिक कार्य मे किसी भी साधन को अन्य साधनो, सम्पूर्ण प्रणाली, कुल शैक्षिक प्रभावो से पृथक् सोचने पर अच्छा या बुरा नही [illegible]

शिक्षक का कार्य कठिन और [illegible] है, [illegible] उसे केवल सामूहिक रूप से बच्चो से [illegible]

स्तर, योग्यता और व्यक्तित्व सहित अनेक विभिन्न व्यक्तियों से व्यवहार करना पड़ता है। इसलिये प्रत्येक पाठ, विद्यार्थियों से प्रत्येक मुलाकात, एक छात्र से एकाकी बातचीत शिक्षक के रचनात्मक काम का एक महत्वपूर्ण क्षण है। यहां सभी चीजों—बातचीत के उद्देश्य, उनकी परिस्थितियों, सामुदायिक विकास के स्तर और विद्यार्थी की निजी विशेषताओं को ध्यान में रखा जाता है।

शिक्षकों के शिक्षण-कौशल पर माकारेंको के विचार कल्याणप्रद और बहुमूल्य हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षण-सम्बन्धी प्रवीणता किसी भी रूप में नैसर्गिक देन नहीं है, कोई भी व्यक्ति इस गुण के साथ पैदा नहीं होता, वह अध्ययन, प्रशिक्षण, अनुभव और सतत आत्मसुधार के द्वारा इसे उपलब्ध करता है। उनके मतानुसार श्रेष्ठता के अनिवार्य लक्षण इस प्रकार हैं: शीघ्र स्थितिज्ञान प्राप्त करने की क्षमता, आत्मनियंत्रण, दृढ़ विश्वास और केवल सम्पूर्ण समूह को ही नहीं, बल्कि इसके अलग-अलग सदस्य को पुरअसर तरीके से प्रभावित करने की योग्यता। माकारेंको ने कहा कि ट्रेनिंग कालेज में प्रशिक्षण प्राप्त करते समय ही शिक्षक को अपनी वाणी को सधा हुआ बनाने की ट्रेनिंग प्राप्त करनी चाहिये, क्योंकि शिक्षण कार्य में वाणी ही मुख्य साधन है, और ऐसे तरीकों, जैसे चेहरे की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण, बालकक्षा में पढ़ाते समय इंगित एवं मुद्रा, विभिन्न स्थितियों में सम्बोधित करने के ढंग आदि को उत्कृष्ट बनाना चाहिये।

शिक्षकों के सम्मुख अपने व्याख्यान एवं भाषण देते समय माकारेंको सदा बड़ी सहृदयता और होशियारी से शिक्षक के कठोर परिश्रम और युवा पीढ़ी को जीवन-पथ पर अग्रसर करने के प्रसंग में उसकी कठिन तथा सम्मानपूर्ण भूमिका की चर्चा किया करते थे। शिक्षकों को सम्बोधित करने का उनका ढंग बहुत सहज था, उन्होंने कभी भी न तो अपने को उनसे ऊपर रखा और न उन्हें उपदेश देने के अधिकार का दावा किया। बल्कि इसके प्रतिकूल वह अपने सहयोगियों से सीखने के लिये उत्सुक रहते थे, क्योंकि उन्हें इसका पक्का विश्वास था कि उनके अनुभव में बहुत सी दिलचस्प एवं शिक्षाप्रद बातें शामिल हैं।

'सोवियत स्कूली शिक्षा की समस्याएं' नामक इस पुस्तक मे सम्मिलित अ० से० मकारेंको के व्याख्यान शिक्षाशास्त्र के उन प्रश्नो पर इस प्रवर्तक के विचार प्रस्तुत करते हैं, जो इस समय शिक्षकों के हलको को आन्दोलित किये हुए हैं। इनमे से कुछ विचार आज भी बिल्कुल सामयिक हैं, गोकि वे तीस साल पहले प्रकट किये गये थे।

शिक्षाशास्त्र के कैंडीडेट
व० अरान्स्की और अ० पिस्कुनोव

पहला व्याख्यान

शैक्षिक विधियां

आज के हमारे व्याख्यान का विषय शिक्षा है। साथियों, केवल इसे स्मरण रखिये कि मैं एक व्यावहारिक शिक्षक हूं और इसलिये अनिवार्यतः मेरी बातें किंचित् व्यावहारिक होंगी। परन्तु वर्तमान युग में व्यावहारिक कार्यकर्त्ता विभिन्न विज्ञानों की प्रस्थापनाओं में कुछ अपूर्व सुधार कर रहे हैं। सोवियत संघ में ऐसे कार्यकर्त्ता को स्ताख़ानोवपंथी (तूफ़ानी मज़दूर) कहते हैं। हम जानते हैं कि स्ताख़ानोवपंथियों–व्यावहारिक कार्यकर्त्ताओं ने विज्ञानों की अनेक प्रस्थापनाओं में जो हमारे विज्ञान की अपेक्षा अधिक यथार्थ हैं, कितने सुधार किये हैं और सामान्यतया श्रम उत्पादन-क्षमता, श्रम कुशलता तथा विशेष रूप से अपने काम के विशेष क्षेत्र में कितने रिकार्ड स्थापित किये हैं। केवल अधिकाधिक श्रम-शक्ति लगाने में नहीं, बल्कि काम करने के सम्बन्ध में नया दृष्टिकोण अपनाने, नई युक्ति इस्तेमाल करने और श्रम-तत्त्वों का नये ढंग से वितरण करने से उत्पादन क्षमता बढ़ रही है। इसलिये, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आविष्कारों, खोजों और अनुसन्धानों की सहायता से श्रम उत्पादन-क्षमता बढ़ रही है।

सृजन का हमारा कार्यक्षेत्र–शिक्षा का क्षेत्र–इस आम सोवियत आन्दोलन से किसी भी प्रकार अलग नहीं किया जा सकता। और हमारे क्षेत्र में भी–यह मेरा प्रगाढ़ एवं जीवन भर का विश्वास है–उसी तरह से आविष्कार आवश्यक हैं, यहां तक कि विस्तृत बातों के सम्बन्ध में, साधारण बातों के बारे में भी अनुसन्धान और अधिकांशतः शिक्षा-विधि की तफ़सीलवार बातों तथा इस प्रणाली के अंगों के सम्बन्ध में आविष्कार ज़रूरी हैं। निस्सन्देह, केवल सिद्धान्तकार ही नहीं, बल्कि मेरे समान साधारण कार्यकर्त्ता भी ऐसे अनुसन्धान कर सकते हैं। इसी कारण मैं इस बारे में संकोच किये बिना आपको अपने अनुभव और इस अनुभव से मैं

जिन निष्कर्षों पर पहुंचा हू, उन्हे यह विश्वास करते हुए बताना चाहता हू कि महत्त्व की दृष्टि से उन्हे व्यावहारिक कार्यकर्त्ताग्रो द्वारा कुछ सैद्धान्तिक उपलब्धियो मे किये गए समान सुधारो के स्तर पर रखना चाहिए।

परन्तु मेरा अनुभव है ही कितना कि मैं आप लोगो को सम्बोधित करने का साहस कर रहा हू?

बहुतो को यकीन है कि बाल-अपचारियो और अनाथ बच्चो को ठीक रास्ते पर लाने का मैं विशेषज्ञ हू। यह सच नही है। मैंने ३२ वर्षों के अपने कार्य-काल मे सोलह साल स्कूल मे पढाते हुए तथा सोलह वर्ष अनाथ बच्चो और किशोरो को शिक्षा देते हुए व्यतीत किए। यह सच है कि मेरे अध्यापन-काल मे कुछ विशेष परिस्थितिया थी —जिस स्कूल मे मैं पढाता था, उसका संचालन एक फैक्टरी द्वारा होता था और वह मज़दूर समुदाय, बोल्शेविकों के एक समुदाय के सतत प्रभाव मे था।

और न तो अनाथों के लिए जो काम मैंने किया था, वह किसी भी रूप में परित्यक्त बालक-बालिकाओं के लिए किया गया कोई विशेष काम था। प्रथमत, शुरू से ही मैंने इसे अपना कार्यकर प्रकल्प बनाया कि उनके मामले मे विशेष तरीके लागू करने की कोई आवश्यकता नही है और दूसरे, बहुत कम समय मे परित्यक्त बालक-बालिकाओ को आदर्श स्तर पर लाने मे मैं सफल हो गया और उसके बाद मैं सामान्य बच्चों की भाति उनके साथ काम करने लायक हो गया।

खार्कोव के निकट दज़ेर्जीन्स्की कम्यून मे अपने काम की अन्तिम अवधि में मेरे पास एक सामान्य समुदाय हो गया था, जो दसमाला स्कूल मे पढ़ रहा था और हमारे परम्परागत स्कूल जिन लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करते है, उसी प्रकार यह समुदाय भी सामान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा मे प्रयत्नशील था। एक समय के परित्यक्त इस समुदाय के सदस्य वस्तुत किसी भी अर्थ मे सामान्य बच्चो से भिन्न नही थे। मेरा ख्याल है कि यदि वे भिन्न थे, तो वह भिन्नता उनके बेहतर विकास की द्योतक थी, क्योंकि एक बच्चे को पारिवारिक वातावरण जितना शैक्षिक प्रोत्साहन प्रदान कर सकता था, उसमे अधिक प्रेरणा इस कर्मशील समुदाय के अभिनव जीवन से प्राप्त होती थी। इसलिए मेरे व्यावहारिक नतीजे

न केवल अनाथों, बिगड़े हुए बच्चों, बल्कि किसी अन्य समुदाय और अतः शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवाले किसी पर भी लागू किये जा सकते हैं।

भूमिका के रूप में मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं और मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इस पर ध्यान दें।

और अब मैं चन्द शब्द अपने व्यावहारिक, शिक्षण-सम्बन्धी तर्क के बारे में कहना चाहूंगा। मैं न तो कल्पनापूर्ण ढंग से और न शीघ्रता से, बल्कि इसके प्रतिकूल वस्तुतः सन्तापकारी सन्देहों एवं भूलों की कई अवस्थाओं से गुजरते हुए कुछ निष्कर्षों पर पहुंचा। आप में से कुछ लोगों को ये बातें आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु बिना किसी अनावश्यक संकोच के आपको इनके बारे में बताने के लिए मेरे पास पर्याप्त आधारी प्रमाण हैं। इनमें से कुछ निष्कर्षों का सैद्धान्तिक स्वरूप है। मैं स्वयं अपने अनुभव की चर्चा करने के पहले संक्षेप में उनका उल्लेख करूंगा।

शिक्षाशास्त्र का यथार्थ स्वरूप अपने आप में एक बहुत ही दिलचस्प प्रश्न है। वर्तमान समय के शिक्षाशास्त्रीय चिन्तकों और हमारे शिक्षण-कार्य के कुछ प्रबंधकों में भी यह धारणा बनी हुई है कि किसी भी विशेष शैक्षिक विधि की कोई आवश्यकता नहीं है; कि शिक्षण-विधि में, स्कूल के एक विषय का शिक्षण देने की प्रयासों में सम्पूर्ण शैक्षिक चिन्तन भी शामिल होना चाहिए। मैं इससे सहमत नहीं हूं। मेरा विचार है कि शिक्षाशास्त्र, मेरा अभिप्राय विशुद्ध शिक्षा से है, शिक्षण-प्रणाली से सर्वथा भिन्न एक पृथक् क्षेत्र है।

निम्नांकित बातों से मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि तथ्य यही है। सोवियत संघ में न केवल नन्हे-मुन्ने एवं स्कूली बच्चे, बल्कि सभी प्रौढ़ नागरिक भी हर क़दम पर शिक्षाप्रद प्रभावों से प्रभावित हैं। वे उनसे या तो विशेष रूप से संगठित रूपों अथवा व्यापक सार्वजनिक चेतनावर्धक रूप में प्रभावित होते हैं। हमारे देश में प्रत्येक कार्य, प्रत्येक आन्दोलन, प्रत्येक प्रक्रिया, विशेष लक्ष्यों का अनुसरण करने के अलावा अनिवार्यतः शैक्षिक उद्देश्यों से भी सम्बद्ध है। इस प्रसंग में हाल में हुए सर्वोच्च सोवियत के चुनावों* को याद करना ही पर्याप्त है। यह सबसे बड़ा शैक्षिक कार्य

---

*यहां सोवियत संघ मे राज्यसत्ता के सर्वोच्च अंग सर्वोच्च सोवियत के १९३७ के चुनावों की ओर संकेत किया गया है।

सर्वप्रथम ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझे एक पृथक् विषय के रूप में उनकी नैतिक शिक्षा और विशेष रूप से उनकी श्रम-शिक्षा पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना होगा। मैं स्वयं अधिक समय तक इस अनिवादी विचार का समर्थक नहीं रहा, परन्तु दुजेर्जीन्स्की कम्यून मे मेरे सहयोगियों ने बहुत समय तक इसका समर्थन किया। कुछ कम्यूनों मे, यहां तक कि आन्तरिक मामलों की जन-कमिसारियत के पास के कम्यूनों मे भी (पुराने प्रशासन के अन्तर्गत) यह प्रचलित नीति बनी रही।

इस नीति के अनुसरण में ऊपर-ऊपर से स्वीकरणीय इस निश्चयात्मक कथन से सहायता प्राप्त होती थी कि स्कूल में पढ़ने के लिए जाना अपने-अपने पसन्द की बात होनी चाहिए: जो पढ़ना चाहते है, उन्हें स्कूल में जाकर शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, और जो नही चाहते, उन्हें स्कूल में दाखिल होने की कोई आवश्यकता नही है। वस्तुतः इसका परिणाम यह हुआ कि किसी ने भी पढ़ाई-लिखाई पर गंभीरतापूर्वक ध्यान नहीं दिया। खराब नम्बर पाने अथवा कक्षा में कोई अन्य अप्रीतिकर बात होने पर तत्काल विद्यार्थी पढ़ाई-लिखाई छोड़ देने को स्वतन्त्र हो जाता था।

मुझे इस बात का यकीन हो जाने में बहुत अधिक समय नहीं लगा कि श्रम कोलोनी की प्रणाली मे स्कूल नैतिक शिक्षा का बहुत ही प्रभावकारी साधन है। इस सिद्धान्त का समर्थन करने के कारण श्रम कोलोनी विभाग के कुछ कार्यकर्ताओं ने मेरे काम के अन्तिम वर्षों में मुझे तंग किया। मैंने स्कूल में दस साल की शिक्षा को अपना आधार बनाया और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वास्तविक सुधार, पूर्ण सुधार, अर्थात् फिर से किसी भी बुराई मे फंसने के विरुद्ध युक्ति को केवल दस साल की स्कूली शिक्षा की सहायता से ही उपलब्ध किया जा सकता है, परन्तु अभी भी, इस समय भी मेरा यह विश्वास है कि शैक्षिक विधि का अपना तर्क है, जो शिक्षण-विधियों से सापेक्षिक रूप से स्वतन्त्र है। मेरी दृष्टि में पहली और दूसरी—शैक्षिक विधि एवं शिक्षण-विधि—शिक्षाशास्त्र की दो न्यूनाधिक स्वतन्त्र शाखाएं हैं। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि समन्वित रूप से इन दोनों शाखाओं को सम्बद्ध करना है। और यह कहना भी कोई जरूरी नहीं है कि वस्तुतः कक्षा में किया गया सभी काम शैक्षिक कार्य है। परन्तु शिक्षा को किताबी ज्ञान तक सीमित करना मैं असंगत मानता हूं। मैं आगे इस विषय पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

और अब मैं चन्द शब्द उस विषय में कहना चाहता हू, जिसे शैक्षिक विधि का आधार समझा जा सकता है।

पहली बात यह कि मुझे पूरा यकीन है कि निकटवर्ती विज्ञानो द्वारा प्रस्तुत संकेतों से, चाहे इस प्रकार के विज्ञान जैसे मनोविज्ञान और प्राणिविज्ञान, और विशेष रूप से पाव्लोव* की उपलब्धियो के बाद प्राणिविज्ञान का जितना भी विकास हो चुका हो, शैक्षिक विधि विकसित नही हो सकती। मुझे विश्वास है कि इन विज्ञानों के निष्कर्षों से प्रत्यक्षत शैक्षिक साधनो को प्राप्त करना कुछ ऐसी बात है, जिसे करने का हमें अधिकार नही है। हमारी व्यावहारिक उपलब्धियो के सत्यापन के लिए निर्देशक प्रस्थापनाओं के रूप में शैक्षिक कार्य मे इन विज्ञानो को बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिए, परन्तु किसी भी प्रकार निष्कर्ष के लिए पूर्वापेक्षाओं के रूप में नहीं।

इसके अलावा, मेरा विचार है कि केवल अनुभव से शैक्षिक साधनो का विकास हो सकता है और उसके बाद मनोविज्ञान एव प्राणिविज्ञान जैसे विज्ञानों द्वारा वे सत्यापित और स्वीकृत हो सकते हैं।

मेरा यह दावा निम्नांकित बातो पर आधारित है. शिक्षाशास्त्र और विशेष रूप से शिक्षा का सिद्धान्त सर्वोपरि रूप मे व्यावहारिक उपयुक्तता का विज्ञान है। जब तक हमारी दृष्टि में सुस्पष्ट राजनीतिक ध्येय न हो, हम एक व्यक्ति को शिक्षित नही बना सकते। यदि हम ऐसा नही करते, तो हमें शैक्षिक कार्य को अपने हाथ मे लेने का कोई अधिकार नही है। जो शैक्षिक कार्य स्पष्ट, गहरे और सूक्ष्मता से सुचिन्तित लक्ष्य का अनुसरण नही करता, वह राजनीतिक उद्देश्य से शून्य शिक्षा है और हम अपने सोवियत सार्वजनिक जीवन मे प्रत्येक कदम पर इसे प्रमाणित होने का सबूत पाते हैं। लाल सेना अपने शैक्षिक काम मे महान, बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर रही है, जो वास्तव मे विश्व इतिहास में सर्वथा उल्लेखनीय है।

---

*इवान पेत्रोविच पाव्लोव (१८४९–१९३६) प्रमुख रूसी शरीरविज्ञानी, अकादमीशियन और नोबेल पुरस्कार विजेता, जिन्होंने उच्च स्नायविक सक्रियता पर शिक्षण की बुनियाद डाली। उनकी मुख्य कृतियां निम्नांकित हैं: 'पशुओं की उच्च स्नायविक सक्रियता (आचरण) के बारे में बीस साल का वस्तुगत अध्ययन' (१९२२), 'प्रमस्तिष्क गोलार्धं की क्रिया पर व्याख्यानमाला' (१९२७)।

इस कारण इतनी महान, इतनी बड़ी सफलता है कि लाल सेना के शैक्षिक कार्य सदा उपयुक्त हैं और लाल सेना के प्रशिक्षक सदैव यह जानते हैं कि वे शिक्षा देकर किस प्रकार के लोगों को विकसित करना चाहते हैं और वे किस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं। अब लक्ष्यहीन शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त का उत्कृष्ट उदाहरण पेडोलाजी* है, जिसका हाल ही में अन्त हो गया है। इस अर्थ में पेडोलाजी सोवियत शिक्षा के बिल्कुल विपरीत है। यह प्रणाली सोद्देश्य नहीं थी।

तब शिक्षा के उद्देश्य कहां से आविर्भूत होते हैं? निस्सन्देह हमारी सामाजिक जरूरतों से, सोवियत जनता की आकांक्षाओं से, हमारी क्रान्ति के लक्ष्यों और कार्यभारों से, हमारे संघर्ष के उद्देश्यों और समस्याओं से। और इस कारण स्पष्टतः उद्देश्यों का सूत्र न तो प्राणिविज्ञान और न मनोविज्ञान से, बल्कि केवल हमारे सामाजिक इतिहास, हमारे सामाजिक वातावरण से प्राप्त हो सकता है।

और मेरा ख़याल है कि हमें प्राणिविज्ञान और मनोविज्ञान से इस प्रकार की अपेक्षाएं भी नहीं रखनी चाहिए और उनसे अपनी शैक्षिक विधि को प्रमाणित करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। उनका विकास हो रहा है, अगले दस वर्ष की अवधि समाप्त होने के पहले ही मनोविज्ञान और प्राणिविज्ञान दोनों ही संभवतः मानवीय आचरण के सम्बन्ध में निश्चित प्रस्थापनाएं निर्धारित करेंगे और तब हम इन विज्ञानों पर अपना कार्य आधारित कर पायेंगे। मनोविज्ञान तथा प्राणिविज्ञान के लक्ष्यों एवं निष्कर्षों के प्रति समाजवादी शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों, सामाजिक आवश्यकताओं की अभिवृत्ति सतत् बदलती रहेगी और हो सकता है कि इस परिवर्तन से हमारे शैक्षिक काम में भी मनोविज्ञान तथा प्राणिविज्ञान का सतत् भाग लेना प्रकट हो। परन्तु दृढ़ता से मुझे जिसका विश्वास है, वह यह है कि शिक्षाशास्त्रीय साधन केवल निगमनशास्त्र द्वारा न तो मनोविज्ञान और न प्राणिविज्ञान से सुलभ हो सकते हैं। मैं पहले ही कह चुका हूं कि

---

*इस सदी के तीसरे दशक के अन्त तथा चौथे दशक के मध्य में कुछ सोवियत बाल-शिक्षकों और मनोवैज्ञानिकों में पेडोलाजी-सम्बन्धी विचार वास्तव में प्रचलित हो गये थे। अ० से० माकारेंको यह विचार प्रतिपादित करते हुए कि पेडोलाजी से शिक्षण के सम्बन्ध में मार्क्सवादी सिद्धान्त के विकास में बाधा पैदा हुई है, इसके बहुत ही विरुद्ध थे।

शिक्षाशास्त्रीय साधन मूलतः अपने सामाजिक और राजनीतिक तथ्यों से प्राप्त होंगे।

यह मेरा विचार है कि लक्ष्य को निर्धारित करने के विषय में, उपयोगिता के विषय में शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त मुख्यतः दोषपूर्ण था। हमारे शिक्षण-सम्बन्धी कार्यों में सभी भूलें, सभी गलतियां सदा उपयोगिता के तर्क के क्षेत्र में हुईं। आइए, संकेत के लिए हम उन्हें भूलें कहें।

मैं शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त में इस प्रकार की तीन भूलों को अनुभव करता हूं: निगमनिक वक्तव्य, नैतिक जड़पूजा और पृथक्कृत साधन।

अपनी व्यावहारिक क्रियाशीलता में इन भूलों को दूर करने में मुझे काफी कष्ट उठाने पड़े। कोई मनमाने ढंग से एक प्रणाली चुन लेगा और दावा करेगा कि इसका ऐसा-ऐसा प्रभाव होगा। उदाहरणार्थ, मिश्रित प्रणाली* की ही बात ले लीजिए, जिसे आप सभी अच्छी तरह जानते हैं। कोई एक प्रणाली की सिफारिश करेगा—इस मामले में शिक्षण की मिश्रित प्रणाली और निगमन और तर्क द्वारा यह निष्कर्ष निकालेगा कि इस प्रणाली से अच्छे नतीजे हासिल होंगे।

और इस प्रकार अनुभव द्वारा ऐसा सिद्ध होने के पहले ही यह परिणाम—मिश्रित प्रणाली के अच्छे नतीजे—निश्चित हो गया। परन्तु यह मान लिया जाता था कि नतीजा निश्चय ही अच्छा होगा, कि वांछित नतीजा मानस जगत् के किन्हीं गुप्त भागों में तिरोभूत होगा।

जब हम, साधारण व्यावहारिक शिक्षक, इस अच्छे नतीजे को दिखाने की बात कहते, तो हमसे कहा जाता था "मनुष्य के मन में जो कुछ है, उसे हम आपको कैसे दिखा सकते हैं, चूंकि यह वहां है, इसलिए वह अच्छा नतीजा होगा ही, यह मिश्रित संगति है, अंगों का जोड़ है।

*इस सदी के तीसरे दशक में सोवियत स्कूलों में इस प्रणाली का व्यापक रूप से प्रचलन था, जिसमें विभिन्न विषयों की अध्ययन सामग्री को एक ही विषय बनाने के उद्देश्य से संयुक्त कर दिया जाता था। अनुभव से सिद्ध हुआ कि इस प्रकार की शिक्षण-प्रणाली में विद्यार्थियों को बुनियादी विज्ञानों के बारे में क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं प्राप्त होता था और ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यक प्रवृत्ति विकसित करने में उनके लिए बाधक प्रमाणित हुई।

एक पाठ के पृथक् अंशों के बीच सम्बन्ध का एक व्यक्ति की मनःशक्ति पर ठोस प्रभाव पड़ेगा ही।"

दूसरे शब्दों में, तर्क से भी इस प्रणाली को अनुभव द्वारा परखने में बाधा पहुंची। और एक दुश्चक्र बन गया: प्रणाली अच्छी है, इसलिए नतीजा अच्छा होना ही चाहिए और चूंकि नतीजा अच्छा है, इसलिए प्रणाली अच्छी होगी ही।

और प्रायोगिक तर्क नहीं, बल्कि निगमनिक तर्क के प्रचलन से पैदा होनेवाली इस प्रकार की भूलें बहुत थीं।

तथाकथित नैतिक जड़पूजा के ढंग की भी बहुत-सी भूलें थीं। उदाहरणार्थ, श्रम द्वारा शिक्षा को ही ले लीजिए।

मैं भी उन लोगों में था, जिन्होंने यह गलती की। "श्रम" शब्द ही इतना सुखद प्रतीत होता है, यह इतना अधिक प्रभावपूर्ण और आकर्षक है कि हमारे लिए पवित्र एवं सुविसंगत है। श्रम द्वारा शिक्षा की धारणा हमें सर्वथा स्पष्ट, सुनिश्चित और सही प्रतीत हुई। और इसके बाद हमें ज्ञात हुआ कि "श्रम" शब्द में एकमात्र सही, परिष्कृत तर्क जैसी कोई बात निहित नहीं है। सर्वप्रथम, श्रम को साधारण काम समझा गया, जिसे आत्मसेवा कह सकते हैं, और उसके बाद इसे निरुद्देश्य श्रम प्रक्रिया के रूप में, अनुत्पादनकारी श्रम के रूप में—व्यर्थ के शारीरिक परिश्रम के रूप में माना गया। "श्रम" शब्द ने तर्क को इतना प्रदीप्त कर दिया कि यह दोषमुक्त प्रतीत हुआ, यद्यपि प्रत्येक कदम पर यह प्रकट होता गया कि कोई वास्तविक दोषमुक्तता नहीं है। परन्तु स्वयं इस शब्द की नैतिक शक्ति में विश्वास इतना दृढ़ था कि तर्क भी पवित्र प्रतीत हुआ। और तब भी मेरे अनुभव तथा मेरे शिक्षक साथियों के अनुभव से सिद्ध हो गया है कि एक शब्द को नैतिक रंग प्रदान करने से कोई साधन नहीं विकसित किया जा सकता, कि शिक्षा में प्रयोजनीय श्रम भिन्न तरीकों से संगठित किया जा सकता है और यह कि प्रत्येक पृथक् अवस्था में इसका नतीजा भिन्न हो सकता है। किसी भी दशा में, स्कूली शिक्षा के साथ-साथ, सामाजिक और राजनीतिक शिक्षा के अभाव में जो श्रम नहीं किया जाता, वह नैतिक महत्त्व से शून्य एक निकम्मा प्रक्रम बना रहता है। आप एक व्यक्ति से जितना चाहें, उतना काम करा सकते हैं, परन्तु जब तक आप इसके साथ ही राजनीतिक और नैतिक शिक्षा प्रदान नहीं करते, जब तक वह

सार्वजनिक एवं राजनीतिक जीवन में भाग नहीं लेता, यह काम निकम्मे प्रक्रम के अतिरिक्त कुछ न होगा, जिससे कुछ ठोस नतीजे नहीं निकलते।

श्रम यदि सामान्य प्रणाली का अंग हो, तभी शिक्षा का साधन बन सकता है।

और अन्तिम, किन्तु किसी भी प्रकार नगण्य नहीं, "पृथक्कृत साधन" के ढंग की भूल है। अक्सर लोग कहते हैं कि अमुक-अमुक साधन से अचूक रूप में फला-फला नतीजा हासिल होता है। यह एक विशेष साधन का प्रश्न है। आइए, हम उस दावे पर विचार करें, जो सरसरी दृष्टि डालने पर सर्वाधिक निर्विवाद प्रतीत होता है और शिक्षाशास्त्रीय पुस्तकों में जिसकी अक्सर चर्चा की जाती है—सज़ा का प्रश्न। दण्ड से गुलामों का सा मनोभाव विकसित होता है—यह एक ऐसा सुनिश्चित प्रमेय है, जिसमें कभी भी सन्देह नहीं किया गया है। निस्सन्देह, इस दावे में सभी तीनों भूलें निहित हैं। इसमें निगमनिक भविष्यवाणी और नैतिक जड़पूजा के ढंग की भूलें निहित हैं। "दण्ड" शब्द में रंग भरने से ही—वास्तविकता को छिपाने से ही इसे तर्कसंगत समझा जाता है। और अन्त में "पृथक्कृत साधन" के ढंग की भूल है—दण्ड से गुलाम का सा मनोभाव विकसित होता है। और तब भी मुझे पूरा यक़ीन है कि पूरी प्रणाली से पृथक् किसी भी साधन पर विचार नहीं किया जा सकता। यदि किसी साधन पर अन्य साधनों, पूरी प्रणाली, सम्पूर्ण मिश्रित प्रभावों से पृथक् विचार किया जाता है, तो साधन चाहे जैसा भी हो, उसे अच्छा अथवा बुरा नहीं कहा जा सकता। सज़ा से गुलाम का सा मनोभाव विकसित हो सकता है, परन्तु कभी-कभी इससे एक बहुत अच्छा व्यक्ति, एक बहुत ही स्वतन्त्र और स्वाभिमानी व्यक्ति भी तैयार किया जा सकता है। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि मेरे निजी अनुभव के अनुसार दण्ड भी उन साधनों में एक था, जिसे मैंने अपने विद्यार्थियों में इज़्ज़त एवं स्वाभिमान की भावना पैदा करने के लिये अपनाया।

मैं बाद में आपको बताऊंगा कि किन अवस्थाओं में सज़ा से मानवीय मर्यादा का विकास होता है। स्पष्टत: केवल अन्य साधनों के सुनिश्चित वातावरण में और विकास के निश्चित स्तर पर ही यह नतीजा पैदा हो सकता है। कोई भी शिक्षाशास्त्रीय साधन, यहां तक कि सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत साधन भी, जिसे हम सामान्यतया प्रबोधन, सफ़ाई, बातचीत

ग्रौर सार्वजनिक प्रभाव कहते हैं, पूर्णतया निर्दोष तथा स्थाई रूप से उपयोगी साधन नही कहा जा सकता। कभी-कभी सर्वोत्कृष्ट साधन निश्चित रूप से निकृष्ट साधन बन जाते हैं। सामुदायिक प्रभाव ग्रर्थात् व्यष्टि पर समष्टि के प्रभाव जैसे साधन को ही लीजिए। किसी वक्त यह ग्रच्छा ग्रौर कभी बुरा सिद्ध होगा। व्यक्तिगत प्रभाव को, विद्यार्थी के साथ शिक्षक की ग्रकेले मे बातचीत को ही लीजिए। कभी यह हितकर ग्रौर कभी ग्रहितकर होती है। यदि साधनों की सम्पूर्ण प्रणाली से पृथक् किसी साधन पर विचार किया जाता है, तो उसकी उपयोगिता ग्रथवा ग्रपकारिता की दृष्टि से उसकी कोई गणना नही की जा सकती। ग्रौर ग्रन्ततः स्थाई प्रणाली के रूप मे किसी भी साधन-प्रणाली को मान्य नही बताया जा सकता।

मुझे दज़ेर्जीन्स्की कम्यून के इतिहास का स्मरण हो ग्राता है। यह कम्यून १६२८ में स्थापित हुग्रा था। उस समय वहा ग्राठवी कक्षा के विद्यार्थियों की उम्र (ग्रर्थात् १५ या १६ वर्ष) से छोटे लडके-लड़कियां थी। यह एक स्वस्थ ग्रौर प्रसन्न समुदाय था, परन्तु १६३५ के बड़े कोम्सोमोल सगठन ग्रौर ग्रनुभवी पुराने विद्यार्थियों वाले समुदाय से, जिनमें कुछ की ग्रवस्था बीस साल की थी, यह भिन्न था। स्पष्टतः परवर्ती समुदाय के ढग के समुदाय के लिए सर्वथा भिन्न शैक्षिक पद्धति ग्रपेक्षित थी।

व्यक्तिगत रूप से मुझे निम्नाकित बात में विश्वास है: यदि हम एक साधारण सोवियत स्कूल को लेकर बीस साल के लिए ग्रच्छे शिक्षकों, संगठकों एव पढ़ानेवालो के हाथ मे दे दें, तो उस ग्रवधि में यह ग्रपूर्व रूप मे इतनी तरक्की करेगा—बशर्ते यह ग्रच्छे शिक्षकों के नियत्रण में बना रहे—कि इस पथ के ग्रन्त मे शुरू की ग्रपेक्षा शैक्षिक पद्धति में बहुत ग्रन्तर ग्रा जायेगा।

सामान्यतया, शिक्षाशास्त्र सर्वाधिक द्वन्द्वात्मक, गतिशील, जटिल ग्रौर बहुविध विज्ञान है। यह दावा मेरे शिक्षाशास्त्रीय विश्वास का ग्राधार है। मैं यह कहने की कोशिश नहीं कर रहा हूं कि जिन बातों की सच्चाई की छानबीन व्यवहारतः करली है, उन सभी चीजों की छानबीन कर चुका हूं; स्थिति इससे भिन्न है। ग्रभी ग्रनेक बातों के बारे में मेरे लिये भी ग्रस्पष्टता है, परन्तु मैं निश्चय ही एक व्यावहारिक प्रावकल्पना के रूप में इसे प्रस्तुत करता हूं, जिसे व्यावहारिक रूप में कम-से-कम परखना

चाहिये। निजी रूप से मुझे अपने अनुभव का प्रमाण सुलभ है, परन्तु निस्सन्देह व्यापक सोवियत सामाजिक व्यवहार में इसे परखने की जरूरत है। इस प्रसंग में मुझे विश्वास है कि मैंने जो कुछ कहा है, उसका तर्क न तो हमारे सर्वोत्कृष्ट सोवियत स्कूलों के अनुभव और न हमारे अधिकांश सर्वोत्कृष्ट बाल और प्रौढ़ समुदायों के अनुभव के प्रतिकूल है।

ये हैं प्रारम्भिक सामान्य विचार, जिन पर ज़ोर देना था।

आइए, अब हम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न, शैक्षिक ध्येयों को निर्धारित करने के प्रश्न पर विचार करें। किनसे, कब और कैसे शैक्षिक ध्येय निर्धारित हो सकते हैं और यथार्थतः वे ध्येय हैं क्या?

मेरी दृष्टि में "शैक्षिक ध्येय" की धारणा का अभिप्राय व्यक्तित्व के विकास का कार्यक्रम है, चरित्र-निर्माण का कार्यक्रम है और इसमें भी बढ़कर मैं "चरित्र" की धारणा में उन सभी बातों को शामिल करता हूं, जो व्यक्तित्व में निहित होती है, अर्थात् उसकी बाह्य अभिव्यक्तियों का स्वरूप, उसके आन्तरिक विश्वास, उसकी राजनीतिक शिक्षा और उसका ज्ञान– अपने आप में पूर्ण मानवीय व्यक्तित्व का चित्र। मेरा यह विचार है कि हम बाल-शिक्षकों को मानवीय व्यक्तित्व का इसी प्रकार का कार्यक्रम अपनाना चाहिए और इसी दिशा में हमें प्रयास करना चाहिए।

मैं अपने व्यावहारिक काम में इस प्रकार के कार्यक्रम के बिना कुछ भी नहीं कर सकता था। अनुभव के समान कोई शिक्षा प्रदान करनेवाला नहीं है। उसी द्जेर्जीन्स्की कम्यून में कई सौ व्यक्ति मेरे सिपुर्द किये गए और मैंने इनमें से प्रत्येक व्यक्ति की गहरी और खतरनाक उत्सुकता, बद्धमूल प्रवृत्तियां अनुभव की और मुझे सोचना पड़ा: उनका चरित्र किस प्रकार का होना चाहिए, इन लड़के-लड़कियों को योग्य नागरिकों के रूप में ढालने के लिए मुझे किस बात का प्रयास करना चाहिए? और मैं जब इस प्रश्न पर विचार करने लगा, तो पता चला कि इस प्रश्न का उत्तर दो शब्दों में नहीं दिया जा सकता। एक अच्छे सोवियत नागरिक को ढालने की धारणा ने अभी तक मुझे रास्ता नहीं सुझाया। मुझे मानवीय व्यक्तित्व के एक अधिक व्यापक कार्यक्रम को तैयार करना पड़ा। और जब मैं इसे सुलझाने लगा, तो निम्नांकित प्रश्न मेरे सम्मुख प्रस्तुत हुआ: जहां तक इस कार्यक्रम का सम्बन्ध है, क्या अब सबके लिए वह एक ही होना चाहिए? मेरे लिए एक ही कार्यक्रम में प्रत्येक व्यक्ति को शामिल करना, एक ढांचे

में ढालना और इस ढांचे के लिए प्रयास करना क्यों आवश्यक है? यदि बात ऐसी ही है, तो मुझे व्यक्तिगत आकर्षण, व्यक्तित्व की मौलिकता एवं विशिष्ट सौन्दर्य को त्याग देना चाहिए, परन्तु यदि मैं ऐसा नहीं करता, तो किस प्रकार का ढांचा मुझे सुलभ होगा! मैं सुगमतः आगे न बढ़ सका और एक अमूर्त प्रश्न के रूप में इस सवाल का उत्तर न दे सका, परन्तु उसके बाद दस वर्षों के दौरान व्यावहारिक रूप में इसका उत्तर मुझे प्राप्त हो गया।

मुझे ज्ञात हो गया कि वास्तव में एक सामान्य कार्यक्रम, एक ढांचा और इसके साथ ही इस में विशिष्ट सुधार भी होना चाहिए। यह प्रश्न मेरे लिए पैदा नहीं हुआ: क्या मेरा विद्यार्थी बड़ा होकर एक साहसी व्यक्ति होगा अथवा क्या पढ़-लिखकर वह एक कायर होगा? इस सम्बन्ध में आदर्श निर्धारित था: मेरे प्रत्येक विद्यार्थी को बहादुर, दृढ़, ईमानदार और परिश्रमी देशभक्त बनना है। परन्तु जब आपको एक व्यक्ति की प्रतिभा जैसे गूढ़ पहलुओं से मतलब रखना है, तो सोचना पड़ता है कि किस पद्धति को अपनाना चाहिए? और कभी-कभी जब प्रतिभा की बात पैदा होती है, जब आपके सम्मुख यह समस्या उपस्थित हो जाती है, तो कुछ दुःखदायी सन्देह पैदा हो जाते हैं। इसी प्रकार की एक स्थिति मेरे सम्मुख उपस्थित हो गई थी। तेरेन्त्युक नामक एक लड़के ने स्कूल में दस साल की पढ़ाई समाप्त कर ली थी। वह बहुत ही तेज विद्यार्थी था, सभी विषयों में उसे पांच अंक मिले थे, और प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के बाद उसने सूचित किया कि वह तकनीकी संस्थान में दाखिल होना चाहता था। इससे पहले मैंने उसमें अभिनय कला की बड़ी प्रतिभा अनुभव की थी, और मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि सुखान्त नाटकों के असाधारण रूप से प्रभावकारी अभिनेता, बहुत ही विलक्षण, मसखरी, [illegible] [illegible] दृश्यों में कुशल और अच्छे [illegible] एक बुद्धिमान वर्ग के अभिनेता की बड़ी प्रतिभा थी। मैंने अनुभव किया कि अभिनेता के रूप में वह अच्छी कामयाबी हासिल कर सकता है और तकनीकी संस्थान में एक औसत विद्यार्थी से अधिक वह कुछ नहीं बनेगा। परन्तु मेरे सभी विद्यार्थी इंजीनियर बनना चाहते थे, क्योंकि यह समय की मांग थी। अब सोचिए कि यदि [illegible] [illegible] मैं सूचित करता कि वे अभिनय [illegible] कर सकते हैं, तो वे [illegible] [illegible] "आपको [illegible] का क्या अधिकार है? क्या [illegible]

एक शिक्षक बनने की बात?" मैंने तेरेन्त्यूक से कहा "अभिनेता का पेशा अपनाओ" और उसने उत्तर दिया "कभी नहीं, क्या वह असल काम है अभिनेता का?" और इस प्रकार उसने जाकर तकनीकी सस्थान मे अपना नाम लिखाया, परन्तु मुझे पूर्णत. विश्वास रहा कि हम एक अच्छे अभिनेता को खो रहे थे। मैंने उसकी बात मान ली, क्योंकि एक व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार की खींचातानी करने का मुझे कोई हक नहीं था ..

परन्तु फिर भी हस्तक्षेप करने से मैं अपने को रोक नहीं सका। उस समय वह तकनीकी सस्थान में छ महीने से पढ़ रहा था, और अपने अवकाश के समय हमारी शौकिया नाटक-मण्डली मे भाग लिया करता था। मैंने इस पर बहुत विचार किया, और तब मैंने निश्चय कर लिया. मैंने आम सभा में तेरेन्त्यूक को बुलवाया और सूचित किया कि मैं उसके विरुद्ध अनुशासनहीनता की शिकायत प्रस्तुत करने जा रहा हूं। हमारे छात्रों और छात्राओं ने उससे कहा· "क्या तुम अपने व्यवहार से स्वय लज्जित नहीं हो, तुम से जो कुछ कहा जाता है, उसे क्यों नहीं करते?" और उन्होंने एक प्रस्ताव पास किया कि उसे तकनीकी सस्थान से नाम कटा लेना चाहिए और उसकी जगह नाट्यकला स्कूल मे दाखिल हो जाना चाहिए। कुछ समय तक वह बहुत उदास दिखाई पडा, परन्तु वह समुदाय की इच्छा के खिलाफ नहीं जा सकता था, क्योंकि समुदाय ही उसे मासिक वजीफा प्रदान करता था और उसी ने उसे रहने का स्थान दिया था। वह श्रेष्ठ अभिनेता हो गया है और दूसरो ने दस साल मे जितना अनुभव प्राप्त किया है, वह उतना दो ही साल मे अर्जित कर सुदूर पूर्व के एक सर्वोत्कृष्ट थियेटर मे अभिनेता का काम कर रहा है। और अब वह मेरे प्रति बहुत आभारी है।

फिर भी, यदि इस समय इसी प्रकार की समस्या मेरे सम्मुख प्रस्तुत हो, तो इसे हल करने मे मुझे भय लगेगा—मैं यह कैसे जान सकता हू कि मुझे इस प्रकार हस्तक्षेप करने का अधिकार है? क्या एक व्यक्ति को विद्यार्थी द्वारा पसन्द किये गए पेशे के बारे मे दखल देने का कोई अधिकार है या नहीं, यह प्रश्न अभी मेरे लिए अनिर्णीत बना हुआ है। परन्तु मुझे पूरा यकीन है कि प्रत्येक शिक्षक के सम्मुख यह प्रश्न पैदा होगा—क्या उसे एक छात्र चरित्र के विकास के प्रसंग मे हस्तक्षेप करने और उसे सही दिशा मे संचित करने का अधिकार है अथवा क्या उसे निष्क्रिय रूप से केवल

एक तमाशाई बन जाना चाहिए? मेरे विचार से प्रश्न का उत्तर स्वीकारात्मक ढंग से देना चाहिए—हां उसे अधिकार है। परन्तु इस अधिकार का उपयोग कैसे किया जाये? प्रत्येक अलग-अलग अवस्था में व्यक्तिगत रूप से इस प्रश्न को हल करने का प्रयास करना होगा, क्योंकि अधिकार का होना एक बात है और समुचित रूप से इसका प्रयोग करना बिलकुल दूसरी बात है। वे दो भिन्न समस्याएं हैं। और इस बात की बहुत संभावना है कि एक समय आयेगा, जब कैसे यह क्रिया की जाये, इसे लोगों को सिखाना हमारे शिक्षकों के प्रशिक्षण में भी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। अन्ततः एक शल्यचिकित्सक को शल्यक्रिया द्वारा खोपड़ी छेदना सिखाया जाता ही है। और जहां तक हमारा सम्बन्ध है, एक शिक्षक को संभवतः मेरी अपेक्षा अधिक कुशलतापूर्वक, अधिक सफलता के साथ इस "मानसिक क्रिया" को कैसे सम्पन्न किया जाये, इसे शायद सिखाया जायेगा और उसे यह भी बताया जायेगा कि एक व्यक्ति के सहज गुणों, रुझानों और योग्यता का यथेष्ट उपयोग करके कैसे उसे सबसे अच्छी दिशा में लक्षित किया जाये।

अब मैं उन व्यावहारिक ढंगों की चर्चा करूंगा, जो मेरे अनुभव तथा मेरे सहयोगियों के अनुभव के अनुसार हमारे शैक्षिक कार्य में सर्वाधिक सफलता के साथ लागू किये गए। मैं समुदाय को शैक्षिक कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्माणात्मक रूप मानता हूं। ऐसा प्रतीत होगा कि शिक्षाशास्त्रीय साहित्य में समुदाय के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, परन्तु किसी व्यापक सुबोध ढंग से नहीं।

समुदाय क्या है और किस सीमा तक हम इसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं? मैं मास्को और कीयेव, जहां अब मैं अक्सर जाता हूं और पहले अक्सर गया हूं, दोनों जगहों के अनेक स्कूलों का निरीक्षण करता रहा हूं और मुझे सदा विद्यार्थियों का वास्तविक समुदाय नहीं दिखाई पड़ा। कभी-कभी मैं श्रेणीगत समुदाय देख लेता हूं, परन्तु शायद ही मैंने कभी एक स्कूल-समुदाय देखा हो।

मेरे दोस्तों ने और खुद मैंने जिस समुदाय को निर्मित किया है, अब मैं आपको उस समुदाय के बारे में चन्द सीधे-सादे शब्दों में आपको कुछ बताऊंगा। और, आपको स्मरण रखना चाहिए कि जिन परिस्थितियों में मैंने काम किया, वे एक सामान्य स्कूल की स्थितियों से भिन्न थीं, क्योंकि

जहां तक मेरे समुदाय का सम्बन्ध था, विद्यार्थियों का निवासस्थान बोर्डिंग-हाउस मे था, उन्होंने काम किया, और अधिकाश विद्यार्थियो के मा-बाप नही थे, दूसरे शब्दो मे उनका कोई अन्य समुदाय नही था। और इसलिए स्वाभाविक रूप से स्कूल के एक शिक्षक की अपेक्षा मुझे सामूहिक शिक्षा के अधिक साधन सुलभ थे। परन्तु केवल बेहतर परिस्थितियो के कारण रियायत देने का मेरा कोई इरादा नही है। एक समय मैं एक साधारण स्कूल मे प्रधानाध्यापक था, जहा रेलवे मजदूरों अथवा दरअसल रेल के डिब्बे तैयार करनेवाली एक फैक्टरी के मजदूरो के बच्चे पढते थे और वहा भी मैंने उन्हे एक स्कूल-समुदाय के रूप मे एकजुट कर दिया था।

स्कूली शिक्षा-पद्धति मे, जो पहले शिक्षा की जन-कमिसारियत के पुराने नेताओ द्वारा सचालित होती थी, कुछ बहुत ही आश्चर्यजनक बाते हो रही हैं, ये बाते मेरे शैक्षणिक विचार से अग्राह्य हैं। इसे और स्पष्ट कर दू। कल मैं एक विश्रामप्रद एवं आनन्ददायक पार्क मे गया था, एक ऐसा पार्क, जिसमे युवा पायनियर प्रासाद है। इसी क्षेत्र मे पाव्लिक मोरोज़ोव सदन* है, यह एक पृथक् भवन है। और इसी क्षेत्र मे तेरह स्कूल हैं। कल मैंने देखा कि किस प्रकार वे तीनो सगठन – स्कूल, युवा पायनियर प्रासाद और पाव्लिक मोरोज़ोव सदन – बच्चो को एक समुदाय से दूसरे समुदाय मे खीचते हैं। बच्चो का कोई समुदाय नही है।

स्कूल मे पढाई के समय वे एक समुदाय से, घर पर दूसरे समुदाय से, युवा पायनियर प्रासाद मे तीसरे समुदाय से और पाव्लिक मोरोज़ोव सदन मे चौथे समुदाय से सम्बद्ध हैं। वे सुबह एक, दोपहर के खाने के समय उससे भिन्न और उसके उपरान्त रात मे एक अन्य समुदाय को पसन्द करते हुए एक समुदाय से दूसरे समुदाय मे निरुद्देश्य जाते रहते हैं। कल मैंने निम्नाकित दृश्य देखा युवा पायनियर प्रासाद की अपनी नृत्य-मण्डली है। इन स्कूलो मे से एक के कोम्सोमोल सगठक ने सूचित किया · "उस मण्डली

---

*पाव्लिक मोरोज़ोव, चौदह वर्षीय पायनियर, एक गरीब किसान का लडका, जिसने सामूहीकरण की अवधि मे अपने गाव मे कुलकों के विरुद्ध बड़ी बहादुरी के साथ सघर्ष किया। १९३२ मे कुलकों ने उसकी हत्या कर दी। पाव्लिक मोरोज़ोव के नाम पर कई युवा पायनियर दलों और प्रासादों का नाम रखा गया है।

में शामिल होने के लिए हम अपनी लड़कियों को इजाजत नहीं देंगे। स्कूल का प्रधानाध्यापक बहुत गुस्से में था: "क्या आप इसकी कल्पना भी कर सकते हैं? कोम्सोमोल संगठक ने सूचित किया है कि वह लड़कियों को मण्डली में शामिल नहीं होने देगा!" प्रधानाध्यापक ने कोम्सोमोल संगठक को सार्वजनिक सुनवाई में घसीटा: "देखिए, यह व्यक्ति क्या कर रहा है?" और कोम्सोमोल संगठक अपनी बात पर अड़ा रहा: "मैं कह चुका हूं कि मैं इजाजत नहीं दूंगा और हर्गिज़ न दूंगा।" टकराव की स्थिति पैदा हो गई। और मुझे स्मरण है कि हमारे कम्यून में भी इसी प्रकार विग्रह की स्थिति पैदा हो गई थी। हमारे पास विविध प्रकार की मण्डलियां थीं, बहुत ही गंभीर अध्ययन-केन्द्र थे, सच्चे ग्लाइडर थे और एक अश्वारोही सेक्शन भी था... खैर, एक लड़का, एक बहुत ही अच्छा लड़का, एक युवा पायनियर अपने पायनियर संगठन द्वारा खार्कोव के युवा पायनियर प्रासाद में शामिल हो गया और वहां उसने उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र की जानकारी प्राप्त करने के काम में भाग लिया और उसने इतना अच्छा काम किया कि उक्त प्रासाद ने उसे पुरस्कार प्रदान किया–अन्य लड़कों के दल के साथ मुर्मान्स्क की यात्रा। मीशा पेकेर नामक यह लड़का कम्यून में वापस आया और सबको उसने बताया कि वह मुर्मान्स्क जा रहा है।

"तुम कहां जा रहे हो?" बड़े लड़कों में से एक ने उससे पूछा।

"मुर्मान्स्क।"

"कौन तुम्हें जाने की अनुमति देगा?"

"खार्कोव का युवा पायनियर प्रासाद मुझे भेज रहा है!"

कम्यून के बड़े सदस्यों ने आम सभा में मीशा से जवाब-तलब किया–कौन उसे भेज रहा है और कहां।

"मैं उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र का अनुसन्धान करने मुर्मान्स्क जा रहा हूं और युवा पायनियर प्रासाद मुझे वहां भेज रहा है," मीशा ने उन्हें बताया।

इस पर आम विरोध प्रकट किया गया।

"युवा पायनियर प्रासाद तुम्हें कहीं भी भेजने की धृष्टता कैसे कर रहा है? और मान लो कि हम तुम्हें कल अफ्रीका अथवा अन्यत्र किसी काम से भेजना चाहें, तो क्या होगा? हम वोल्गा पर यात्रा की योजना बना रहे हैं और तुम हमारे अलगोजावादक हो, परन्तु यदि तुम अलगोजा न

तुम वहीं नहीं जा सकते। तुम्हें इन पुरस्कारों आदि को स्वीकार करने के लिए ग्राम सभा से अनुमति लेनी चाहिए थी!"

मीशा ने ग्राम सभा का निर्णय स्वीकार कर लिया। परन्तु युवा पायनियर और कोम्सोमोल संगठनों तथा पायनियर प्रासाद को सब कुछ ज्ञात हो गया और यह चर्चा थी: "द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में यह सब क्या हो रहा है? हम एक व्यक्ति को उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में भेजना चाहते हैं और वे उसे निर्देश देते हैं: नहीं, तुम नहीं जा सकते, तुम्हें रुकना होगा और अलगोजा बजाना ही होगा, क्योंकि हम वोल्गा पर यात्रा की योजना बना रहे हैं।" उक्रइनी कोम्सोमोल संगठन की केन्द्रीय समिति में यह प्रश्न उठाया गया। परन्तु बिना किसी गड़बड़ी के यह सुलझ गया: "यदि मीशा को जाना ही होगा, तो हम उसे जबरन नहीं रोकेंगे, निस्सन्देह हम उसे मासिक वज़ीफा और सब कुछ प्रदान करते रहेंगे और यदि वह चाहे, तो युवा पायनियर प्रासाद में शामिल हो सकता है और वहां रह सकता है... और यदि जरूरत पड़ी, तो हम स्वयं जिसे भी चाहें आवश्यक अनुसन्धान में सहायता प्रदान करने के लिए उत्तरी ध्रुव भेजेंगे और हम उत्तरी ध्रुव के अनुसन्धान में हाथ बंटायेंगे। इस समय हमारी योजना में यह शामिल नहीं है, बस यही बात है। और यदि श्मीद्त* को इस काम से भेजा जाये और वही यह कार्य करे, तो *क्या बात है!* सोवियत संघ में प्रत्येक व्यक्ति उत्तरी ध्रुव नहीं जा सकता और इसलिए यह तर्क करना बेकार है कि उत्तरी ध्रुव के अनुसन्धान के लिए जाना हरेक व्यक्ति का काम है!" स्पष्टतः मीशा तर्क करना चाहता था, परन्तु उन्होंने उससे कहा: "अच्छा, बस, तुम काफ़ी बहस कर चुके हो।" और तब उसने कहा: "अब मैं स्वयं नहीं जाना चाहता।"

और यहां एक दूसरा प्रश्न पैदा होता है। मैं मास्को के निकट कई ग्रीष्मकालीन शिविरों में जा चुका हूं। वे अच्छे शिविर हैं, इनमें से किसी

---

*ओ० यू० श्मीद्त (१८९१–१९५६) – प्रमुख सोवियत गणितज्ञ, ज्योतिर्विद, भूभौतिकशास्त्री, सोवियत संघ के वीर। १९२९ से १९३८ तक सोवियत संघ के उत्तर ध्रुवीय क्षेत्रों के अनुसंधान के लिए जानेवाले कई अनुसन्धान-दलों का उन्होंने नेतृत्व किया था।

हैं। परन्तु मुझे इस पर आश्चर्य हुआ कि विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी वहां आते हैं और यह कुछ ऐसी बात है, जिसका औचित्य मैं नहीं समझ पाता। मेरा ख्याल है कि इसमें शिक्षा का सामंजस्य गड़बड़ा जाता है। एक लड़का किसी एक स्कूल-समुदाय से सम्बन्धित है और वह अपना ग्रीष्मावकाश एक संयुक्त समुदाय में व्यतीत करता है। इसका अर्थ यह है कि उसका अपना स्कूल-समुदाय उसकी गरमी की छुट्टियां व्यतीत करने की व्यवस्था करने में कोई भूमिका अदा नहीं करता। और इसी कारण युवा पायनियर प्रासादों में तथा अन्यत्र मतभेद पाया जाता है और मैं जानता हूं कि यह मतभेद क्यों पैदा होता है।

संयुक्त, सबल और प्रभावकारी समुदायों का गठन करके उपयुक्त सोवियत शिक्षा संगठित होनी चाहिए। स्कूल को अविभक्त समुदाय होना चाहिए, जहां सभी शैक्षिक प्रक्रियाएं समुचित रूप से संगठित की जाती हैं। समुदाय के प्रत्येक सदस्य को समुदाय पर अपनी निर्भरता महसूस करनी चाहिए, उसे समुदाय के हितों के प्रति निष्ठावान होना चाहिए, उसे इन हितों का समर्थन करना चाहिए और इन्हें सब बातों से अधिक महत्त्वपूर्ण समझना चाहिए। परन्तु मैं उस स्थिति को ठीक नहीं समझता, जिसमें एक समुदाय का प्रत्येक सदस्य अपने समुदाय की मदद और साधन का इस्तेमाल किये बिना ही अपनी पसन्द के अनुसार अपने साथियों को ढूंढ निकालने के लिए स्वतंत्र है। इसके क्या नतीजे हो सकते हैं? हमारे सभी नगरों और विशेष रूप से मास्को में युवा पायनियर प्रासाद बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। हम बहुतेरे कार्यकर्ताओं के प्रयासों और उनके द्वारा प्रयुक्त कार्य-प्रणाली की सराहना कर सकते हैं। परन्तु जहां वे इतना अच्छा काम कर रहे हैं और हमारा समाज उन्हें इस काम में सहायता प्रदान करता है, वहीं इससे हमारे कुछ स्कूलों को कोई भी अतिरिक्त काम करने से कतराने का मौका हाथ लगता है। कई स्कूल मण्डलियों को चलाने की तकलीफ गवारा नहीं करते, क्योंकि विद्यार्थी युवा पायनियर प्रासादों की ऐसी मण्डलियों में शामिल हो सकते हैं। और निस्सन्देह सदैव बहाने बनाये जा सकते हैं: या तो उनके पास कोई उपयुक्त इमारत नहीं है अथवा कोष नहीं है, या यदि यह नहीं, तो इन मण्डलियों को चलाने के लिए प्रशिक्षक नहीं हैं, इसी प्रकार के कई अन्य बहाने प्रस्तुत किये जा सकते हैं। मैं एक
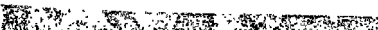
उम्र के थे, दूसरे शब्दों में इस समुदाय में पहली से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थी शामिल थे। स्पष्टतः वे कई बातों में एक-दूसरे से भिन्न थे। उम्र में बड़े विद्यार्थी अधिक शिक्षित, औद्योगिक काम में अधिक कुशल और अधिक सुसंस्कृत थे। निस्सन्देह, सबसे छोटे अपढ़ और "भटके हुओं" की परिभाषा के अनुरूप थे। परन्तु अन्तिम लेखे में, साधारणतः वे बच्चे थे। किन्तु फिर भी, मेरे काम के आखिरी वक्त में यथार्थतः समान उद्देश्य की प्राप्ति में संलग्न सभी पांच सौ विद्यार्थियों का एक ही समुदाय था। मैंने एक भी विद्यार्थी को समुदाय के एक सदस्य के रूप में उसकी उम्र अथवा विकास पर ध्यान दिये बिना उसके अधिकारों अथवा मत से कभी भी वंचित नहीं किया। वास्तव में कम्यून की ग्राम सभा एक वास्तविक प्रवन्धक सभा थी।

मेरे आलोचकों और अधिकारियों ने प्रबन्धक सभा के रूप में ग्राम सभा के कार्य करने के इस विचार के कारण ही विरोध और इस व्यवस्था की उपयोगिता में सन्देह प्रकट किए। उन्होंने कहा: आप इतनी बड़ी ग्राम सभा को निर्णय करने की अनुमति नही प्रदान कर सकते, आप एक समुदाय का प्रबन्ध बच्चों एवं किशोरों की भीड़ को नहीं सौंप सकते। निस्सन्देह, उनका ख्याल ठीक था। परन्तु मेरा पूरा उद्देश्य इन बच्चों को मात्र एक भीड़ नही बनने देना था, बल्कि एक समुदाय के सदस्यों की ग्राम सभा के रूप में उन्हे ढालना था।

एक "भीड़" को ग्राम सभा में बदलने के अनेक तरीके और उपाय हैं। यह न तो किसी कृत्रिम उपाय से हो सकता है और न एक महीने मे यह लक्ष्य पूरा हो सकता है। यह एक उसी प्रकार की बात है, जबकि अनिवार्यतः शीघ्र फल पाने का प्रयास विफल हो जाता है। एक ऐसे स्कूल को ले लीजिए, जहां किसी प्रकार का समुदाय नहीं है, कोई सामंजस्य नही है, जहां अधिक-से-अधिक एक कक्षा की अपनी पृथक् जीवन-प्रणाली है और वह दूसरी कक्षाओं से उसी प्रकार सम्पर्क में आती है, जैसे रास्ते से गुज़रनेवालों से हमारा साथ हो जाता है। बच्चों के इस बेडौल समूह से एक समुदाय का गठन स्वाभाविक रूप से दीर्घकालीन और कठिन काम होगा (निश्चित रूप से एक या दो साल से अधिक समय लगेगा)। परन्तु उसके बाद, यदि एक समुदाय का निर्दिष्ट रूप में गठन हो जाये, यदि इसे अविभाज्य रूप में क़ायम रखा जाये, इसकी अच्छी देखभाल की जाये और

आवश्यकता होती, तो मैं उसकी जांच कर सकता था और सज़ाएं दे सकता था। मेरे सिवा, निस्सन्देह ग्राम सभा को छोड़कर, कम्यून में अन्य किसी को दण्ड देने का अधिकार नहीं था। किन्तु, जब मेरे लिए स्वयं प्रतिदिन हाज़िरी लेना सभव न था, तो पहली बार मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा कि आगे ड्यूटी पर तैनात कमाडर मेरी जगह यह काम किया करेगा।

क्रमशः यह एक नियत परिपाटी बन गई। और इस प्रकार एक परम्परा क़ायम हुई: हाज़िरी लेते समय ड्यूटी पर तैनात कमाडर को कमाण्डिंग अफ़सर का अधिकार सुलभ था और उसका हुक्म ही नियम था। समय व्यतीत होने के साथ ही मूल कारण भुला दिया गया। कम्यून में नये आनेवालों को यह ज्ञान था कि ड्यूटी अफ़सर को दण्ड देने का अधिकार था, परन्तु उन्हें इसका कारण मालूम नहीं था। निस्सन्देह, पुराने विद्यार्थियों को वह याद था। ड्यूटी अफ़सर उनसे कहता: "तुम्हें दुगुना कठोर काम करना होगा।" और वे उत्तर देते: "हां, महाशय।" परन्तु यदि वही ड्यूटी अफ़सर दिन के किसी अन्य समय इसी अधिकार का प्रयोग करने की कोशिश किया होता, तो उन्होंने उससे यही कहा होता: "तुम हमें आदेश देनेवाले हो कौन?" यह एक स्थिर परम्परा बन गई और समुदाय को सहत बनाने में इसने बड़ी सहायता प्रदान की।

मेरे समुदाय में इस प्रकार की अनेक, प्रायः सैकड़ों परम्पराएं थीं। मुझे सभी परम्पराओं की जानकारी नहीं थी, परन्तु लड़के-लड़कियों को उनका ज्ञान था। यद्यपि वे लिपिबद्ध नहीं थी, फिर भी वे उन्हें जानते थे, उनकी जानकारी प्राप्त करने के लिए टोह लगाते थे अथवा किसी अन्य ढंग का इस्तेमाल करते थे। "क्या यह ठीक व्यवहार है?" वे स्वयं अपने से प्रश्न करते थे। "किस आधार पर? क्योंकि हमसे बड़े भी इसी ढंग का व्यवहार करते हैं।" अपने बड़ों के अनुभव का अनुसरण करना, बड़ों की युक्ति का सम्मान करना, कम्यून के विकास में उनके प्रयास का आदर करना और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समुदाय और इसके प्रतिनिधियों के अधिकारों का सम्मान करना — ये बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यवहार हैं और निस्सन्देह वे परम्पराओं द्वारा अनुमोदित हैं। इन परम्पराओं से बच्चों का जीवन अधिक मनोहर हो जाता है। परम्पराओं के इस ढांचे के अन्तर्गत रहते हुए, अपने निजी समुदाय के लिए निर्दिष्ट इन विशेष नियमों में वे व्यक्तिगत गर्व का अनुभव करते हैं और उन्हें निर्दोष बनाने की कोशिश करते हैं।

है, वह झिझक भाव से उसका दोष बता देगी। मैं इसे लड़कों और सयानी लड़कियों के लिए उचित नहीं समझता। उन सभी ने मुझसे सहमति प्रकट की, परन्तु उसके साथ ही जब भी चुनाव का समय आता और कोम्सोमोल उम्र की किसी लड़की का नाम प्रस्तावित किया जाता, तो वे सभी उसके विरुद्ध वोट देते और किशोर पायनियर उम्र की एक लड़की को चुन लेते। और वे जिसको चुनते, वह निरी बच्ची होती। आप उसे काम सौंपने की बात भी नहीं सोचेंगे। वे कहते, "नहीं, वही उपयुक्त है।"

सफाई कमीशन मे काम करनेवाली वे लडकिया सचमुच क्रूर थीं, वे पूर्णतया विभीषिका तुल्य थीं। ऐसी बारहवर्षीय लडकी दिन भर–खाना खाते समय, काम करते समय, शयनागार मे सभी जगह किसी न किसी के पीछे पड़ी रहती। बाकी व्यक्ति शिकायत करते "यह भी क्या जीवन है! जब वह शयनागार में धूल का कण नहीं पाती, तो किसी कुर्सी को उलट देती है और यदि रोयें का टुकडा अथवा एक बाल भी वहा दिखाई पड़ जाता है, तो हगामा मचा देती है।"

और वह अपनी रिपोर्ट में यह लिखती कि उसने पन्द्रहवें नम्बर के शयनागार को गन्दा पाया। और इस शिकायत के विरुद्ध तर्क करने की कोई गुजाइश नहीं थी, क्योंकि वह सच थी। सर्वथा बच्ची नीना नाम की वह लडकी कहती: "तुम कंघी कर रहे थे और फ़र्श पर बाल गिरा रहे थे, तो क्या मुझसे यह आशा की जाती है कि मैं तुम्हारे दोष को छिपा दूं?" सयाने हमजोली इस बच्ची को अपने काम का विवरण प्रस्तुत करते हुए, कितने कमरों का उसने निरीक्षण किया है, उनकी संख्या बताते हुए और उन पर उसकी टिप्पणिया करते हुए सुनते और स्वयं अपने से पूछते: "क्या इसने ठीक ढंग से अपना काम किया है?"–"बहुत अच्छा काम किया है।" इसे बिल्कुल विस्मृत करते हुए कि उन्होंने स्वयं उसे कण्टक समझा था, वे पुनः उसी को चुनते।

समुदाय ने यह महसूस किया कि सुनिश्चित रूप से इसी प्रकार की लड़कियों को, छोटी लड़कियों को, सबसे अधिक सिद्धान्तनिष्ठ, सर्वाधिक साफ-सुथरी और ईमानदार लडकियों को, उन बहुत छोटी लड़कियों को जो प्रेम के चक्कर मे नही फंस सकती थीं अथवा किसी अन्य बात से नहीं बहक सकती थी, यह काम सौंपना चाहिए। इस परम्परा की जड़ें इतनी गहरी चली गईं कि कोम्सोमोल ब्यूरो की बैठकों मे भी वे कहते: "नहीं,

इस लड़के से काम नही चल सकता, हमे वलावा जैसी छोटी लड़की को चुनना चाहिए, वह बहुत परिश्रम से काम करेगी।"

इस प्रकार की परम्पराएं स्थापित करने मे बच्चे प्रभावकारी रूप मे समर्थ है।

निस्सन्देह, परम्पराम्रो को कायम करने मे कुछ सहज ग्रनुदारता का प्रयोग होना चाहिए, मेरे कहने का ग्रभिप्राय है सराहनीय ग्रनुदारता: जो कुछ हो चुका है, उसका सम्मान करना, ग्रपने साथियो द्वारा स्थापित मान्यताम्रों का सम्मान करना ग्रौर किसी की सनक (इस मामले मे मेरी सनक) से उन्हें नष्ट न होने देना चाहिए।

ग्रन्य परम्पराम्रो मे मैं एक विशेष परम्परा की कद्र करता हू ग्रौर वह है खेलकूद की भांति सैन्यीकरण की परम्परा... इसे एक फौजी टुकडी की नियमावली की पुनरावृत्ति मात्र नही होनी चाहिए। किसी भी रूप मे इसे किसी बात की नकल ग्रौर ग्रनुकृति नही होनी चाहिए।

मै सतत सैनिक ढंग से चलने के विरुद्ध हूं, जिस पर कुछ युवक शिक्षक बहुत ग्रधिक जोर देते है। उनके विद्यार्थी चाहे भोजन-कक्ष मे, चाहे काम करने ग्रथवा कही ग्रौर जा रहे हो, वे सदैव मार्च करते रहते है। यह बुरा लगता है ग्रौर बिल्कुल ग्रनावश्यक है। परन्तु फौजी जीवन मे, विशेष रूप से लाल सेना के जीवन-क्रम मे बहुत कुछ ऐसा है, जो प्रभावोत्पादक एव उत्साहवर्धक है ग्रौर मैं ग्रपने काम मे इस सुगठन की उपयोगिता का ग्रधिकाधिक कायल हो गया हूं। बच्चो मे इस "सैन्यीकरण" को ग्रौर भी ग्राकर्षक बनाने, इसे ग्रधिक बालोचित एव सुखद बनाने का सहज गुण है। मेरे समुदाय का कुछ हद तक सैन्यीकरण हुग्रा। प्रथमतः, हम जिस शब्दावली का उपयोग करते थे, वह कुछ-कुछ फौजी ढंग की थी, जैसे "टुकड़ी का कमांडर"। शब्दावली महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ, मैं इससे सहमत नही हूं कि एक स्कूल को ग्रपूर्ण माध्यमिक स्कूल* कहना ठीक है।

---

*ग्रपूर्ण माध्यमिक स्कूल (सात साला स्कूल)—पूर्ण ग्रथवा दस साला माध्यमिक स्कूल की पहली सात कक्षाएं। स्वतन्त्र स्कूलो के रूप मे भी उनका संचालन होता है। बिना प्रवेश परीक्षाम्रो को दिये ही सातवी कक्षा पास विद्यार्थी दस साला स्कूल की ग्राठवी कक्षा मे दाखिल हो सकता है ग्रथवा परीक्षाम्रो मे उत्तीर्ण होने के बाद विशेष माध्यमिक स्कूलों मे (तकनीकी, मेडिकल, ट्रेनिंग कालेज ग्रादि) नाम लिखा सकता है।

म इस बात पर विचार करूंगा। यह कैसा लगता है
माध्यमिक स्कूल जाता हूं। निश्चय ही एक विद्न
विद्यार्थियों के लिए नाम आकर्षक होना चाहिए। मैंने शब्द
पर ग़ौर किया। जब मैंने अपने सीनियरों को टोली का
सुझाव प्रस्तुत किया, तो किशोरों ने कहा कि यह उपयुक्त
टोली का नेता उद्योग मे मजदूरों की एक टोली का नेता ह
हमें अपनी टुकड़ी का एक कमांडर चाहिए। परन्तु, अन्ततः
काम करेगा। किशोरो ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि वह तो है
एक कमाडर आदेश दे सकता है, जबकि एक टोली का नेता
देने की कोशिश करे, तो उससे कह दिया जायेगा कि तुम
देखो। बाल-समुदाय मे एक जन प्रबन्ध की समस्या को सुलझाने
तरीक़ा बहुत अच्छा और आसान है।

"रिपोर्ट" शब्द को ही लीजिए। स्वभावतः, लड़का दिन भर
विवरण हमे दे सकता था, परन्तु मैंने महसूस किया कि कुछ औपचा
उन्हें बहुत ही अच्छी लगती है। अपनी रिपोर्ट देने के लिए कमांडर
ऊपरी पोशाक अथवा दिन भर जिस कपड़े को वह पहने रहता है,
नहीं, बल्कि अपनी वर्दी मे उपस्थित होना चाहिए। रिपोर्ट प्रस्तुत
समय अभिवादन मे फौजी ढंग से उसे अपना हाथ उठाये रखना चा
और बैठे-बैठे मैं भी रिपोर्ट नहीं ले सकता। वहां उपस्थित सभी व्यक्ति
को भी खड़ा होना और अभिवादन करना चाहिए। इस प्रकार वे टुकड़ी
पूरे समुदाय के काम के प्रति अपना सम्मान प्रकट कर रहे हैं।

और बहुत-सी ऐसी बातें हैं, जो फ़ौजी जीवन मे प्रयुक्त की जा सकती
हैं और समुदाय के दैनिक कार्यों तथा आन्दोलन मे लागू की जा सकती
है। उदाहरणार्थ, आम सभाओं के उद्घाटन के लिए बिगुल की
शानदार परम्परा थी। यह विशेषाधिकार केवल ड्यूटी पर तैनात कमांडर
को प्राप्त था। आश्चर्यजनक बात यह थी कि इस परम्परा को इतना अधिक
महत्व प्राप्त हो गया कि यदि कोई बड़ा व्यक्ति भी कम्यून मे आया था,
यदि स्वयं जन-कमिसार भी पधारते थे, तो भी ड्यूटी पर तैनात
कि अपना और किसी को आम [illegible]
ा। अभी को [illegible]

पहले मार्च के समय लोग इच्छानुसार बैठ सकते थे और बाते कर सकते थे, इधर-उधर आ-जा सकते थे। परन्तु जब वादक दल तीसरे मार्च को बजाना समाप्त करनेवाला होता, तो मुझे हाल मे पहुंच ही जाना चाहिए। मैं महसूस करता था कि यह मेरा कर्त्तव्य है: यदि मैं नही पहुचता, तो अनुशासन भग करने का मैं दोषी हो जाता। फिर यह आवाज गूज जाती— "सावधान! झण्डा लाया जाये!" मैं झण्डा नही देख पाता, परन्तु मुझे पक्का विश्वास रहता कि उसे पास ही कही रखा गया होगा और एक बार जब आदेश दे दिया गया है, तो इसे अन्दर लाया जायेगा। जब कमरे मे झण्डा लाया जाता, तो सभी खड़े हो जाते और वादक दल विशेष ध्वज अभिवादन राग बजाता। ज्योंही ध्वज-वाहक मच पर अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेते, तो यह समझा जाता कि सभा का उद्घाटन हो गया है और इसके बाद उस दिन ड्यूटी पर तैनात कमाडर अन्दर आता और कहता. "सभा का उद्घाटन हो गया है।" और दस साल तक एक भी सभा का उद्घाटन अन्य किसी ढग से नही हुआ।

इस परम्परा से समुदाय सुशोभित होता है, ऐसा ढाचा निर्मित होता है, जिसके अन्तर्गत जीवन आकर्षक हो सकता है और ऐसा होने से इस ओर ध्यान आकृष्ट होता है। इस परम्परा का शानदार अन्तर्य लाल झण्डा है।

इसी परम्परा के अनुसार आम सभा सर्वोत्कृष्ट और योग्यतम कम्युनार्डों में से ध्वज-वाहकों और उनके अनुगामियो का "उनके कम्यून के जीवन-काल के अन्त तक" अर्थात् कम्यून मे उनके रहते समय तक चुनाव करती थी। ध्वज-वाहकों को सजा नही दी जा सकती थी, अपने लिए उनका एक कमरा था, एक विशेष सर्वोत्कृष्ट पोशाक थी और जब वे झण्डे की निगरानी करते थे, तो उस समय उन्हें उनके प्रचलित नाम से सम्बोधित नही किया जा सकता था।

झण्डे के प्रति सम्मान बहुत बडा शैक्षिक साधन है। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून मे निम्नांकित ढंग से इसे प्रदर्शित किया जाता था: जिस कमरे में झण्डा रखा जाता था, यदि फिर से उसकी रगाई की आवश्यकता होती और झण्डे को वहा से अन्यत्र हटाना पडता, तो इसका एकमात्र तरीका यही था कि सभी विद्यार्थी पंक्तिबद्ध खड़े कर दिये जाते थे, बैंड बजता रहता था और इस प्रकार धूमधाम से दूसरे कमरे मे झडे को हटाया जाता था।

हमने प्रायः पूरे उक्रइना, वोल्गा प्रदेश, काकेशिया और क्रीमिया की यात्रा की और एक क्षण के लिए भी लाल झण्डे को बिना निगरानी के नहीं छोड़ा गया। जब मेरे शिक्षक साथियों ने इस सम्बन्ध में सुना, तो उन्होंने कहा: "आप क्या कर रहे हैं? लड़कों को रात में सोना है। आप उनके स्वास्थ्य के लिए ये यात्राएं कर रहे हैं और फिर भी आप उन्हें रात भर झण्डे की निगरानी के लिए खड़ा रखते हैं।"

हमारे विचार भिन्न थे। मैं इसे नहीं समझ सकता था कि प्रयाण के समय झण्डे को बिना निगरानी के कैसे छोड़ा जा सकता है।

कम्यून के प्रवेश-द्वार पर अच्छी राइफल लिये एक संतरी सदा खड़ा रहता था। मुझे इसका उल्लेख करने में भी डर लगता है। निस्सन्देह उसके पास कारतूस नहीं होते थे, परन्तु उसे व्यापक अधिकार प्राप्त थे। अक्सर तेरह या चौदह वर्ष का लड़का संतरी की ड्यूटी पर रहता था। वे बारी-बारी से यह कार्य करते थे। उनका काम बाहर से आनेवाले अपरिचित व्यक्ति को रोककर उसका पहचानपत्र देखना, उसके आने का उद्देश्य पता लगाना, जिससे वह मिलना चाहता है, इसे पूछना था और राइफल सामने करके उसे रोक देने का भी उन्हें अधिकार था। रात में दरवाजा बन्द नहीं किया जाता था और संतरी को रखवाली करनी पड़ती थी। कभी-कभी वह भयभीत हो जाता था, परन्तु किसी प्रकार वह दो घंटे की अपनी ड्यूटी पूरी करता था। एक बार उक्रइनी शिक्षा की जन-कमिसारियत की एक पेडोलाजिस्ट महिला असाधारण समिति (चेका) के एक कार्यकर्ता के साथ कम्यून में आई। उनमें कौतूहलपूर्ण बातचीत हुई "क्या आपका अभिप्राय है कि वह बस सिर्फ खड़ा रहे?" उस महिला ने पूछा। "हां, यही उसका काम है।" "वह ऊब जाता होगा। आपको चाहिए कि उसे किताब पढ़ने की इजाजत दे दें।" इसके उत्तर में उसने कहा: "एक संतरी ड्यूटी पर किताब कैसे पढ़ सकता है?" "किन्तु समय का सदुपयोग तो अवश्य ही होना चाहिए। एक व्यक्ति को अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए।" दो विभिन्न विचारों के व्यक्ति उस महिला को इस बात पर आश्चर्य [illegible] कुछ नहीं कर रहा था और असाधारण समिति के कार्यकर्ता [illegible] पर कि संतरी को ड्यूटी पर पढ़ना चाहिए। उन्हें विस्मय आश्चर्य हुआ।

एक दूसरा नियम यह था, वस्तुतः वह भी परम्परा थी। रेलिंग को पकड़े हुए सीढियों से उतरने की इजाजत नही थी। मैं जानता था कि कैसे यह परम्परा शुरू हुई। उस अच्छी इमारत मे सीढिया अच्छी थी और सीढियों से चढते-उतरते समय जहा लोग रेलिंग को पकड लेते थे, वहा सीढी घिस जाती थी और इस कारण किशोरों ने सीढियो को पूर्ववत बनाये रखने के उद्देश्य से यह नियम बनाया। परन्तु, बाद मे उन्होंने इस कारण को भुला दिया। नये विद्यार्थी पूछते: "हमे सीढियो के रेलिंग को क्यो नही पकडना चाहिए?" इसका उत्तर यह था: "क्योंकि तुम्हें रेलिंग को पकड़कर नहीं, बल्कि कमर के ज़ोर से सीढियो से चढना-उतरना चाहिए।" मूलतः कमर को मजबूत बनाना इसका उद्देश्य नही था अभिप्राय सीढियो को पूर्ववत बनाये रखना ही था।

फौजी चुस्ती और सुव्यवस्था होनी ही चाहिए, परन्तु किसी भी स्थिति मे पूर्णतः सैनिकों की भांति सामान्य शस्त्राभ्यास नही करना चाहिए। बन्दूक चलाना और घुड़सवारी तथा सैन्य विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती है। और इसका अर्थ है कार्यकुशलता और सौंदर्य-बोध शिक्षा, जो किशोरो के एक समुदाय के लिए नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार का प्रशिक्षण विशेष रूप से बहुत उपयोगी है, क्योंकि इससे समुदाय की शक्ति कायम रहती है, मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि इससे बालको को अस्पष्ट, अनुपयुक्त चेष्टा, शिथिल एवं निरुद्देश्य काम न करने की शिक्षा प्राप्त होती है। इस प्रसंग में वर्दी का प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस बारे मे आप मुझसे बेहतर जानते हैं और इस सम्बन्ध मे शिक्षा की जन-कमिसारियत और पार्टी का सुनिश्चित दृष्टिकोण है, इसलिए मैं विस्तार से इस बारे मे कुछ नही कहूंगा। परन्तु खूबसूरत और आरामदेह होने पर ही वर्दी अच्छी मालूम पडती है। अन्ततः न्यूनाधिक आरामदेह और खूबसूरत वर्दी पहनने की प्रथा लागू करने के पहले मुझे अनेक प्रकार की बहुत-सी कठिनाइयो और बाधाओं का सामना करना पडा।

परन्तु जहा तक वर्दियो का सम्बन्ध है, मैं इस प्रश्न पर आगे कुछ और भी करने को तैयार हूं। मेरे विचार से बच्चो के कपडे इतने खूबसूरत और आकर्षक होने चाहिए कि उनसे आनन्दपूरित आश्चर्य की भावना पैदा हो। बीते युगों मे फौजें आकर्षक वर्दिया पहनती थी। यह विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों की शान थी। हमारे समाज मे खूबसूरत कपड़े पहनने के

विशेषाधिकार से युक्त वर्ग बच्चों का होना चाहिए। मैं किसी भी अन्य चीज़ पर नहीं अटकूंगा, मैं प्रत्येक स्कूल को बहुत ही आकर्षक वर्दी देना चाहूंगा। यह समुदाय को संयुक्त रखने के लिए एक बहुत अच्छे "सरेस" का काम करती है। न्यूनाधिक मैं इसी दिशा की ओर अग्रसर हुआ, परन्तु दुर्भाग्य से मेरे पर कतर दिये गये थे। मैंने जो वर्दी निर्धारित की थी, उसमें ये चीज़ें शामिल थीं—सुनहरे और रुपहले मोनोग्राम, बेलबूटोंवाली मखमल की छोटी टोपी, सफ़ेद कपड़े की कलफ़ लगाई हुई कालर, इत्यादि। और जिस समुदाय को आप अच्छी वर्दी पहनाते हैं, उसकी व्यवस्था करना आधा आसान है।

दूसरा व्याख्यान

अनुशासन, क़ायदा, सजा और पुरस्कार

आज मैं अनुशासन, कायदा, सज़ा और पुरस्कार के विषय में अपने विचार आपके सम्मुख प्रस्तुत करूंगा। एक बार फिर मैं आपको इसका स्मरण दिला देना चाहता हूं कि मेरी प्रस्थापनाए पूर्णतया मेरे निजी अनुभव पर आधारित है, जिसे मैंने वस्तुतः असाधारण परिस्थितियों मे, अधिकाशतः बाल-अपराधियों की कोलोनियों और कम्यूनों मे प्राप्त किया। परन्तु मुझे इसका यकीन है कि अलग-अलग निष्कर्ष नहीं, बल्कि मेरे निष्कर्षों की आम प्रणाली सामान्य बाल-समुदाय मे लागू की जा सकती है। इसका तर्क यह है।

किशोर-अपराधियों की एक संस्था के प्रधान की हैसियत से अपने १६ वर्षों के काम मे अन्तिम दस साल अथवा बारह वर्ष के काम को मैं सामान्य कार्य के रूप मे मानता हू। यह मेरा पक्का विश्वास है कि लड़के-लडकिया अपराधी अथवा "असामान्य" "अपराधी" या "असामान्य" शिक्षाशास्त्र का इस्तेमाल करने के कारण बन जाते हैं। सामान्य शिक्षाशास्त्र, प्रभावकारी और उद्देश्यपरक शिक्षाशास्त्र लागू करने से ऐसा बाल-समुदाय एक पूर्णतः सामान्य समुदाय मे बहुत शीघ्र परिवर्तित हो जाता है। पैदाइशी अपराधी अथवा सहजतः बुरी आदतोवाले बच्चों के होने जैसी कोई बात नहीं है; व्यक्तिगत रूप से अनुभव द्वारा मुझे शत प्रतिशत विश्वास हो गया है कि तथ्य यही है। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून मे अपने कार्य-काल के अन्तिम वर्षों मे मैंने बहुत जोर देकर इस विचार पर ही आपत्ति प्रकट की थी कि मेरा समुदाय सामान्य बच्चों का नहीं है, कि वह बाल-अपचारियों का समुदाय है, और इसलिए आज आपके सम्मुख जिन निष्कर्षों और तरीकों को प्रस्तुत करने का मेरा इरादा है, वे सामान्य बच्चो के लिए भी उपयुक्त हैं।

अनुशासन क्या है? व्यवहारतः कुछ शिक्षक और शिक्षाशास्त्रीय चिन्तक शिक्षा के एक साधन के रूप मे अनुशासन को समझने के आदी

हैं। मेरा विचार यह है कि अनुशासन शिक्षा का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा का नतीजा है, और शिक्षा के साधन के रूप में इसे क़ायदे से भिन्न होना ही चाहिए। क़ायदा शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए साधनों और तरीक़ों की एक सुनिश्चित व्यवस्था है। और इस शिक्षा का फल अनुशासन है।

यह दावा करते हुए मैं सुझाव प्रस्तुत करता हूं कि क्रान्ति के पहले–क्रान्तिपूर्व स्कूलों और क्रान्तिपूर्व समाज में–परम्परागत रूप से अनुशासन का जो अर्थ लगाया जाता था, उसकी अपेक्षा अब इसका अधिक व्यापक अर्थ लगाना चाहिए। उस समय यह प्रभुत्व का एक ढंग था, व्यक्तित्व, व्यक्तिगत संकल्प और व्यक्तिगत आकांक्षा को कुचलने का ढंग था और यहां तक कि कुछ हद तक प्रभुत्व क़ायम रखने का तरीक़ा, सत्ताधारियों के सम्मुख गिड़गिड़ाते हुए व्यक्ति को झुकाने का तरीक़ा था। पुराने शासन-काल में रहनेवाले तथा पढ़ने के लिए स्कूल जानेवाले हम सभी व्यक्ति अनुशासन का यही अर्थ लगाते थे और सभी जानते हैं कि हम तथा शिक्षक भी अनुशासन का अभिप्राय यही समझते थे: अनुशासन एक अनिवार्य *नियमसंग्रह था, जो सुविधा, व्यवस्था और भलाई जैसी बातों के लिए* आवश्यक था। यह केवल ऊपरी भलाई थी, जो नैतिक नहीं, बल्कि एक प्रकार का बन्धन थी।

हमारे समाज में अनुशासन की धारणा नैतिक और राजनीतिक दोनों ही है। और फिर भी मैं देखता हूं कि कुछ शिक्षक इस समय भी अनुशासन के सम्बन्ध में पुराने विचार का परित्याग नहीं कर पाते। पुराने समय में एक अनुशासनशून्य व्यक्ति एक आचारहीन व्यक्ति, सामाजिक आचार-संहिता के विरुद्ध आचरण करनेवाले एक व्यक्ति के रूप में नहीं समझा जाता था। आपको याद होगा कि पुराने स्कूल में हम और हमारे साथी दोनों ही अनुशासन की इस अवज्ञा को वीरता के समान, साहसिक कार्य अथवा किसी भी रूप में एक प्रकार का विनोदपूर्ण, मनोरंजक खेल समझते थे। केवल विद्यार्थी नहीं, बल्कि स्वयं शिक्षक भी सभी प्रकार की शरारत को उल्लास अथवा हास्यप्रियता या शायद क्रान्तिकारी भावना की अभिव्यक्ति मानते थे।

हमारे समाज में अनुशासन की अवहेलना का अर्थ यह है कि अनुशासनशून्य व्यक्ति समाज के विरुद्ध कार्य कर रहा है और हमें

है। मेरा विचार यह है कि अनुशासन शिक्षा का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा का नतीजा है और शिक्षा के साधन के रूप में इसे बरतने से भिन्न ढंग ही चाहिए। कारगर शिक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए साधनों और तरीकों की एक सुनिश्चित व्यवस्था है। और इस शिक्षा का फल अनुशासन है।

यह दावा करते हुए मैं सुझाव प्रस्तुत करता हूं कि क्रांति के पूर्व-क्रान्तिपूर्व स्कूल और क्रान्तिपूर्व समाज में—तत्कालीन रूप में अनुशासन का जो अर्थ लगाया जाता था, उसकी अपेक्षा अब इसका बिल्कुल अलग अर्थ लगाना चाहिए। उस समय यह प्रभुत्व का एक ढंग था, व्यक्तित्व, व्यक्तिगत सत्ता और व्यक्तिगत आकांक्षा को कुचलने का ढंग था और यहां तक कि कुछ हद तक प्रभुत्व कायम रखने का तरीका, सत्ताधारियों के सम्मुख गिड़गिड़ाते हुए व्यक्ति को झुकाने का तरीका था। पुराने जमाने में रहनेवाले तथा पढ़ने के लिए स्कूल जानेवाले हम सभी व्यक्ति अनुशासन का यही अर्थ लगाते थे और सभी जानते हैं कि हम तथा शिक्षक भी अनुशासन का अभिप्राय यही समझते थे: अनुशासन एक अनिवार्य नियमपालन था, जो सुविधा, व्यवस्था और भलाई जैसी बातों के लिए आवश्यक था। यह केवल ऊपरी भलाई थी, जो नैतिक नहीं, बल्कि एक प्रकार का बन्धन थी।

हमारे समाज में अनुशासन की धारणा नैतिक और राजनीतिक दोनों ही है। और फिर भी मैं देखता हूं कि कुछ शिक्षक इस समय भी अनुशासन के सम्बन्ध में पुराने विचार का परित्याग नहीं कर पाते। पुराने समय में एक अनुशासनशून्य व्यक्ति एक आचारहीन व्यक्ति, सामाजिक आचार-संहिता के विरुद्ध आचरण करनेवाले एक व्यक्ति के रूप में नहीं समझा जाता था। आपको याद होगा कि पुराने स्कूल में हम और हमारे साथी दोनों ही अनुशासन की इस अवज्ञा को वीरता के समान, साहसिक कार्य अथवा किसी भी रूप में एक प्रकार का विनोदपूर्ण, मनोरंजक खेल समझते थे। केवल विद्यार्थी नहीं, बल्कि खुद शिक्षक भी सभी प्रकार की शरारत को उल्लास अथवा हास्यप्रियता या शायद क्रान्तिकारी भावना की अभिव्यक्ति मानते थे।

हमारे समाज में अनुशासन की अवहेलना का अर्थ यह है कि अनुशासनशून्य व्यक्ति समाज के विरुद्ध कार्य कर रहा है और हमें

राजनीतिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से उसके व्यवहार के बारे मे धारणा बनानी चाहिए। प्रत्येक शिक्षक को इसी दृष्टिकोण से अनुशासन के प्रश्न पर गौर करना चाहिए, बशर्ते कि अनुशासन को वस्तुत शिक्षा का नतीजा माना जाये।

प्रथमतः, जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं, हमारा अनुशासन सदा सचेत अनुशासन होना चाहिए। स्पष्टत इस सदी के तीसरे दशक मे जब स्वतंत्र शिक्षा का सिद्धान्त अथवा यथार्थतः स्वतंत्र शिक्षा की प्रवृत्ति बहुत व्यापक रूप से लोकप्रिय थी, उसी समय सचेत अनुशासन-सम्बन्धी इस सूत्र की विस्तृत व्याख्या की जा रही थी कि अनुशासन की भावना चेतना से पैदा होनी चाहिए। मैने अपने प्रारम्भिक प्रयोग मे ही अनुभव कर लिया कि इस सूत्र का केवल अनर्थकारी परिणाम होगा। एक व्यक्ति को यह समझाना कि उसे आज्ञा माननी चाहिए और यह आशा करना कि यह अनुशासन का पालन करने के लिए काफी है, ५० या ६० प्रतिशत खतरा उठाने के समान है।

अनुशासन केवल चेतना पर आधारित नही हो सकता, क्योकि यह किन्ही विशेष उपायो का नही, बल्कि सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का परिणाम है। यह सोचना गलत है कि अनुशासन पैदा करने की ओर लक्षित कुछ विशेष उपायों से अनुशासन की भावना पैदा की जा सकती है। अनुशासन शैक्षिक प्रयासो का कुल निष्कर्ष है, जिनमे शिक्षण प्रक्रिया, राजनीतिक शिक्षा की प्रक्रिया, चरित्र-निर्माण की प्रक्रिया, समुदाय मे, मैत्री और विश्वास की प्रक्रिया मे झगड़ो का सामना करने तथा उन्हे सुलझाने की प्रक्रिया और समस्त शैक्षिक प्रक्रिया सम्मिलित हैं, जिनमें शारीरिक शिक्षा, शारीरिक विकास आदि भी शामिल हैं।

केवल उपदेश पर अनुशासन कायम करने की आशा करने का अर्थ है बहुत ही अल्प फल का विश्वास रखना।

जब भी उपदेश देने की नौबत आई, तो अनुशासन का सबसे कड़ा विरोध किया गया (मेरे कहने का अर्थ है कुछ विद्यार्थियो द्वारा)। और मौखिक रूप से अनुशासन की आवश्यकता के बारे मे उन्हें विश्वास दिलाने के किसी भी प्रयास का इसी प्रकार उग्र विरोध होता था।

और इसलिए इस प्रकार अनुशासन की भावना पैदा करने की कोशिश से केवल अन्तहीन विवाद की स्थिति पैदा ही सकती है। परन्तु इसके

बावजूद मैं दृढतापूर्वक इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि क्रान्तिपूर्व अनुशासन से भिन्न हमारे अनुशासन को नैतिक और राजनीतिक धारणा के रूप में चेतना पर आधारित होना चाहिए, अर्थात् इसके साथ ही इसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए कि अनुशासन क्या है और किसलिए इसकी आवश्यकता है।

इस प्रकार का चेतनायुक्त अनुशासन कैसे कायम किया जा सकता है?

हमारे स्कूल मे कोई नैतिकता के सिद्धान्त की पढ़ाई नही है, इस प्रकार का कोई विषय नही है और न तो इस सिद्धान्त की शिक्षा देने के लिए कोई शिक्षक नियुक्त है और न कोई निश्चित कार्यक्रम के अनुसार इसे बच्चों को बतलाने के लिए बाध्य है।

पुराने स्कूल मे धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। यह एक ऐसा विषय था, जिसका खण्डन न केवल विद्यार्थी, बल्कि अक्सर स्वयं पादरी भी किया करते थे। पादरी इसका बहुत कम सम्मान करते थे, परन्तु इसके साथ ही इससे कई नैतिक प्रश्न प्रस्तुत हो जाते थे, जिनके सम्बन्ध में पढ़ाई के समय किसी न किसी रूप मे चर्चा हो जाती थी। इस सिद्धान्त के अच्छे परिणाम हुए या नही, यह एक अलग प्रश्न है, परन्तु कुछ हद तक नैतिकता की समस्याएं विद्यार्थियों के सम्मुख सैद्धान्तिक रूप मे प्रस्तुत की जाती थी, अर्थात् उनसे कहा जाता था: चोरी मत करो, किसी की हत्या मत करो, किसी का अपमान न करो, अपने बड़ो का सम्मान करो, मां-बाप का आदर करो, आदि। ये नैतिक धारणाएं, ईसाई नैतिकता की धारणाएं, जिनका अभिप्राय विश्वास और धर्म की भावना मन मे भरना था, सैद्धान्तिक रूप मे अभिव्यक्त हुई और नैतिक नियम – चाहे वे केवल पुराने धार्मिक रूप मे ही क्यों न हो – विद्यार्थियों को समझाये जाते थे।

मैं अपने प्रयोग से इस नतीजे पर पहुंचा कि हमे भी नैतिकता के सिद्धान्त की शिक्षा विद्यार्थियों को देनी चाहिए। हमारे आधुनिक स्कूलों मे इस प्रकार के किसी विषय की शिक्षा नही दी जाती। हमारे पास शिक्षकों का समुदाय है, कोम्सोमोल संगठक हैं और युवा पायनियर नेता हैं, जो यदि चाहें, तो विद्यार्थियों के सम्मुख नैतिकता का उपयुक्त सिद्धान्त और सदाचार का सिद्धान्त प्रस्तुत कर सकते हैं।

मुझे पूरा यक़ीन है कि अपने सोवियत स्कूल के भावी विकास मे हम अनिवार्यत: नैतिकता के सिद्धान्त की शिक्षा देने की विधि अपनायेंगे। मैं

अंगीकार करेगा और प्रत्येक विद्यार्थी अलग-अलग हरेक उदाहरण में अपने लिए कुछ अनिवार्य नैतिक नियमों और सूत्रों को खुद निकालेगा।

मुझे स्मरण है कि कैसे कुछ मामलों में इस नैतिक विषय पर एक ही भाषण के बाद मेरे समुदाय ने शीघ्र ही खुशी से नया जीवन अपना लिया था। और इस प्रकार की व्याख्यान-माला अथवा नियमित व्याख्यानों का समुदाय के नैतिक दर्शन पर यथार्थ अनुकूल प्रभाव पड़ा।

यहां आधार के रूप में कौन-से खास सिद्धान्त उपयुक्त होंगे?

मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सामान्य नैतिक सिद्धान्तों की निम्नांकित सूची उपयोगी सिद्ध होगी। सर्वप्रथम, अपने राजनैतिक और नैतिक कल्याण के रूप में समुदाय से अनुशासन की अपेक्षा करनी चाहिए।

इस पर भरोसा करना व्यर्थ है कि बाहरी उपायों, तरीकों अथवा यदा-कदा दिये गये भाषणों के फलस्वरूप स्वेच्छा से अनुशासन पैदा होगा। समुदाय पर अनुशासन सुस्पष्ट, सुनिश्चित कार्यभार के रूप में सुनिर्दिष्ट उद्देश्य के साथ लागू करना पड़ता है।

निम्नांकित निरूपणों से इन तर्कों और, अनुशासन को लागू करने की आवश्यकता पैदा होती है। प्रथमतः, प्रत्येक विद्यार्थी के मन में यह विश्वास पैदा हो जाना चाहिए कि अनुशासन सम्पूर्ण समुदाय को सर्वोत्तम ढंग से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ बनाने का तरीका है। बड़ी स्पष्टता और उत्कटता से (मैं अनुशासन पर उत्साहशून्य प्रवचन के विरुद्ध हूं) प्रस्तुत किया जानेवाला वह तर्क, जो इस पर ज़ोर देता है कि बिना अनुशासन के एक समुदाय अपना लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ न होगा, कार्यपरिणति के सुनिश्चित सिद्धान्त, अर्थात् नैतिकता के सिद्धान्त की आधारशिला में रखी गई पहली ईंट सिद्ध होगा।

दूसरे, हमारे अनुशासन का विवेक इस पर बल देता है कि अनुशासन से अलग-अलग प्रत्येक व्यक्ति अधिक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थिति में हो जाता है। यह विरोधाभासी दावा कि अनुशासन ही स्वतंत्रता है, किशोर समुदाय बहुत आसानी से स्वीकार कर लेता है। उनके लिए इसकी सत्यता हर कदम पर प्रमाणित हो जाती है और अनुशासन के लिए अपने सक्रिय प्रचार में वे स्वयं कहते हैं कि यही स्वतंत्रता है।

समुदाय में अनुशासन का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति के लिए पूर्ण सुरक्षा, अपने अधिकार, अपनी योग्यता और अपने भविष्य में पूरा विश्वास।

जब मैं उन्हें अपनी संस्था में ले आया, तो पहले उनसे नहाने को कहा, उनके बाल कटवा दिये, इत्यादि। और दूसरे ही दिन वे झगड़ा कर बैठे। यह तथ्य प्रकट हुआ कि उन्हें कई पुरानी बातों का एक-दूसरे से बदला लेना था। किसी ने किसी की कोई चीज़ चुरा ली थी, किसी ने किसी को अपमानित किया था, किसी ने अपना वादा तोड़ा था और तत्काल यह बात मुझे साफ़-साफ़ मालूम हो गई कि पचास लड़कों के इस गिरोह में अपने अगुआ थे, फ़ायदा उठानेवाले थे, इस पर अपनी हुकूमत जमानेवाले थे और इसके शोषित तथा उत्पीड़ित सदस्य थे। केवल मैंने ही नहीं, बल्कि मेरे कम्यूनार्डों ने भी इसे समझ लिया और हमने अनुभव किया कि एक पृथक् छोटे समुदाय के निर्माण की आशा से इन पचास लड़कों को एक साथ रखना भूल थी।

दूसरी ही शाम हमने अधिक शरारती लड़कों को सबसे तगड़ी टुकड़ियों में शामिल कर इस गिरोह के सदस्यों को अलग-अलग कर दिया।

एक सप्ताह तक हमने उन्हें मिल जाने पर पुरानी दुश्मनी का बदला लेने की कोशिश करते हुए देखा। समुदाय के दबाव से इसका अन्त हो गया, परन्तु कई लड़के कम्यून छोड़कर भाग गए, क्योंकि वे इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि उन्हें अपनी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली शत्रु के समक्ष झुकने को विवश कर दिया गया था।

हमने कोम्सोमोल की बैठक में इस प्रश्न पर अच्छी तरह ग़ौर किया और अनुशासनशून्य जीवन की उन अनेक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला, जिनमें अनुशासन के अभाव से व्यक्ति को कष्ट झेलना पड़ता था और तब अवसर का सदुपयोग करते हुए हमने इस नैतिक सिद्धान्त को समझाने के लिए, लड़कों को यह बताने के लिए कि अनुशासन का अर्थ व्यक्ति की स्वतंत्रता है, आन्दोलन शुरू किया और बड़े उत्साहपूर्ण, विश्वासप्रद और भावप्रवण ढंग से इस सिद्धान्त के समर्थन में बोलनेवाले वे ही नये लड़के थे, जिन्हें ख़ार्कोव रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों से उतारकर मैं अपने कम्यून में ले आया था। उन्होंने बताया कि जब अनुशासन नहीं था, तो जी
कितना दूभर था और कैसे नया जीवन-क्रम व्यतीत करने पर उस
पखवारे के अपने अनुभव से उन्होंने यह समझ लिया कि अनुशासन क्या है

उनको यह समझदारी इस कारण प्राप्त हुई कि हमने आन्दोलन शु
कर दिया था और उन्हें भी बहस में भाग लेने के लिए आकृष्ट कि

था। यदि हमने उनसे इस बारे में बातचीत न की होती तो वे संभवत यह तो अनुभव कर लेते कि बिना अनुशासन के जीवन कष्टदायक है, परन्तु उन्हें यह समझदारी प्राप्त नहीं हुई होती।

मैंने इसी प्रकार के बच्चों में से, जिन्होंने परित्यक्त और भटके हुए बालक-बालिकाओं के समाज में व्याप्त अराजकता के कारण कष्ट उठाये थे, अनुशासन के कट्टर समर्थकों, इसके सर्वाधिक उत्साही पोषकों और सबसे बढ़कर समर्पण की भावना से पूरित प्रचारकों को विकसित किया। और यदि मुझे उन सभी लड़कों को याद करना हो, जो शिक्षक समुदाय में मेरे दाहिने हाथ थे, तो आप देखेंगे कि वे वही बच्चे थे जिन्होंने बचपन में एक अनुशासनहीन समाज की अराजकता में सर्वाधिक कष्ट उठाये थे।

मेरे नैतिक सिद्धान्त की तीसरी बात, जिसे समुदाय के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए, जिसे समुदाय को सदा स्मरण रखना चाहिए और जिससे अनुशासन के हेतु संघर्ष में उसका पथ-प्रदर्शन होना चाहिए, यह है व्यष्टि के हितों की अपेक्षा समष्टि के हित महत्तर है। यह प्रकट होगा कि हम सोवियत नागरिकों के लिए यह पूर्णतया अववाधनीय प्रश्न है। फिर भी व्यावहारिक रूप में अनेक बुद्धिमान, शिक्षित, सुसंस्कृत और यहां तक कि सामाजिक दृष्टि से बहुतेरे सुसंस्कृत लोग भी इस अच्छी तरह नहीं समझ पाते।

हम दावे के साथ कहते हैं कि ऐसी अवस्थाओं में जहां व्यक्ति समुदाय का विरोधी है, वहां व्यष्टि के हितों की अपेक्षा समष्टि के हित महत्तर हैं।

परन्तु किसी मामले में अक्सर इससे भिन्न निर्णय हो जाता है।

मुझे अपने जीवन-क्रम में एक बार इसी प्रकार के जटिल मसले का सामना करना पड़ा। द्झेर्जीन्स्की कम्यून में मेरे कार्य-काल के अन्तिम वर्षों में अनुशिक्षक नहीं थे, वहां केवल स्कूल में पढ़ानेवाले शिक्षक थे, परन्तु विशेष अनुशिक्षक नहीं थे और इस कारण हमारे सीनियर विद्यार्थी, मुख्यत कोम्सोमोल के सदस्य शैक्षिक काम करते थे। जिस ढांचे पर हमारे समुदाय का गठन हुआ था, उसमें यह संभव था। विद्यार्थी टुकड़ियों में विभाजित थे और हर टुकड़ी का अपना कमांडर हुआ करता था। दिन में समुदाय जो कुछ भी करता था, उसके लिए कमांडरों में से एक जवाबदेह था कमरों की सफाई करना, चीजों को सुव्यवस्थित रखना, खाना परोसना और भोजन करना, बाहर से आनेवालों से भेंट करना, स्कूल

जाना और फैक्टरी में काम करना। उसे ड्यूटी पर तैनात कमांडर कहा जाता था, वह हाथ पर पट्टी बाधता था और उसे बहुत अधिकार प्राप्त था, जो उसे अकेले ही दिन भर के कार्य-संचालन के लिए आवश्यक था। बिना किसी आपत्ति के उसके आदेशों का पालन करना पड़ता था और केवल दिन के समाप्त होने पर, अपनी ड्यूटी कर लेने के बाद, उसने जितने आदेश जारी किये थे, उनका उसे विवरण देना पड़ता था। किसी को उससे बैठे-बैठे बातें करने का अधिकार नही था, उसके सामने खड़ा रहना पड़ता था और किसी को उससे किसी भी रूप में आपत्ति करने का कोई अधिकार नही था। नियमतः ड्यूटी पर तैनात कमांडर एक सुयोग्य और सम्मानित कामरेड हुआ करता था और किसी ने भी कभी उसके आदेशों का उल्लंघन नहीं किया।

एक रोज ड्यूटी पर तैनात कमांडर एक लड़का था, जिसे हम संकेत के लिए इवानोव कहेंगे। वह कोम्सोमोल का सदस्य, हमारा एक होनहार सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता, नाटक मण्डली का एक सदस्य और एक अच्छा औद्योगिक कामगार था। उसे सबका और मेरा भी सम्मान प्राप्त था। मैं खुद सिम्फेरोपोल से पकड़कर उसे उठा लाया था – वह बहुत समय से एक पथभ्रष्ट बच्चा था और कानून तोड़ने तथा आवारागर्दी की अनेक हरकतें कर चुका था।

शाम को मुझे अपनी रिपोर्ट देते समय उसने कहा कि किसी ने मेस्याक नामक लड़के के हाल ही में खरीदे रेडियोमेट को चुरा लिया है। कम्यून में यह पहला रेडियोमेट था। मेस्याक ने इसे ७० रूबल में खरीदा था। उसने अपने वेतन से रूबल बचाकर रेडियोमेट के लिए ६ महीने में यह रकम जमा की थी। वह अपनी चारपाई के पास ही रेडियोमेट को रखता था और अब वह वहां से गायब हो गया है। चूंकि कम्यून में ताला लगाने की इजाजत नहीं थी, इसलिए शयनागार सदा खुला रहता था, परन्तु दिन में कमरे में जाने की मनाही थी और किसी भी परिस्थिति में कोई भी कम्यूनार्ड अन्दर नहीं गया होगा, क्योंकि वे वहां से दूर काम पर थे।

मैंने आम सभा आयोजित करने का सुझाव दिया, जिसमें इवानोव से भाषण करने को कहा गया। उसने बहुत होशियारी से भाषण दिया, यह मत प्रकट की कि हो सकता है कि कोई अपने औजार लेने कमरे में आ

मैंने अन्य मामलों का स्मरण दिलाते हुए, जब उपस्थित निवासियों में से फलां-फलां को प्रायः निष्कासित कर दिया गया था, इस क़दम पर अपनी आपत्ति प्रकट की, परन्तु मुझे कोई सफलता नहीं मिली।

तब मैंने आन्तरिक मामलों की जन-कमिसारियत (चेका) को फोन किया और उन्हें बताया कि ग्राम सभा ने एक लड़के को लात मारकर निकाल बाहर करने का प्रस्ताव मंज़ूर किया है। जन-कमिसारियत ने उत्तर दिया कि वे इस निर्णय का अनुमोदन नहीं करेंगे और यह कि सभा द्वारा इसे रद्द कराना मेरा काम है।

कम्यूनार्डों पर मेरा बड़ा प्रभाव था और मैं जो भी चाहता था, कभी-कभी बहुत कठिन बातें भी उनसे करा लेता था। परन्तु इस मामले में मैं निरुपाय हो गया था—इस कम्यून के अस्तित्व में आने के बाद उन्होंने पहली बार मुझे बोलने की अनुमति नहीं दी।

और स्थिति यही थी। फिर भी मैंने उन्हें बताया कि आन्तरिक मामलों की जन-कमिसारियत की स्वीकृति पाने के पहले ही उन्हें इवानोव को निकाल बाहर करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने इस पर सहमति प्रकट की कि मेरा कहना ठीक है और दूसरे दिन सभा होने तक, जब कि जन-कमिसारियत के प्रतिनिधियों के सम्मुख वे अपने निर्णय को दुहराएं, इस बात को स्थगित कर दिया।

मेरे लिए परेशानी की बात पैदा हुई, निर्णय को रद्द कराने में विफल होने के लिए मेरी आलोचना की गई। दूसरे दिन चेका के कई आदमी कम्यून में पहुंचे।

"आप लोग यहां किस उद्देश्य से आये हैं? इवानोव की तरफ़दारी करने के लिए?" लड़कों ने पूछा

"नहीं, यह देखने के लिए कि न्याय हो।"

और तब अनुशासन के प्रश्न पर चेका के प्रतिनिधियों और कम्यूनार्डों के बीच बहस शुरू हुई, वह बहस मेरे लिए इस समय भी इस बहुत ही महत्त्वपूर्ण समस्या की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए आधार का काम कर सकती है।

चेका के प्रतिनिधियों ने ग्राम सभा में जो कुछ कहा, वह इस प्रकार था: "तुम लोग अपने निर्णय से क्या सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हो? इवानोव तुम्हारा अग्रणी साथी है, तुम्हारे समुदाय का एक सक्रिय

सकते थे, क्योंकि हम जानते हैं कि हम उसे हटा सकते हैं। परन्तु यदि हम उसे रख लेते हैं और नहीं निकाल बाहर करते, तो उसकी भांति दूसरे को भी हम नहीं निकाल सकेंगे, हमारा समुदाय अपनी शक्ति खो बैठेगा और तब हम किसी को भी बिल्कुल नहीं संभाल पायेंगे। इवानोव की भांति यहां अन्य सत्तर लड़के और हैं और उनको निकाल बाहर करने से उन्हें सम्भालने में हमें सहायता प्राप्त होगी।"

चेका के प्रतिनिधियों ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि एक सदस्य को खो देने से समुदाय का नाम कलंकित होगा और यह कि इवानोव ग़लत रास्ते पर चला जायेगा। कम्यूनार्डों ने इसके जवाब में कहा: फलां कोलोनी को देखिए, वहां अनुशासन नहीं है और ध्यान दीजिए कि वे एक साल में अपने कितने सदस्यों को खो बैठते हैं। प्रति वर्ष पचास प्रतिशत लड़के भाग जाते हैं। और इसलिए यदि हम बहुत सख़्ती से अनुशासन लागू करते हैं, तो हम कम नुकसान उठायेंगे, हम इवानोव को खोने के लिए तैयार हैं, परन्तु यह भी तो है कि हम दूसरों को सुधार पायेंगे।

पूरी शाम बहस चलती रही। कम्यूनार्डों ने आख़िर में एतराज़ करना बन्द कर दिया और यहां तक कि चेका के प्रतिनिधियों के अच्छे भाषणों पर तालियां भी बजाईं। परन्तु जब मत प्रकट करने का समय आया और अध्यक्ष ने कहा—इवानोव के निष्कासन के पक्ष में कौन है, तो तत्काल सभी हाथ ऊपर उठ गए। फिर चेका के प्रतिनिधियों ने मंच पर जाकर भाषण दिए, पुनः उन्होंने समझाने की कोशिशें कीं, परन्तु मैं उनके चेहरे की भावनाओं से भांप गया था कि उन्हें यह ज्ञात हो गया है कि वे चाहे जो कुछ कहते, इवानोव के भाग्य का निर्णय हो चुका था। आधी रात तक प्रस्ताव पास हो गया: इवानोव को निष्कासित करने और कल कम्यूनार्ड जिस ढंग से उसे हटाना चाहते थे, उसी प्रकार निकाल बाहर करने का निर्णय हुआ: फाटक को खोलकर उसे सीढ़ियों के नीचे फेंक देना। बहरहाल हमने किसी प्रकार हिंसा का प्रयोग रोकने में सफलता प्राप्त कर ली और अनुरक्षक दल के साथ इवानोव को खार्कोव भेज दिया।

और इस प्रकार उन्होंने उसे निकाल बाहर किया। निस्सन्देह, बाद में हमने इसका ख़्याल रखा कि इवानोव दूसरी कोलोनी में भेज दिया जावे और अपने कम्यूनार्डों से इसे गोपनीय रखने के लिए सावधानी बरती। गोकि एक साल बाद उन्होंने इस बारे में पता लगा लिया और मुझसे पूछा

कि मैंने ग्राम सभा के निर्णय के विरुद्ध कैसे यह काम किया जिसने उसे निकाल बाहर किया था और इसके बावजूद मैंने अपनी ओर से हस्तक्षेप किया।

इस मामले को दृष्टि मे रखकर मैं सोचने लगा व्यष्टि के हितों की अपेक्षा समष्टि के हितो को किस हद तक ऊपर रखना चाहिए और अब यह सोचने की ओर मेरा रुझान है कि यदि यह नियम हो तो भी समुदाय के हितों को ही बिल्कुल अन्त तक प्रमुख हित समझना चाहिए – और तभी शिक्षा वास्तव मे व्यष्टि और समष्टि दोनो के लिए उपयोगी होगी।

इस विषय पर कहने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है। परन्तु इस प्रसंग में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि इसे भौतिक दृष्टि से नियम नहीं होना चाहिए, अर्थात्, निष्ठुरता का ढग इस प्रकार अपनाना चाहिए कि जब व्यष्टि के हितों पर समष्टि के हितो की विजय हो तो भी सम्बन्धित व्यक्ति को गंभीर और निराशाजनक स्थिति मे नहीं डालना चाहिए।

और अन्तिम, किन्तु नगण्य नहीं, चौथा प्रमेय यह है जिसे विशिष्ट सिद्धान्त के रूप में बच्चों को बताना चाहिए: अनुशासन समुदाय की शोभा है। अनुशासन का यह पहलू – इसकी शोभा और सुन्दरता – सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। जो कुछ मुझे जानकारी है, उसके अनुसार हमारे बाल-समुदायों में इसकी शिक्षा देने के बारे मे बहुत कम प्रयास किया जाता है। कभी-कभी हमारा अनुशासन, जैसा कि हमारे [illegible] कहते हैं, "उबाऊ", अरुचिकर होता है और अक्सर उसका अभिप्राय सताना, धकियाना और खीज पैदा करना जान पड़ता है। अनुशासन को सुखद, प्रेरक और प्रबोधक बनाने का प्रश्न सर्वथा शिक्षाशास्त्रीय प्रणाली की एक समस्या है।

अपने निजी अनुभव मे मैंने रुचिकर अनुशासन के निर्णायक तरीके की समझदारी बहुत जल्द प्राप्त नहीं की। निस्सन्देह, यहां अनुशासन को केवल बाहरी शोभा समझने का खतरा दूर करना होगा। इसके सारतत्त्व से स्वतः सुन्दरता प्रादुर्भूत होनी चाहिए।

बहरहाल, जहां तक मेरा सम्बन्ध है, अन्ततः मैंने अपने लिए अनुशासन के रुचिकर पहलू को विकसित करने की दरअसल एक पेचीदा योजना तैयार कर ली थी। उदाहरण के लिए मैं आप लोगों को अपने कुछ तरीके, क

बारे में बताऊंगा, जिनका इस्तेमाल मैंने अनुशासन लागू करने के लिए उतना नहीं, जितना इसकी रुचिरता को परखने और इसे क़ायम रखने के लिए किया।

उदाहरणार्थ जलपान मे देर लग जाती थी। जलपान की सूचना दस मिनट देर करके दी जाती थी। मैं नहीं जानता कि इसका दोषी कौन था: पाकशाला में काम करनेवाले, ड्यूटी पर तैनात कमांडर अथवा अधिक समय तक सो जानेवाला एक विद्यार्थी। प्रश्न यह था कि आगे क्या किया जाये: काम की सूचना दस मिनट के लिए टाल दी जाये, देर से काम शुरू किया जाये अथवा जलपान त्याग दिया जाये। व्यावहारिक रूप मे इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत कठिन हो सकता है।

मेरे कम्यून में इंजीनियरों, फ़ोरमैनों और प्रशिक्षकों का एक बड़ा वेतनभोगी स्टाफ था, उनकी कुल संख्या क़रीब दो सौ थी, और उनके लिए भी समय बहुमूल्य था। वे आठ बजे काम पर आ जाते थे तथा फ़ैक्टरी की सीटी ठीक आठ बजे बजती थी। इधर जलपान मे दस मिनट की देरी हो जाती थी, कम्यूनार्ड काम के लिए तैयार नहीं हो पाते थे और इसका अर्थ था कि मुझे मजदूरों तथा इंजीनियरों को काम के घंटों के बाद रोकना पड़ता। उनमें से बहुतेरे शहर से बाहर रहते थे, उन्हें गाड़ी पकड़नी पड़ती थी, इत्यादि। बहरहाल समय पालन के नियम इस प्रश्न मे सन्निहित थे।

कम्यून में अपने कार्य-काल के अन्तिम वर्षों में, मुझे पता चलता था, इस सम्बन्ध मे एक बार भी न तो मुझे और न विद्यार्थियों को कभी कोई द्विविधा हुई। जलपान मे देरी हो जाती थी। मैं ठीक आठ बजे सीटी बजाने का आदेश दे दिया करता था। कुछ विद्यार्थी दौड़े हुए काम पर जाते थे, अन्य विद्यार्थी जलपान करते रहते थे। मैं भोजनालय में जाता और सूचित करता कि जलपान का समय ख़त्म हो गया है। मैंने बिल्कुल अच्छी तरह यह महसूस किया कि मैं उन्हें भूखा रख रहा था, मैंने पूर्णतया अनुभव किया कि उनके स्वास्थ्य की दृष्टि से यह बुरा है, आदि। किन्तु इसके बावजूद एक बार भी मुझे अपनी कार्रवाई के औचित्य में कोई सन्देह नहीं हुआ। यदि मैं एक ऐसे समुदाय के साथ यह व्यवहार करता, जिसमें अनुशासन की सुन्दरता की भावना न होती, तो निश्चय ही किसी ने यह कह दिया होता:

"क्या हमसे भूखे रहने की आशा की जाती है?"

परन्तु किसी ने भी कभी मुझसे इस प्रकार की बात नही कही। हरेक ने अच्छी तरह समझ लिया कि उसे यही करना था और यह तथ्य कि मै भोजनालय में जाकर इस प्रकार का आदेश दे पाता था, इसका द्योतक है कि समुदाय से इस बात की अपेक्षा रखने का मुझे विश्वास था कि वे बिना जलपान के भी काम पर जायें।

एक समय दिन मे ड्यूटी पर तैनात काम करनेवालों ने लडको के बारे मे शयनागार में समय बर्बाद करने, भोजनालय मे जल्दी से न आने और इसके फलस्वरूप जलपान के लिए देर से आने की शिकायत करनी शुरू की। मैंने भी इस विषय पर कोई सैद्धान्तिक बहस शुरू नही की और कभी भी इस सम्बन्ध मे किसी से कुछ नही कहा। सुबह मैं केवल भोजनालय के दरवाज़े के बाहर जाकर खडा हो जाता था और वहा अन्य चीजों के बारे में किसी से बातचीत किया करता था। और आपको जानकर आश्चर्य होगा कि एक सौ अथवा डेढ सौ देर से आनेवाले, जो अधिकांशत सीनियर विद्यार्थी थे, भोजनालय में जलपान के लिए जाने की जगह मेरे पास से बहुत तेज़ी से आगे बढ जाते और सीधे फैक्टरी चले जाते। वे कहा करते, "नमस्कार, अन्तोन सेम्योनोविच!" किसी ने भी जलपान न करने के बारे मे शिकायत नही की और कभी-कभी उनमे से कोई शाम को मुझसे कहता: "निस्सन्देह आज तो आपने हम लोगो को भूखा ही रख दिया।"

मैं इसी आधार पर विभिन्न प्रकार के प्रयोग करने की कोशिश कर सका। फर्ज़ कीजिए, सभी "युद्धपोत पोत्योमकिन" नामक फिल्म के शुरू होने की प्रतीक्षा में होते। सभी हाल में बैठे होते और फिल्म शुरू हो गई होती तथा चल रही होती। तीसरे भाग के दौरान मैं कह पड़ता: "चौथी, दूसरी और तीसरी टुकड़ी बाहर आ जाये।"

"क्या बात है?"

"मुझे बताया गया है कि कुछ सन्देहात्मक व्यक्ति बाहर चक्कर लगा रहे हैं। जाकर देखो क्या बात है।"

"हा, महोदय।"

उन्हे इसका विश्वास न होता कि बाहर सचमुच सन्देहात्मक व्यक्ति चक्कर लगा रहे थे, उन्हें संभवतः इसका भी सन्देह हो जाता कि यह केवल परीक्षा है, परन्तु यदि कोई अन्य इस प्रकार उनसे अपनी बात कहता, तो दूसरो के साथ वह अपने को भी मुसीबत में डाल देता। वे

बाहर जाते, इसका पता लगा लेते कि वहां कोई नहीं है और वापस च
आते। वे अपनी पसन्द की फिल्म का कुछ अंश नहीं देख पाते, फिर भ
कोई जरा भी शिकायत नहीं करता, वे शान्तिपूर्वक बैठ जाते और शे
फिल्म को देखते।

यह एक प्रकार का प्रयोग था। इसी तरह अनेक प्रकार के विवि
प्रयोग थे। उदाहरणार्थ, घर की सफ़ाई का काम बांटते समय हमारी ए
परम्परा सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी को सबसे कड़ा और सर्वाधिक अप्रिय कार्यभा
सौंपने की थी। और मैं आप लोगों को बताना चाहता हूं कि सफाई करन
सर्वथा एक कड़ा काम था, क्योंकि प्रायः प्रतिदिन कम्यून में कई प्रतिनिधि
मण्डल आया करते थे और हमें उस स्थान को बिल्कुल साफ-सुथरा
बिल्कुल चमाचम रखना पड़ता था।

"सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी कौन है?"

"छठी।"

और सर्वोत्कृष्ट होने के कारण छठी टुकड़ी को सर्वाधिक अप्रिय काम
करने को दिया जाता था। सबसे अच्छी टुकड़ी होने के कारण इसे सर्वाधि
अरुचिकर काम करना पड़ता था। हमने इस युक्ति को बिल्कुल स्वाभावि
महसूस किया। यह सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी थी और इसलिए उसे सबसे कड़
काम सौंपा गया।

अथवा जब हम अपनी किसी यात्रा पर होते, तो बहुधा अपने को
कठिनाइयों में पाते, जिन्हें पार करने के लिए कोई कम शारीरिक श्रम,
फुर्ती और शक्ति अपेक्षित न होती। हम किस टुकड़ी को भेजते? सबसे
अच्छी टुकड़ी को, और इसे यह काम करने पर गर्व होता था। मैं शायद
ही इसे कोई अतिरिक्त काम देने अथवा इसके सामान्य कर्तव्यों के अलावा
कोई कार्य सौंपने में कभी किसी खटके से सोच-विचार करता था। किसी
हिचक के बिना मैं इसी को अतिरिक्त काम दिया करता था, स्पष्टतः इस कारण
कि यह सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी थी और इस कारण भी कि इस में मेरे विश्वास
को महसूस किया जायेगा। इसकी असामान्य सुन्दरता लड़कों की दृष्टि
से ओझल नहीं होती थी।

वास्तव में अनुशासन को रुचिकर कार्य-कौशल का रूप प्रदान कर
सुन्दरता के प्रति यह अनुभूतिशीलता ही इसकी अन्तिम कसौटी होगी।

समझदार इस अवसर को प्राप्त नहीं करेगा, परन्तु यदि कोई समझ
कर ले और इस विवेक को अपना ले कि तुम जितने ही अधिक

का ध्यान रखिए, मानवजाति के इतिहास को सीखिए, हमारे प्रौद्योगिकीकरण के इतिहास को सीखिए और अपने साहित्य में भी आप शानदार उदाहरण पाएंगे, जिन्हें आप अनुशासन के इन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित सोवियत अनुशासन के आदर्श के रूप में अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते हैं।

फिर भी, जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूं, यह चेतना, यह आधारिक सिद्धान्त अनुशासन का आधार नहीं, बल्कि अनुशासन का नतीजा होना चाहिए, यह अनुशासन के अनुरूप होना चाहिए।

तब अनुशासन का आधार क्या है?

मनोवैज्ञानिक शोध की गहराई में डुबकी लगाये बिना, स्पष्ट और सरल शब्दों में बातें करते हुए अनुशासन का आधार है बिना किसी सिद्धान्त के अपेक्षा। यदि कोई मुझसे बहुत ही संक्षिप्त सूत्र में अपने शिक्षण-सम्बन्धी अनुभव के सारतत्त्व की व्याख्या करने को कहे, तो मैं कहूंगा: एक व्यक्ति से सर्वाधिक अपेक्षाएं रखिए और उसके साथ सर्वाधिक सम्मानपूर्ण व्यवहार कीजिए। मुझे पूरा यकीन है कि सोवियत अनुशासन का यही सूत्र है, सामान्यतया यही हमारे समाज का भी सूत्र है। हमारा समाज इस दृष्टि से पूंजीवादी समाज से भिन्न है कि हम पूंजीवादी समाज की अपेक्षा एक व्यक्ति से बहुत उच्चतर अपेक्षा रखते हैं और इसके अलावा हमारी अपेक्षाएं अधिक महत्वपूर्ण हैं। पूंजीवादी समाज में एक व्यक्ति एक दूकान खोल सकता है, दूसरों का शोषण कर सकता है, सट्टेबाजी कर सकता है अथवा भाड़े या लगान से प्राप्त आय पर आश्रित रह सकता है। वहां हमारे समाज की अपेक्षा एक व्यक्ति से बहुत कम अपेक्षाएं की जाती हैं।

परन्तु दूसरी ओर हम उसके साथ अपूर्व रूप में बहुत अधिक और बुनियादी रूप से भिन्न सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हैं। एक व्यक्ति के प्रति सर्वाधिक सम्मानपूर्ण व्यवहार के साथ सबसे अधिक सख्त अपेक्षाओं का यह संयोजन एक ही चीज के अविच्छिन्न भाग हैं—वे दो भिन्न चीजें नहीं हैं। एक व्यक्ति से अपेक्षाएं रखते समय हम उसकी शक्ति और योग्यता के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हैं और उसके लिए सम्मान की भावना प्रकट करते हुए इसके साथ ही हम उससे अपेक्षाएं रखते हैं। यह सम्मान किसी बाहरी चीज के लिए, समाज के बाहर किसी सुखद और आकर्षक चीज के लिए नहीं है। यह एक साथी के प्रति सम्मान है, जो हमारे

में चूर होने का कोई हक नहीं है और मैं जानता था कि शिक्षक अक्सर यही किया करते थे, क्योंकि उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि कौन-सी पद्धति अपनानी चाहिए। मुझे पक्का विश्वास है कि विद्यार्थियों से अपेक्षाए रखना सही पद्धति है।

यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि इस पद्धति को आगे और विकसित करना चाहिए। परन्तु मुझे दृढ़ विश्वास है कि विकास के तरीके सदा एक-से हैं। यदि आप अनुशासनशून्य अथवा केवल बाहरी दृष्टि से अनुशासित बच्चो के समुदाय को लेने जा रहे हैं, तो आपको उनके लिए अपनी ही व्यक्तिगत अपेक्षाए स्थिर करके काम शुरू करना होगा।

बच्चों से अपनी बात मनवा लेने के लिये और जो आप चाहते हैं, वही उनसे करा लेने के लिये अधिकाश मामलों मे बहुधा ऐसी दृढ़ अविचल अपेक्षा को व्यक्त कर देना ही पर्याप्त होता है। इस प्रसग में यह आत्मप्रेरणा और ज्ञान कि आप सही हैं, कुछ भूमिका अदा करते हैं। उसके बाद सभी बात आपकी बुद्धि पर निर्भर होगी। समुदाय की मांगों से असम्बद्ध भोंडी, विवेकशून्य और उपहासजनक अपेक्षाए कभी नहीं करनी चाहिए।

मुझे भय है कि अब मेरी बात कहीं युक्तियुक्त न होगी। यह एक प्रमेय है, जिसे व्यक्तिगत रूप से मैंने खुद अपने लिए सोचा: जब भी मुझे इसका विश्वास नहीं होता था कि मैं क्या अपेक्षाए रख सकता था, क्या यह अपेक्षा उपयुक्त होगी अथवा अनुपयुक्त, तो मैं कुछ भी न देखने का बहाना बनाता था। जब तक मुझे और सामान्य समझ वाले किसी अन्य व्यक्ति को भी यह स्पष्ट नहीं हो जाता था कि मैं ठीक था, तब तक मैं उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता था। और उसके बाद मैं अपनी एकनिष्ठ अपेक्षाओं को पूर्णतया व्यक्त करता था और चूंकि स्पष्टतः मेरी ठीक बात के कारण वे अपेक्षाए उपयुक्त प्रतीत होती, मैं अधिक साहस के साथ काम करता और इसे समझते हुए कि मैं ठीक था, विद्यार्थीगण आसानी से मेरी बात मान लेते।

मेरे विचार से प्रारम्भिक अवस्था मे इस युक्ति को नियम बना देना चाहिए। एक शिक्षक, जो विद्यार्थियों से समझ मे न आनेवाली बातों की अपेक्षा करते हुए अधिकार की अपनी भावना को स्वच्छन्दता प्रदान करता है और अपने विद्यार्थियों की निगाह मे तानाशाह बन जाता है, वह उनकी भावनाओं पर विजय नहीं प्राप्त कर सकता।

मैंने गुमराह बच्चों के प्रथम समूह से यह अपेक्षा नहीं की कि उन्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। मैंने इसे महसूस कर लिया कि मैं उन्हें तत्काल सुधारने की आशा नहीं कर सकता। परन्तु मैंने उनसे यह अपेक्षा जरूर की कि वे निश्चित समय पर उठ जायें और उन्हें जो काम करना था, उसे करें। किन्तु वे चोरी करते रहे और कुछ समय के लिए मैंने उधर से अपनी आंख मूंद ली थी।

किसी भी दशा में, कोई बिना सत्यनिष्ठ, खरी, विश्वासनिष्ठ, उत्साहपूर्ण और निश्चयात्मक अपेक्षा के एक समुदाय को शिक्षित बनाने का काम शुरू नहीं कर सकता। और जो व्यक्ति दोलायमानता, खुशामद और विनती के साथ इसे शुरू करने का इरादा रखता है, वह बहुत ही गंभीर भूल करता है।

अपेक्षाओं के विकास के साथ-साथ नैतिकता के सिद्धान्त का विकास होना चाहिए, परन्तु किसी भी दशा में इस विकास को अपेक्षाओं का स्थान नहीं देना चाहिए। जब आपको सिद्धान्त स्थिर करने और किशोरों को यह समझाने का अवसर प्राप्त हो कि उन्हें क्या करना चाहिए, तो आप ऐसा अवश्य करें। परन्तु जब दृढ़ता प्रकट करने का अवसर हो, तो आपको सिद्धान्त स्थिर करने के चक्कर में कदापि नहीं पड़ना चाहिए, आपको स्पष्टतः अपनी अपेक्षाएं व्यक्त करनी चाहिए और उनकी पूर्ति पर ज़ोर देना चाहिए।

मैं कई स्कूलों, अधिकांशतः कीयेव के स्कूलों में जा चुका हूं। इन स्कूलों में मुझे सबसे अधिक आश्चर्य भयानक शोरगुल, चुलबुलापन, बच्चों में गंभीरता की कमी, उनकी उन्मादपूर्ण उत्तेजना, सीढ़ियों के ऊपर-नीचे उनके दौड़ने और इससे खिड़कियों, नलों, गिरों को तोड़ने आदि पर हुआ।

मैं शोरगुल बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि किशोरों की भीड़ में रहते हुए मैं 'जीवन की ओर' नामक अपनी पुस्तक लिख सका, तो मैं यही कहूंगा कि मुझ में काफी धैर्य रहा होगा। उनकी बातचीत से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। परन्तु मेरे विचार में चिल्लाना, चीखना और दौड़ना ऐसी बातें हैं, जिनके बिना भी बच्चे अच्छी तरह रह सकते हैं।

किन्तु फिर भी मैंने कुछ बाल-शिक्षकों को यह बहस करते हुए सुना है कि बच्चे को इधर-उधर दौड़ते रहना चाहिए, उसे शोरगुल करना चाहिए, इसे स्वाभाविक माना जाता है।

मुझे इस सिद्धान्त पर आपत्ति है। बच्चे को इसकी अत्यधिक आवश्यकता नहीं है। स्कूल में सबके आँगन में सारा समय मौन प्रति परेशान हो जाते हैं तथा इससे और कुछ नहीं होता, बल्कि नुकसान ही पहुँचता है। इसके प्रतिकूल, मुझे अपने अनुभव से विश्वास हो गया है कि एक बाल समुदाय को आसानी से अनुशासित रूप में व्यवहार करने, अध्ययन का क्रम बनाने, दूसरों की सुविधा-असुविधा पर ध्यान रखने और सम्पत्ति, दरवाज़ों, खिड़कियों आदि की रक्षा करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

आप कम्यून में इस प्रकार का शोर-शराबा कभी नहीं सुन पाते। जब विद्यार्थी घूमने बाहर सड़कों पर जाते, स्कूल के खेल के मैदान में और कमरों में होते, तो अन्ततः वे मेरे प्रयास से सर्वथा अनुशासित रूप में व्यवहार करने लगे। मैंने उनके व्यवहार में पूर्ण अनुशासनबद्धता की अपेक्षा की।

यदि अब मैं किसी स्कूल का इनचार्ज बना दिया जाता, तो मैं सबको एक जगह जमा कर और उन्हें यह बताते हुए अपना काम शुरू करता कि मैं पुनः इस प्रकार का व्यवहार कभी पसन्द नहीं करूंगा। इसके लिए किसी दलील की, किसी सिद्धान्त की ज़रूरत नहीं है। शुरू में हो नहीं, किन्तु बाद में मैं उनके सम्मुख सिद्धान्त प्रस्तुत करता। मैं दृढ़ निश्चय के साथ अपना काम शुरू करता: मैं कभी उस प्रकार की बात होते देखना नहीं चाहता। मैं फिर कभी स्कूल में शोर मचानेवाले एक भी विद्यार्थी को नहीं देखना चाहता।

ज्योंही एक समुदाय को अपनाया जाये, त्योंही बिना किसी बहस-मुबाहिसे के स्पष्ट लहजे में व्यक्त यह दृढ़ अपेक्षा की जानी चाहिए। मैं यह सोच भी नहीं सकता कि जब तक संगठक ऐसे कड़े लहजे में अपनी अपेक्षाएं व्यक्त नहीं करता, तब तक वह अनुशासनशून्य, उद्धत और अनियन्त्रित समुदाय में अनुशासन की भावना कैसे भर सकता है। परन्तु दृढ़ता से अपनी अपेक्षाएं प्रकट करने के बाद वह अनुभव करेगा कि उसका काम काफ़ी आसान हो गया है।

जब एक, फिर दो, फिर तीन और फिर चार विद्यार्थी एक ऐसा समूह बनाकर, जो ईमानदारी से अनुशासन को क़ायम रखना चाहता है, आपके साथ हो जाये, तो दूसरा दौर शुरू हो जाता है।

निस्सन्देह अपेक्षा ही सब कुछ नहीं है। यह अनुशासन का एक अनिवार्य तत्त्व है, किन्तु एकमात्र तत्त्व नहीं है। यह सच है कि यथार्थतः सभी अन्य तत्त्व भी अपेक्षाओं के वर्ग से सम्बद्ध हैं, परन्तु उन्हें अपेक्षतः कम दृढ़ रूप में व्यक्त किया जाता है। प्रेरणा और दबाव अपेक्षा के अधिक शिथिल रूप हैं। और अन्तिम, किन्तु किसी भी अर्थ में नगण्य नहीं, धमकी है—यह साधारण अपेक्षा की तुलना में अधिक प्रभावकारी तरीक़ा है।

मेरा विचार है कि अपनी शिक्षा-पद्धति में इन सभी तरीक़ों को लागू करना चाहिए।

प्रेरणा क्या है? इस तरीक़े का विकास भी होना चाहिये। उपहार, पुरस्कार, इनाम अथवा अलग व्यक्ति के लिये किसी दूसरे लाभ द्वारा प्रदत्त प्रेरणा एक बात है, और एक क्रिया के आन्तरिक सौन्दर्य द्वारा प्रदत्त प्रेरणा दूसरी बात है।

दबाव के साथ भी यही बात है। प्रारम्भिक दौर में यह अधिक प्राथमिक रूप में, प्रमाण और समझाने-बुझाने के रूप में व्यक्त हो सकता है। उच्चतर दौर में संकेत, मुस्कराहट अथवा मज़ाक़ द्वारा दबाव प्रकट किया जाता है। यह कुछ ऐसी बात है, जिसका महत्त्व बच्चे समझते और जिसे पसन्द करते हैं।

जहां आप एक समुदाय के विकास की प्रारम्भिक मंज़िलों में बच्चों को दण्ड देने और अन्य असुविधाओं की धमकी दे सकते हैं, वहीं बाद में इसकी कोई आवश्यकता नहीं होगी। एक विकसित समुदाय में धमकी देना अमान्य है और द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में मैंने कभी भी किसी को यह कहते हुए कोई धमकी नहीं दी कि तुम्हें अमुक सज़ा दी जायेगी। ऐसा करना मेरी भूल होती। मैं अपने विद्यार्थियों को जिस बात की धमकी दिया करता था, वह यह थी कि मैं मामले को आम सभा के सामने पेश करने जा रहा हूं और वे इससे अधिक किसी भी बात से नहीं डरते थे।

एक समुदाय के विकास में दबाव, प्रेरणा और धमकी के भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में बाद के वर्षों में अच्छे काम अथवा अच्छे व्यवहार के लिए विद्यार्थियों को प्रदत्त पुरस्कारों को इस आरोही ढंग से क्रमबद्ध किया गया था: उपहार, बोनस और आदेशानुकूल सभी सदस्यों के सम्मुख घोषित कृतज्ञता। सर्वोत्कृष्ट टुकड़ियां इस अन्तिम, सर्वोच्च पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए बड़े प्रयास किया करती थीं, जो किसी

एक कम्यूनार्ड, एक सोलह वर्षीय लड़के ने अपने दोस्त के सन्दूक से पाँच रूबल चुरा लिये। उसे आम सभा में तलब किया गया और कमरे के बीच में खड़ा होने को कहा गया, जो इसी कमरे की भाँति बड़ा था और दीवार के किनारे-किनारे सोफ़े लगा दिये गये थे। सभी लोग इन सोफ़ों पर बैठे हुए थे, बीच में कोई मेज अथवा अन्य कोई चीज नहीं थी, और जिसे भी आम सभा को बयान देने के लिए बुलाया जाता था, उसे सामने आकर बिल्कुल बीच में, झाड़-फानूस के नीचे खड़ा होना पड़ता था। कम्यूनार्डों के कुछ निश्चित नियम थे। उदाहरणार्थ, यदि एक लड़के को गवाह के रूप में बुलाया जाता था, तो उसे कमरे के बीच में नहीं आना पड़ता था। इसी प्रकार अगर कमांडर अपनी टुकड़ी की ओर से बयान देता, तो उसे भी कमरे के बीच में नहीं आना पड़ता था, परन्तु यदि वह व्यक्तिगत रूप से बयान देता, तो उसे कमरे के बीच में आना पड़ता था। मुझे एक भी ऐसे मामले का स्मरण नहीं है, जिसे किसी अन्य तरीक़े से निबटाया गया हो। कमरे के बीच में आने से इनकार करने को समुदाय की आज्ञा का उल्लंघन माना जाता था। हो सकता है कि एक लड़के ने छोटा अपराध किया हो और मामूली सज़ा पाकर वह मुक्त हो जाये, परन्तु यदि वह कमरे के बीच में आने से इनकार करता, तो समुदाय के विरुद्ध जाने का सबसे बड़ा अपराध उस पर लगाया जाता।

ख़ैर, वह लड़का कमरे के बीच में आ गया।

"क्या तुमने रूबल चुराये थे?" उससे पूछा गया।

"हां, मैंने ही चुराया था।"

"कौन बोलना चाहता है?"

लड़के को सावधान होकर खड़ा होना पड़ा।

सदा निष्कासन की मांग करनेवाला रोबेसपियेर सबसे पहले बोलने के लिए खड़ा हुआ।

"उसके साथ हम क्या करें? वह जंगली है। वह चोरी करने से बाज नहीं आ सकता। हां तो, सुनो, तुम दो बार और चोरी करोगे।"

सबको उसका भाषण पसंद आया।

"बिल्कुल ठीक है, वह दो बार और चोरी करेगा। अब उसे कमरे के बीच से हटने दीजिए," सबने कहा।

अपराधी ने व्यथित एवं अपमानित होकर कहा:

और चोरी करेंगे! तुम लोगों की कुल संख्या यहां ४५० है और यदि प्रत्येक तीन बार चोरी करे, तो कम्यून की दशा क्या होगी?"

उन्होंने मुझसे कहा :

"आप परेशान न हों।"

और सचमुच मुझे परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि समुदाय के विश्वास की इस शक्ति का इतना ज़ोरदार प्रभाव पड़ा कि सभी चोरियां बन्द हो गईं और जब एक लड़के ने कोई चीज़ चुरा ली, तो उसने घुटने टेककर बड़ी विनम्रता के साथ कमरे के बीच में मामले की सुनवाई के लिए खड़ा न करने का आग्रह किया, क्योंकि यदि ऐसा हुआ, तो वह लाक्षणिक वाक्य, जिसे वह दूसरों के लिए कहा करता था, उसके लिए कहा जायेगा और वह सत्यनिष्ठा के साथ पुनः चोरी न करने की प्रतिज्ञा करता था।

छोटी-मोटी चोरियों जैसे अपराधों के लिए हम दण्ड नहीं दिया करते थे। इसे एक रोग, पुरानी आदत का बुरा प्रभाव समझा जाता था, जिसे अपराधी अभी तक दूर नहीं कर पाया था।

हम न तो नवागन्तुकों को उजड्डपन अथवा आवारागर्दी की ओर कुछ रुझान के लिए सज़ा देते थे।

हम कुछ अन्य प्रकार के अपराधों के लिए दण्ड दिया करते थे। उदाहरणार्थ, इस प्रकार के मामले को ही लीजिए। हमारे समुदाय की सर्वोत्कृष्ट लड़कियों में शूरा नाम की लड़की थी, जो एक निपुण कम्यूनार्ड, एक टुकड़ी की कमांडर, कोम्सोमोल की सदस्य, ख़ूबसूरत, बहुत फुर्तीली थी। उसके प्रति सभी सम्मानपूर्ण व्यवहार करते थे। वह एक रोज़ छुट्टी पर गई और उस रात वापस नहीं आई। उसकी एक सहेली ने हमें टेलीफ़ोन करके यह बताया कि शूरा बीमार पड़ गई है और उस रात उसके घर रह गई है।

ड्यूटी पर तैनात कमांडर ने, जिसने टेलीफ़ोन पर बातचीत की थी, आकर मुझे इसकी सूचना दी।

इस सूचना से मैं चिन्तित हो गया। मैंने अपने भूतपूर्व विद्यार्थी, कम्यून के डाक्टर, वेरेनेव से वहां जाकर यह देखने को कहा कि उसे क्या हो गया है। वह वहां गया, किन्तु उसे वहां कोई भी नहीं मिला—न तो शूरा

और न उसकी मेज़बान। दूसरे दिन शूरा को कमरे के बीच मे खड़ा होने का आदेश दिया गया।

उसके व्यवहार से लड़कियो जैसी झिझक और कुछ अन्य बात भी प्रकट हुई। उसने कहा :

"मैं थियेटर जाना चाहती थी, परन्तु मुझे भय था कि मुझे अनुमति नही मिलेगी।"

यह कहकर वह बहुत सलज्ज और मीठे ढग से मुस्करा उठी।

परन्तु यह कोई हसने की बात नही थी। मै इसे जानता था और सभी कम्यूनार्ड भी इसे समझते थे। सदा की भांति रोबेसपियेर ने उसे निष्कासित करने का सुझाव प्रस्तुत किया, क्योकि यदि प्रत्येक टुकड़ी का कमांडर शहर जाने और वहा इसी प्रकार "बीमार पड जाने" की बात सोच ले और हमे वहा डाक्टर भेजने तथा इसी प्रकार की अन्य बाते करने को विवश कर दे, तो क्या होगा।

व्यग्रता के साथ मैंने उनकी ओर देखा...

अध्यक्ष ने कहा :

"इस पर वोट ले लिया जाये।"

मैंने उनसे कहा :

"तुम लोग पागल हो गये हो। वह यहा इतने वर्षों से है और अब तुम लोग उसे निकाल बाहर करोगे।"

रोबेसपियेर ने कहा :

"मेरा ख्याल है कि हम ज्यादती कर रहे हैं। परन्तु हर सूरत मे उसे दस घंटे के लिए बन्दी बनाना होगा।"

यही निर्णय था--दस घटे की गिरफ्तारी और उसके बाद कोम्सोमोल ने इस मामले को अपने हाथ मे ले लिया। उस शाम उन्होने कोम्सोमोल की बैठक में उसके लिए विषम स्थिति पैदा कर दी। पार्टी सगठन को हस्तक्षेप करना पड़ा ताकि शूरा कोम्सोमोल से कही निष्कासित न कर दी जाये। सदस्यों ने उससे जो कुछ कहा, वह इस प्रकार था. "यह चोरी से भी बुरी बात है। तुम कोम्सोमोल की एक सदस्य हो, एक टुकड़ी की कमांडर हो, तुमने यह बताने के लिए फ़ोन करवाया कि तुम बीमार हो, परन्तु तुम बीमार नही थी, तुम सिर्फ़ कही जाना चाहती थी और इसलिए तुमने झूठ बोला और यह एक अपराध है।"

यह विशेष व्यवहार नहीं उत्पन्न हो जाता, वह क्रमिक रूप से उत्पन्न होता है और समुदाय के विकास के साथ बढ़ता है।

एक ऐसे व्यक्ति के प्रति सर्वाधिक कठोर रुख अपनाना पड़ता है, जो सैद्धान्तिक दुराग्रहवश समुदाय के विरुद्ध कार्य करता है। जब अपराध का कारण अपराधी की अज्ञता, उसका चरित्र, आत्मनियंत्रण की कमी तथा उसकी राजनीतिक और नैतिक अपरिपक्वता हो, तो उसके प्रति रुख नर्मी बरती जा सकती है। ऐसे मामलों में मनोवैज्ञानिक रूप के लिए सच्चे प्रेम और धैर्य अच्छी आदतों के विकास पर भरोसा किया जा सकता है। परन्तु जिन मामलों में एक व्यक्ति समुदाय के अधिकार को स्वीकार करने से इनकार और इसकी अपेक्षाओं का उल्लंघन करते हुए जान-बूझकर उसके विरुद्ध काम करता है, तो जब तक यह व्यक्ति इस बात को स्वीकार न कर ले कि समुदाय की आज्ञा माननी ही चाहिए, तब तक उसके साथ सख्ती का व्यवहार करना ही पड़ेगा।

और अब मैं सजा के बारे में चन्द शब्द कहूंगा। इस प्रसंग में बातें हमारे बहुत अनुकूल नहीं हैं। एक ओर हम पहले से ही यह मान चुके हैं कि सजा आवश्यक और उपयोगी दोनों ही हो सकती है। किन्तु दूसरी ओर, चूंकि दण्ड उचित है, निस्सन्देह, हमारी विचित्र शब्दाडम्बरता में प्रायः और मुख्यतः हम शिक्षकों द्वारा अनुसरित एक सिद्धान्त यह भी है, जिसका अभिप्राय है कि सजा उचित है, परन्तु सबसे अच्छी बात यही है कि दण्ड देने से बचा जाये। आप सजा देने के लिए स्वतंत्र हैं, परन्तु यदि आप दण्ड देते हैं, तो आप एक अच्छे शिक्षक नहीं हैं। जो शिक्षक सजा नहीं देता, वही अच्छा माना जाता है।

मुझे विश्वास है कि इस तर्क से शिक्षक उलझन में पड़ जायेगा। और इस कारण सदा के लिए इसे स्थिर कर लेना होगा कि दण्ड है क्या। व्यक्तिगत रूप से मुझे यकीन है कि सजा बहुत हितकारी नहीं है। परन्तु मेरा यह भी विचार है कि जिस मामले में सजा देनी हो, उसमें शिक्षक को इसे न देने का कोई हक नहीं है। दण्ड देना अधिकार से बड़ी बात है, जिन मामलों में दण्ड देना अनिवार्य हो, उनमें इसे देना कर्त्तव्य है। दूसरे शब्दों में, मैं दृढ़ता के साथ कहता हूं कि एक शिक्षक चाहे दण्ड दे या न दे, परन्तु यदि उसकी चेतना और विश्वास यह प्रेरित करते हैं कि उसे सजा देना चाहिए, तो इसे देने से इनकार करने का उसे कोई अधिकार

शारीरिक सज़ा किस रूप में अन्य सज़ाओं से भिन्न है? संक्षेपतः, इसका उद्देश्य कभी भी चोट पहुंचाना नहीं होना चाहिए। सामान्य विवेक के अनुसार बात यह है : मैं तुम्हें सज़ा दूंगा और तुम्हें कष्ट होगा तथा दूसरे तुम्हें कष्ट में देखकर स्वयं यह सोचेंगे : हम तुम्हें कष्ट सहते देख रहे हैं और ऐसी ही गलती न करने के लिए हमें सावधानी बरतनी चाहिए।

कोई शारीरिक अथवा नैतिक दंश नहीं होना चाहिए। तब सज़ा का अर्थ क्या है? यह जानना कि समुदाय आपकी हरकत की भर्त्सना करता है। अपराधी को सज़ा से अपने को कुचला हुआ नहीं महसूस करना चाहिए, बल्कि इससे वह अपनी गलती पर विचार करने की स्थिति में होगा और समुदाय से अपने व्यवहार पर, चाहे वह उचित हो क्यों न हो, सोच-विचार करेगा।

और इसी कारण जब सुनिश्चितता हो और जब लोगों का विचार इसके पक्ष में हो, तभी दण्ड देना चाहिए। यदि समुदाय आपके साथ न हो, यदि आपने उसे अपने पक्ष में करने में सफलता नहीं प्राप्त कर ली है, यदि आपके निर्णय का सभी विरोध करें, तो सज़ा गलत है, आपके दण्ड देने से भलाई की अपेक्षा नुकसान अधिक होगा। यदि आप महसूस करें कि समुदाय का समर्थन आपको प्राप्त है, तभी आप सज़ा देने के लिए स्वतन्त्र हैं।

यह दण्ड की सारतत्व-सम्बन्धी बातें हैं।

और अब मैं इसके रूप के बारे में कुछ कहूंगा।

मैं किसी प्रकार के स्थिर रूपों के विरुद्ध हूं। सम्बन्धित व्यक्ति के लिए सर्वथा उपयुक्त सज़ा बिल्कुल व्यक्तिगत होनी चाहिए, किन्तु इसके बावजूद दण्ड देने के अधिकार को नियंत्रित करनेवाले कुछ निश्चित नियम और रूप होने चाहिए।

मैंने अपने व्यावहारिक कार्य में इस विचार का समर्थन किया कि दण्ड देने का अधिकार या तो पूरे समुदाय को, अर्थात् आम सभा, अथवा समुदाय द्वारा अधिकृत एक व्यक्ति को प्राप्त है। मैं यह सोच भी नहीं सकता कि यदि दस भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को दण्ड देने का अधिकार हो, तो एक समुदाय कैसे पुष्ट हो सकता है।

द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में, जहां मैं विद्यार्थियों के फ़ैक्टरी-सम्बन्धी काम, उनके स्कूल और दैनिक जीवन-क्रम का इनचार्ज था, यह अधिकार केवल

और वह आदेश सुनकर कहता :

"जी! एक घंटे की गिरफ्तारी।"

यदि मैं चाहता, तो मैं उन्हें दस घंटे तक की गिरफ्तारी भी दे सकता था।

रविवार को सम्बन्धित लड़का ड्यूटी पर तैनात कमांडर को अपनी बेल्ट सौंपकर मेरे आफिस में आकर कहता :

"मैं सजा पाने के लिए आ गया हूं।"

और चूंकि वह अपने आप यहां आ जाता, इसलिए मैं उसे क्षमा नहीं कर सकता था, क्योंकि १९३३ में आम सभा ने मुझे क्षमा करने के अधिकार से वंचित कर दिया था। और यह सर्वथा ठीक था, क्योंकि यदि मैं किसी को किसी क्षण सजा देता और दूसरे दिन क्षमा कर देता, तो शायद ही वहां कोई व्यवस्था कायम रहती। इस कारण मैं उसे क्षमा नहीं प्रदान कर सकता था और कुछ कार्य करते हुए उसे मेरे आफिस में रहना पड़ता था। मेरे सिवा और कोई उससे बात नहीं कर सकता था और उसके अपराध के बारे में भी कोई बातचीत करने की अनुमति नहीं थी। यह ऐसी प्रवृत्ति मानी जाती थी, इस सम्बन्ध में कोई चर्चा करना मेरे लिए बेतुकी बात होती। वह बन्दी था, वह शान्ति के साथ सजा भोग रहा था और ऐसे समय अपराध की याद दिलाकर उसे लज्जित करना अशोभन अनुचित बात होती।

सामान्यतया हम कम्यून की समस्याओं, कैदियों के मामलों आदि पर बातचीत किया करते थे। मुझे उसे यह याद दिलाने कि वह बन्दी है अथवा कितनी देर तक वह बन्दी रहेगा, इसे जानने के लिए घड़ी देखने का अधिकार नहीं था, क्योंकि अपनी गिरफ्तारी के समय वो [illegible] का बेल्ट देकर उसका कर्तव्य माना जाता था। यह मेरे लिए सर्वथा अनुकूल था कि यह बात उसके लिए हुआ करती थी।

यह गिरफ्तारी किस प्रकार की थी, इसे बिना बताये काम नहीं चलता। उन्हें कुछ बातचीत करते हुए मेरे आफिस में अपनी छुट्टी का पूरा दिन व्यतीत करना पड़ता था।

[illegible] गिरफ्तारी को बल मानकर ही बहुत आवश्यक हो जाती थी — इसलिए सर्व का सम्पूर्ण समुदाय के सामूहिक [illegible] हुआ। इसलिए

य में विभूषित सहकारी-कम्यूनाई कभी भी गिरफ्तार न होने के
जानी सकती थीं।

छोड़ मैंने एक सुन्दर, सुसंस्कृत लड़की का जो टुकड़ी की कमांडर
टे के लिए बन्दी बनाया और वह मेरे आफिस में पूरे समय बैठे
रही: अब वह आम सभा को क्या मुंह दिखायेगी? इस प्रसंग
बता दूं कि इस समय वह सारतोव थियेटर में नाटकों में अभिनय

ने जिस प्रमेय का उल्लेख कर चुका हूं, उसका प्रयोग करना
का अभिप्राय था: एक व्यक्ति के लिए सर्वाधिक सम्मान के साथ
सर्वाधिक अपेक्षाएं रखना और हमारी दृष्टि में गिरफ्तारी एक
बात थी।

तार भेजकर मुझे तत्काल कीयेव बुलाया गया और एक घंटे
मुझे कम्यून को छोड़ देना था, तो जिस समुदाय के साथ मैंने
व्यतीत किये थे, उससे विदा लेने के लिए मेरे पास आध घंटे
समय नहीं था। निस्सन्देह, मैं उनसे कुछ भी नहीं कह सका,
उस क्षण में उन्हीं की भांति मेरे लिए भी कुछ कहना कठिन
या रो पड़ी, सभी को काफी धक्का लगा था, परन्तु फिर भी
कूल परिणति हुई। पियानो पर धूल देखकर मैंने विदाई का
ण बीच ही में रोककर पूछा

थियेटर में किस की ड्यूटी है?"

ी टुकड़ी ड्यूटी पर है।"

डर को पांच घंटे की गिरफ्तारी की सज़ा।"

रा पुराना साथी था। हमने कम्यून में आठ साल साथ-साथ
ये थे। परन्तु पियानो पर धूल क्यों पड़ी रह गई? उसने उधर
दिया था और इस कारण उसे पांच घण्टे की गिरफ्तारी की
।

में चला गया और जब दो महीने बाद वहां निरीक्षण के लिए
उस लड़के ने मेरे आफिस में आकर कहा:

सज़ा पाने के लिए उपस्थित हूं।"

लिए?"

नो पर धूल जमने के कारण।"

"परन्तु इसके पहले तुमने दण्ड क्यों नहीं भोग लिया?"

"मैं यहां आपकी उपस्थिति में इसे प्राप्त करना चाहता था।"

और इसलिए मुझे वहां उसके साथ पांच घण्टे तक बैठना पड़ा।

रूप के सम्बन्ध में इतना ही पर्याप्त है।

यदि समुदाय अपने सामान्य भाव से एकजुट हो और विश्वास हो, तो सजा बहुत ही मौलिक और दिलचस्प चीज हो सकती है, अर्थात् जब सभा ही दण्ड दे।

एक बार ग्राम सभा में कोम्सोमोल के एक सीनियर सदस्य ने प्रतिवाद की निन्दा की। लड़का सही था, परन्तु उसने जिस भाषा का प्रयोग किया वह अनुचित थी। और इस कारण ग्राम सभा ने निर्णय किया: "पायनियर किरेन्को (सबसे छोटा लड़का) कोम्सोमोल के इस सदस्य को आचरण-सम्बन्धी अमुक-अमुक नियम समझावे।"

वे यही करना चाहते थे। सभा समाप्त होने के बाद ड्यूटी पर तैनात कमांडर ने किरेन्को और बड़े लड़के को बुलाकर कहा:

"बैठ जाओ और सुनो।"

किरेन्को ने तत्परता से इस काम को निबाहा और बड़े लड़के ने उसी प्रकार ईमानदारी से उसकी बातें सुनीं।

ग्राम सभा की अगली बैठक में किरेन्को ने यह रिपोर्ट प्रस्तुत की:

"पायनियर किरेन्को ग्राम सभा द्वारा सौंपे गए काम को पूरा करने की सूचना देता है।"

"किरेन्को ने जो कुछ तुमसे कहा, क्या तुमने उसे समझ लिया?"

"हां, मैं समझ गया।"

"तब जाओ।"

इस प्रकार यह प्रकरण समाप्त हो गया।

एक अन्य मामला इस प्रकार था: एक कम्युनार्ड जब एक साथी-कम्युनार्ड के साथ बाहर टहल रहा था, तो उसने कुछ व्यक्तियों को लड़ते हुए देखा। उत्तेजित होकर वह उस झगड़े में शामिल हो गया। उसके लिए इसका परिणाम काफी कष्टदायक रहा। ग्राम सभा के प्रस्ताव में कहा गया था

"अगली छुट्टी के दिन तीन बजकर पांच मिनट पर इसको डी-कार्ड इस्तेमाल कर और जाना चाहिए और कमांडर को रिपोर्ट देनी चाहिए।"

उसे अपने कार्य पर विचार करना पड़ा कि क्या उसका व्यवहार ठीक था या नहीं। एक सप्ताह के लिए उसे चिन्तन की काफी सामग्री मिल गई। और आदेशानुसार रिपोर्ट देते हुए वह ठीक निर्णय पर पहुंचा।

वास्तव में इस प्रकार की सज़ा और किसी बात की अपेक्षा अधिक चिन्तावर्द्धक है, जिसे देने में समुदाय सहज रूप से अपनी शक्ति प्रदर्शित करता है। किन्तु निस्सन्देह मेरी कार्य-प्रणाली में मुख्य चीज़ सज़ा नहीं बल्कि निजी ढंग की बातचीत थी।

तीसरा व्याख्यान

व्यक्तिगत व्यवहार विधि

आज मैं आपके साथ व्यक्तिगत प्रभाव, व्यक्तिगत व्यवहार की प्रक्रिया पर विचार करना चाहता हूं। मैंने अपने कार्य के प्रारम्भिक काल में सामूहिक प्रभाव, सामूहिक संगठन में व्यक्तिगत संगठन के सम्बन्ध का गलत विचार अपनाया। मेरा ख्याल था कि एक संगठन के रूप में समुदाय को प्रभावित करना प्रमुख काम था और उस समुदाय के विकास को दुरुस्त करनेवाले के रूप में व्यक्तियों को प्रभावित करना गौण काम था।

ज्योंही मुझे काफी अनुभव प्राप्त हुआ, त्योंही मुझे अगाध विश्वास हो गया और बाद में व्यवहार में इस विश्वास की पुष्टि हुई कि समष्टि से व्यष्टि की ओर प्रत्यक्ष संक्रमण जैसी कोई चीज नहीं है। विशेष रूप से एक शैक्षिक उद्देश्य के लिए संगठित प्रारम्भिक समुदाय द्वारा रूपान्तरण होता है।

मेरा ख्याल है कि भविष्य में प्रारम्भिक समुदाय के सिद्धान्त के प्रति शिक्षाशास्त्री विशेष ध्यान देंगे। प्रारम्भिक समुदाय शब्द का अभिप्राय क्या है?

यह शब्द ऐसे समुदाय के लिए प्रयुक्त हो सकता है, जिसके सदस्यों में सतत सम्बन्ध, दोस्ताना और सैद्धान्तिक सम्पर्क कायम रहता है। यह वही बात है, जिसे एक समय हमारे शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त के अन्तर्गत सामूहिक "सम्पर्क" की संज्ञा प्रदान करने का सुझाव प्रस्तुत किया गया था।

निस्सन्देह, हमारे स्कूलों में ऐसे समुदाय हैं। वे कक्षा के रूप में हैं, और शायद उनकी एकमात्र त्रुटि यह है कि वे एक प्रारम्भिक समुदाय अर्थात् व्यक्ति और स्कूल-समुदाय के बीच सम्पर्क स्थापित करने की भूमिका अदा नहीं करते और बहुधा वे ही अन्तिम समुदाय का रूप ग्रहण कर लेते हैं।

ने कुछ स्कूलों में कक्षा को अन्तिम समुदाय के रूप म देखा और कभी-भी एक स्कूल-समुदाय पूर्ण रूप मे दिखाई नही दिया।

मुझे अधिक अनुकूल परिस्थितिया सुलभ थी, क्योंकि मेरे कम्यूनार्ड ही रहते और काम करते थे, और इस प्रकार पूरे समुदाय के मामलो में दिलचस्पी लेने तथा इसके हितो के अनुकूल आचरण करने के अनेक विवेकसगत और व्यावहारिक कारण थे। किन्तु फिर भी स्कूल की कक्षा की भाति मेरा समुदाय एक सहज प्रारम्भिक समुदाय नहीं था। मुझे उसका गठन करना पडा। बाद मे दससाला स्कूल हो गया था और स्कूल कक्षा के ढग के एक प्रारम्भिक समुदाय पर मै अपना काम आधारित कर सकता था। परन्तु मैने इस रास्ते को नही अपनाया, एक कक्षा बच्चो को उनके दैनिक काम मे एकजुट करती है और इससे स्कूल के शेष विद्यार्थियो से अपने को अलग कर लेते हैं। उनके लिए अपनी कक्षा के हितो से अपने को बाध लेने के अनेक और बहुत पुष्ट कारण हैं। और इस कारण बाद के वर्षों मे मैने स्कूल-कक्षा के ढाचे के अनुसार अथवा कार्य-टोली के ढग पर एक प्रारम्भिक समुदाय के गठन का विचार परित्याग दिया। स्कूल कक्षा और उत्पादन-कार्य के सुदृढ सम्पर्कों से सयुक्त प्रारम्भिक समुदायो से गठित कम्यून को सगठित करने के बारे मे मेरे प्रयासो के परिणाम खेदजनक रहे। सामान्यतया इस प्रकार का प्रारम्भिक समुदाय सदा सामूहिक हितो से दूर रहने की ओर प्रवृत्त रहता है और अलग-थलग पड जाता है। इस दशा मे यह एक प्रारम्भिक समुदाय के रूप में अपना महत्त्व खो बैठता है, स्कूल-समुदाय के हितो को नष्ट कर देता है और वास्तव मे उच्चतर मंजिल की ओर सक्रमण को कठिन बना देता है।

मैं अपनी भूलो से—ऐसी भूलो से, जिनमे मेरे शैक्षिक काम पर असर पडा—इस निष्कर्ष पर पहुचा। मुझे इस प्रश्न पर बोलने का अधिकार है, क्योकि मैं देखता हू कि अनेक स्कूलो मे वही बात हो रही है जहा प्रारम्भिक समुदायो के हित प्रमुख हैं।

सामुदायिक शिक्षा का लक्ष्य केवल प्रारम्भिक समुदायो द्वारा प्राप्त नही हो सकता, क्योकि इस प्रकार के समुदाय की एकता से, जहा बच्चे एक-दूसरे को दिन भर देखते हैं और मैत्रीपूर्ण सहयोग के साथ रहते हैं साथियो के प्रति पक्षपात की भावना पैदा होती है और इसके फलस्वरूप ऐसी शिक्षा प्राप्त होती है, जिसे हम पूर्णतया सोवियत शिक्षा नहीं कह

सकते। केवल एक बड़े समुदाय द्वारा, जिसके लिए केवल मन-माफिक मे नहीं, बल्कि सहज सामाजिक मेल से पैदा होते हैं, व्यापक सामाजिक शिक्षा में संक्रमण हो सकता है, यहां "समुदाय" शब्द का अभिप्राय पूरा समाप्त होता है।

किशोरों को एक छोटा सदीय समुदाय बनाने की छूट देने का मतलब यह है कि इससे उनका व्यापक सामाजिक विकास नहीं, बल्कि सतही पढ़ाई-लिखाई मात्र होगी।

अन्ततः मैंने इस प्रकार की व्यवस्था की कि प्रारम्भिक समुदाय एक केन्द्र बन गया, जो दूसरे समूहों से अपनी शिक्षा और काम की अभिव्यक्ति प्राप्त करता था। मैंने इसी कारण अन्त में विभिन्न कक्षाओं और विभिन्न कार्यों से सम्बन्धित टोलियों के लड़के-लड़कियों को शामिल कर विद्यार्थियों को टुकड़ियों में बांटने का निर्णय किया।

मैं इसे अच्छी तरह महसूस करता हूं कि इस दावे का औचित्य आपको पर्याप्त विश्वसनीय नहीं प्रतीत होगा। विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करने का मेरे पास समय नहीं है, और इसलिए मैं संक्षेप में कुछ परिस्थितियों का उल्लेख करूंगा। उदाहरणार्थ, उम्र के आधार पर समूह बनाने का प्रश्न था। मैं जानना चाहता था कि यह तरीका कैसे फलदायक होता है, इसलिए मैंने इसे आंकड़ों में कार्यान्वित करके और व्यावहारिक रूप में इसका अध्ययन किया। प्रारम्भ में मैं भी समान आयु के बच्चों के प्रारम्भिक समुदाय गठित करने के पक्ष में था। अततः उनकी शिक्षा के हितों के कारण मेरा ऐसा विचार बना।

इससे किशोरों को बड़े लड़कों से पृथक् अधिक स्वाभाविक और ठीक वातावरण में रखना प्रतीत होगा। अपने ही हितों और संगठनों सहित इस उम्र में (११ या १२) उन्हें एक समुदाय से सम्बद्ध होना चाहिए और मेरा ख्याल था कि यह सबसे अधिक उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण है। मैं शिक्षाशास्त्र-सम्बन्धी साहित्य से भी प्रभावित था, जिस में यह प्रतिपादित किया गया था कि शिक्षा के सम्बन्ध में वयगत समूह एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है।

किन्तु इसके बाद मैंने अनुभव किया कि वास्तव में किशोर अन्य वयगत समूहों से पृथक् कृत्रिम वातावरण में रख दिये गये थे। वे बड़े लड़के-लड़कियों के सतत प्रभाव से वंचित थे, उनसे अनुभव नहीं प्राप्त कर

एक टुकड़ी दस या बारह व्यक्तियों की ऐच्छिक यूनियन थी। निस्सन्देह यह समाज धीरे-धीरे गठित हुआ। कम्यून में ऐसे लड़के थे, जिनके साथ कोई भी अपनी इच्छा से एक टुकड़ी में शामिल होना नहीं चाहता था। संयोग से मुझे सबसे बिगड़े हुए लड़कों को पहचानने में सहायता प्राप्त हो गई। पांच सौ बच्चों के हमारे समुदाय में क़रीब पन्द्रह से बीस तक ऐसे लड़के थे, जिन्हें कोई भी टुकड़ी स्वेच्छा से लेने को तैयार नहीं होती। आसानी से न सुधरनेवाली लड़कियों की संख्या बहुत कम थी, कुल १५० में तीन या चार से अधिक नहीं थी, गोकि सामान्यतया लड़कों की अपेक्षा लड़कियां कम सहायक होती हैं। इस विरोध का कारण यह था कि वास्तव में लड़कियों की अपेक्षा लड़के अधिक सिद्धान्तप्रिय थे, इसलिये वे कभी-कभी अत्युक्ति करके इस या उस व्यक्ति को लेने से इनकार करते थे। वे कहते थे कि वह उनके स्केट को तोड़ देगा, छोटे बच्चों को तंग करेगा अथवा इसी प्रकार का कोई अन्य ग़लत काम करेगा। लड़कियों ने अधिक आशावादी विचार अपनाया, वे अपने बीच किसी सन्देहास्पद व्यक्ति को यह आशा करते हुए कि वे उसे सुधार लेंगी शामिल करना शीघ्र स्वीकार कर लेती थीं।

मैंने ऐसे मामलों में क्या किया? मैंने अवांछित लड़कों को आम सभा के सम्मुख प्रस्तुत किया और कहा:

"यही वे पन्द्रह व्यक्ति हैं, जिन्हें कोई भी टुकड़ी नहीं लेना चाहती। जेम्ल्यानोय् पहली टुकड़ी में शामिल होना चाहता था, परन्तु उसे शामिल करना नामंज़ूर कर दिया गया। उसने दूसरी टुकड़ी में शामिल होने की कोशिश की, परन्तु पुनः उसे अस्वीकार कर दिया गया। उसने पन्द्रहवीं टुकड़ी में शामिल होने का प्रयास किया और फिर वही बात हुई। अब हम क्या करें?"

इस प्रश्न पर बहस शुरू हुई। एक टुकड़ी का प्रतिनिधि खड़ा होता और कहता:

"पहली, दूसरी और पन्द्रहवीं टुकड़ियों ने इसे शामिल करने से क्यों इनकार किया? हम उनसे इसका स्पष्टीकरण चाहते हैं।"

सफ़ाई बहुत संक्षिप्त होती।

"यदि तुम समझते हो कि यह ठीक नहीं, तो अपनी चौदहवीं टुकड़ी में इसे शामिल कर लो। तुम इसकी जवाबदेही ले लो और इस परेशानी को मोल लेने के लिए तुम्हें पूरी छूट है।"

"उससे हमारा कोई सरोकार नही है," तत्काल यह उत्तर मिलता। "वह तुम्हारे पास गया। तुमने शेखी बघारी कि तुम उसे सुधार दोगे।"

नतीजा यह निकलता कि कोई टुकडी उसे अपनाने को तैयार नही होती।

मैंने ऐसी अवस्थाओं को शैक्षिक उद्देश्य के लिये इस्तेमाल करने की कोशिश की। स्पष्टतः जो टुकडी लडके को अपने मे शामिल करने से इनकार करती, उसके लिए यह बात अप्रिय और कष्टसाध्य दोनो होती, विशेष रूप से इस कारण भी कि किसी ने उसके विरुद्ध कोई निश्चित आरोप नही लगाया और केवल यह कहा: कोई अन्य टुकडी उसे स्वीकार कर ले। और समुदाय द्वारा तिरस्कृत वह लड़का वहा खडा रहता।

इसके बाद वह लड़का कसम खाते हुए कहता कि वह अच्छा व्यवहार करेगा और वादा करता कि भविष्य मे वह सराहनीय काम करेगा। खैर, इस मसले को किसी न किसी रूप मे सुलझाना ही पडता। और इसके बाद नेतागण–कोम्सोमोल ब्यूरो के सदस्य और टुकड़ी के कमाडर–यह सुझाव प्रस्तुत करते हुए कि लड़के को किस टुकड़ी मे रखा जाय, अपनी बात कहते। सामान्यतया इस सारी बातचीत का कोई नतीजा नही निकलता।

वे पन्द्रह टुकड़ियों मे से प्रत्येक मे एक-एक लडके को शामिल करने के लिए दबाव डालने की कोशिश करते हुए जेम्ल्यानोय् का प्रश्न छोड़कर इवानोव, रोमान्चेन्को, पेत्रेन्को और पन्द्रह मे से अन्य शेष लडको के मसले पर गौर करने लगते।

नई प्रक्रिया शुरू होती। प्रत्येक टुकड़ी उन पन्द्रह लडकों मे से सबसे भले लड़के को लेने की कोशिश करती। फिर अवकाश दिया जाता और उसके बाद एक कमाडर कहता:

"मैं अमुक लड़के को अपनी टुकडी में शामिल करूंगा।"

अन्य सभी टुकड़ियो मे सबसे भले लडके को अपनाने के बारे मे होड लग जाती और वही लडका जेम्ल्यानोय्, जिसे शुरू में कोई अपनी टुकडी मे शामिल करना नही चाहता था, उसे अब सभी ने पसन्द किया, क्योंकि पेत्रेन्को, शापोवालोव और शेष तो उसकी अपेक्षा अधिक खराब थे।

मान लीजिए कि पहली टुकड़ी ने उसे पा लिया।

हमने उनसे कहा:

"उसके लिए तुम लोग ज़िम्मेदार हो। तुम उसे चाहते थे, इस कारण उसकी जवाबदेही तुम्हारे ऊपर है।"

हम फिर दूसरे उम्मीदवार के प्रश्न पर विचार करते। शेष चौदह लड़कों में वह सबसे अच्छा माना जाता और पुनः टुकड़ियों में उसे शामिल करने के लिए होड़ लग जाती। और केवल वोस्कोबोइनिकोव और शापोवालोव के बच जाने तक यह होड़ लगी रही। और फिर शेष दो टुकड़ियों ने दो बुरे लड़कों में से अपेक्षाकृत कम बुरे को अपना लेने की कोशिश की।

इस बंटवारे की प्रक्रिया में मैं सभी अवांछनीय लड़कों का अध्ययन भी कर लेता। जहां तक मेरी चिन्ता की बात थी, उन्होंने अपना एक पृथक् ही समुदाय बना रखा था। मैं सदैव उन पर निगाह रखता था और मैं इसे समझता था कि उन पन्द्रह लड़कों का समुदाय मेरा सबसे खतरनाक समूह था। उनके विरुद्ध अपराध का कोई अभिलिखित प्रमाण नहीं था, परन्तु फिर भी मेरे लिए यही जान लेना बहुत महत्त्वपूर्ण था कि समुदाय उन्हें अपने बीच स्वीकार करने को इच्छुक नहीं था।

लड़के लड़कियों को यह ज्ञान हो गया था कि पेत्रेन्को सबसे बुरा था और अपनी टुकड़ी में उसे शामिल न करने की उनकी इच्छा का अर्थ यही था कि मुझे उस पर खास निगाह रखनी थी। अन्ततः जिस टुकड़ी ने उसे अपनाया, वह उसके लिए जवाबदेह भी थी, इस बात से मुझे बड़ी सहायता मिली।

हमारे प्रारम्भिक समुदायों का गठन इसी प्रकार हुआ। निस्सन्देह, समुदाय के सर्वोत्कृष्ट उपयोग के लिए कुछ बहुत ही जटिल व्यवस्था करनी पड़ी। टुकड़ी के काम के ढंग और पद्धति में सर्वाधिक एकरूपता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

एक प्रारम्भिक समुदाय, एक टुकड़ी क्या है? गोर्की कम्यून और द्जेर्जीन्स्की कम्यून के अपने व्यावहारिक कार्य में हमने निम्नांकित व्यवस्था अपनाई : हमने, अर्थात् कम्यून के प्रधान की हैसियत से स्वयं मैंने, कम्यून के सभी निकाय—कोम्सोमोल ब्यूरो, कमांडर परिषद् और आम सभा ने हरेक व्यक्ति से कोई सम्बन्ध न रखने की कोशिश की। अर्थात् हमने आधिकारिक रूप से कोई सम्बन्ध न रखने का प्रयास किया। इसके अन्य इसके औचित्य को सिद्ध करना मेरे लिए बहुत कठिन है। मैंने इसे समानान्तर शैक्षिक प्रभाव का तर्क कहा है। मेरे लिए इसकी व्याख्या प्रस्तुत करना बहुत कठिन है, क्योंकि मैंने इस सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं लिखा है और

कभी भी कोई सूत्र पाने की न तो कोशिश की है और न उसे पाया है।

समानान्तर शैक्षिक प्रभाव क्या है?

हमने केवल टुकडी से अपना सम्बन्ध रखा। व्यक्ति से हमारा कोई सम्बन्ध नही था। प्रामाणिक सूत्र यही था। व्यावहारिक रूप मे हमने व्यक्ति से सम्बन्ध रखा, परन्तु हमने इसी बात पर जोर दिया कि व्यक्ति से हमारा कोई सम्बन्ध नही है।

इसका स्पष्टीकरण यह है। हम नही चाहते थे कि प्रत्येक अलग अलग व्यक्ति यह महसूस करे कि वह सुधारने की वस्तु है। जो तरीका मुझे सूझ पडा, वह यह था कि एक बारह अथवा पन्द्रह वर्षीय लडका वहा सचेष्ट जीवन व्यतीत कर रहा है, चैन से है, इस जीवन मे कुछ सुख प्राप्त कर रहा है और अनुभव तथा विचारो को सचित कर रहा है।

जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, वह सुधारने की वस्तु है, परन्तु जहा तक उसका सम्बन्ध है, वह एक जीवित व्यक्ति है और मेरे लिए इस बात की कोशिश करना तथा उसे यह विश्वास दिलाना हितकर न होगा कि वह एक व्यक्ति नही है, वह एक ऐसा व्यक्ति है, जिसके चरित्र का निर्माण हो रहा है, कि शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार वह एक जीवित प्राणी नही, बल्कि एक पदार्थ है। मैने उसे यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि मै एक प्रबोधक से बढकर एक शिक्षक हू, जो उसे लिखने पढने की शिक्षा दे रहा है; कि मै उसे एक शिल्प की जानकारी प्राप्त करने मे सहायता पहुचा रहा हू, कि उत्पादन-प्रक्रिया मे उसके योगदान को महत्त्वपूर्ण मानता हूं, कि मै यह अनुभव करता हू कि वह एक नागरिक है और यह कि उम्र और अनुभव की दृष्टि से मै बडा साथी हू, जो उसकी सहायता और सहभागिता से उसकी जीवन-पद्धति को व्यवस्थित कर रहा था। मैने इस बात की सावधानी बरती कि वह यह महसूस न करे कि सिर्फ वह एक विद्यार्थी, शिक्षा के एक पात्र के अतिरिक्त और कुछ नही है, कि उसका कोई सामाजिक अथवा व्यक्तिगत महत्त्व नही है। परन्तु वस्तुत वह मेरे लिए सर्वथा वही था।

टुकड़ी के साथ भी बिल्कुल यही बात थी। हमने इस पर जोर दिया कि एक टुकड़ी बड़े सामाजिक कार्यभार को पूरा करने की ओर उन्मुख एक छोटा सोवियत केन्द्र थी। कोशिश करके कम्यून को यथासभव उच्चतम स्तर तक पहुंचाना टुकड़ी पर निर्भर था। इसे भूतपूर्व कम्यूनार्डों की मदद

करनी थी, कम्यून में आनेवाले और सहायता की अपेक्षा रखनेवाले एक समय के गुमराहों की सहायता करनी थी।

टुकड़ी एक सामूहिक कार्यकर्ता है और इसके लिए सामाजिक कार्य और जीवन के प्रारम्भिक केन्द्र के रूप में काम करना आवश्यक था।

अपने शिक्षक समूह के साथ हम इस नतीजे पर पहुंचे कि अपने को एक नागरिक, सर्वोपरि एक इन्सान महसूस करने के लिए एक व्यक्ति को बहुत सावधानी के साथ वातावरण के अनुकूल संवारना आवश्यक है। बाद के हमारे काम में यह एक परम्परा बन गई।

पेत्रेन्को एक बार देर से काम करने आया। उसी शाम मुझे इस बात की सूचना दी गई। मैंने उसके कमांडर को बुलाकर कहा:

"तुम्हारी टुकड़ी का एक सदस्य काम पर देर से आया।"

"हां। पेत्रेन्को देर से आया था।"

"ध्यान रखो कि फिर ऐसी बात न हो।"

"पुनः ऐसी बात नहीं होने पायेगी।"

परन्तु पेत्रेन्को पुनः लेट हुआ। मैंने टुकड़ी को बुलवाया।

"दूसरी बार तुम्हारा पेत्रेन्को काम पर देर से आया।"

मैंने पूरी टुकड़ी को झिड़की दी। उन्होंने वादा किया कि फिर ऐसी बात नहीं होने पायेगी। मैंने कहा:

"तुम लोग जा सकते हो।"

मैंने यह जानने के लिए इस पर ध्यान रखा कि क्या होता है। मैं जानता था कि वे पेत्रेन्को को सुधारने की कोशिश करेंगे और अपनी टुकड़ी के एक सदस्य के नाते, सम्पूर्ण समुदाय के एक सदस्य के नाते उससे बड़ी अपेक्षाएं रखेंगे।

कमांडर परिषद् की बैठकों में आम सभा द्वारा निर्वाचित कमांडर उपस्थित होते थे। परन्तु चाहे कमांडर स्वयं अथवा उसकी टुकड़ी का कोई सदस्य आवे, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता था। हमारा नियम इसी प्रकार का था। हम इसे सुनिश्चित कर लेना चाहते थे कि सभी टुकड़ियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहें। क्या पहली टुकड़ी उपस्थित है? हां, उपस्थित है, परन्तु किसी अन्य कार्य में व्यस्त कमांडर का प्रतिनिधित्व अमुक व्यक्ति कर रहा है। इस व्यक्ति को अपनी टुकड़ी और अपने कमांडर की ओर से बैठक में उपस्थित होने और बोलने का अधिकार प्राप्त था।

श्रेणीकरण किया जाता था। इसे दिखाने के लिए एक विशेष नक़्शा था। प्रत्येक महीने की दूसरी तारीख़ को सभा हुआ करती थी, जिसमें पिछले महीने के विशेष शिष्टाचार के साथ अपना स्थान ग्रहण करनेवाली टुकड़ी को वैजयन्ती भेंट दी जाती। इसी उद्देश्य के लिए तैयार करवाई गई यह वैजयन्ती अनमोल और बहुत ख़ूबसूरत थी और सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी के शयनागार में रखी जाती थी।

टुकड़ियों में सुव्यवस्था, अनुशासन आदि की प्रतियोगिता होती थी। प्रति ६ दिन पर नतीजों की घोषणा की जाती थी। सबसे अच्छी सात टुकड़ियों को थियेटर देखने के लिए टिकट दिये जाते थे। हमारे पास प्रतिदिन ३१ टिकट होते थे। उनके वितरण का तरीक़ा यह था: सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी को ७, उसके बादवाली टुकड़ी को ६, तीसरी को ५ और शेष निचली टुकड़ियों को इसी प्रकार एक-एक कम टिकट दिया जाता था। दूसरे शब्दों में सर्वोत्कृष्ट टुकड़ी को ६ दिन के लिए हर रोज़ ७ टिकट, इसके बादवाली टुकड़ी को ६ टिकट और इसी अनुक्रम से शेष सबसे अच्छी टुकड़ियों को टिकट दिये जाते थे। हमने कभी इसकी कोई चिन्ता नहीं की कि टुकड़ी को ऊपर उठानेवाले अथवा इसे नीचे गिरानेवाले को टिकट मिला। यह काम हमारा नहीं, बल्कि टुकड़ी का था। वे सभी थियेटर देखने जाते। प्रत्येक शाम उन्हें ले जाने के लिए एक बस आती और जिनके पास टिकट होते, वे उसमें बैठ जाते। ड्यूटी पर तैनात कमांडर इसे निश्चित रूप से देख लेता कि उनके पास टिकट हैं, वे ठीक ढंग से कपड़े पहने हुए हैं और जलपान के निमित्त कुछ चीज़ें ख़रीदने के लिए उनके पास एक-एक रूबल है। थियेटर जानेवालों को तीन आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती थी: टिकट, वेष और रूबल और कोई भी उनसे यह नहीं पूछता था कि उनकी टुकड़ी में उनका स्थान पहला था अथवा अन्तिम।

अन्य सभी बातों में भी टुकड़ी का महत्त्व इसी प्रकार का था। सफ़ाई के काम के वितरण को ही लीजिए। वहां सफ़ाई करनेवाले नहीं थे, परन्तु इस बात को दृष्टि में रखते हुए इमारत को बहुत साफ़ और कमरों को चमाचम रखना पड़ता था कि कम्यून में सदैव अपने देश के तथा विदेशी प्रतिनिधि-मण्डल आया करते थे। उदाहरणार्थ, १९३२ में दो सौ टूरिस्ट प्रतिनिधि-मण्डल हमारे कम्यून को देखने आये। निस्सन्देह, कम्यून को बहुत ही साफ़-सुथरा रखने के लिए इससे प्रेरणा प्राप्त होती थी, किन्तु सफ़ाई,

कुछ कहना चाहता हूं। हमें स्कूल में प्रारम्भिक समुदाय को विकसित करने के लिए कम अवसर सुलभ है। वहां कुछ अन्य तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। परन्तु इसके बावजूद मेरा यह दृढ़ विचार है कि एक प्रारम्भिक समुदाय को यह नहीं चाहिए कि वह स्कूल समुदाय को पृष्ठभूमि में धकेल दे अथवा उसका स्थान ग्रहण कर ले और मेरी दूसरी प्रतिज्ञप्ति यह है कि प्रारम्भिक समुदाय के माध्यम से ही मुख्यतः व्यक्ति के साथ सम्पर्क कायम रखना चाहिए, सामान्यतया यही मेरा प्रमेय है और जहां तक पाठ्यक्रम का सम्बन्ध है, स्कूल को इस पर एक दृष्टिकोण और स्कूल का उससे भिन्न दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

आधिकारिक रूप में हम केवल प्रारम्भिक समुदाय के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पर्क में आते थे। यही हमारा तरीक़ा था। परन्तु वास्तव में विद्यार्थी अपने आप हमारे ध्यान का केंद्र बन जाता था।

मेरे सहयोगियों और मैंने अलग-अलग विद्यार्थियों, अलग-अलग व्यक्तियों के साथ कैसे काम की व्यवस्था की?

एक विद्यार्थी के साथ काम करने के लिए उसे अच्छी तरह जानना और सुधारना ज़रूरी होता है। मगर मैं अपनी परिकल्पना में उन व्यक्तियों को समुदाय की सीमा के बाहर बहुत-से मटर के दानों की तरह बिखरा हुआ महसूस करता, यदि मैं इस सामुदायिक कसौटी के बिना उनके सन्निकट होने की कोशिश करता, तो मैं कभी भी उन्हें संभाल नहीं पाता।

मेरे पास पांच सौ विभिन्न व्यक्ति थे। ख़ास परिस्थिति थी। पहले साल मैंने सामान्यतः वही भूल की, जो नौसिखिया से होती है। मैंने उन व्यक्तियों पर ध्यान दिया, जो समुदाय के लिए अनुपयुक्त थे। भूल से मैंने सर्वाधिक ख़तरनाक व्यक्तियों पर ही ध्यान दिया और मैं उन्हीं को ठीक करने में व्यस्त रहा। निस्सन्देह, मेरा ध्यान चोरों, बदमाशों, समुदाय के विरोधियों और, जो भाग जाना चाहते थे, उनकी ओर–दूसरे शब्दों में जिन्हें समुदाय किसी प्रकार त्याग देता, छोड़ देता, उनकी ओर लगा रहा। सचमुच मैंने विशेष रूप से उन पर निगाह रखी। इस दृढ़ विश्वास के साथ मैंने यह किया कि मैं एक बाल-शिक्षक हूं और यह कि मैं विभिन्न व्यक्तियों को संभालना जानता हूं। मैंने बारी-बारी से उन्हें बुलाया, बातें कीं। इत्यादि।

मैंने अपने काम का ढंग बदल दिया। मैंने महसूस

जब मैंने अपने काम में कुछ प्रगति की, जब मैं चोरी और गुन
के सदमे को दूर कर सका, तो मैंने महसूस किया कि दो बदमा
बदमाशों और चोरों को सही रास्ते पर लाना नहीं, बल्कि एक सुनि
प्रकार के नागरिक को विकसित करना, एक जुझारू, सक्रिय, का
व्यक्ति को संवारना मेरे शैक्षिक काम का लक्ष्य है और जिन्हें ठीक
पर लाना आवश्यक है, उनमें से केवल किसी एक व्यक्ति को सुधारने
नहीं, बल्कि जब मैं पूरे समुदाय को सुधार दूं, तभी यह ठोस लक्ष्य प्र
हो सकता है।

कुछ शिक्षक स्कूल में भी यही गलती करते हैं। ऐसे अध्यापक
जो "सामान्य" विद्यार्थियों को अपने आप अपना काम करते रहने
छूट देकर, दुःसाध्य अथवा पिछड़े हुए विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित कर
अपना कर्तव्य समझते हैं। परन्तु प्रश्न यह है: वे क्या काम कर रहे
और इससे वे किस उद्देश्य को प्राप्त करेंगे?

कम्यूनार्डों ने मुझे अपने लिए विशिष्ट शब्दावली तैयार करने में
सहायता पहुंचाई। मैंने नहीं, बल्कि कमाण्डर परिषद् ने पूरे कम्यून
जानकारी के लिए इसे रजिस्टर में अंकित कर समुदाय का निरमि
विश्लेषण किया। मैंने स्वतः कम्यूनार्डों को दो समूहों में विभक्त किया
(१) सक्रिय कम्यूनार्डों का समूह और (२) रिज़र्व समूह।

जाहिर है कि सक्रिय कम्यूनार्डों का समूह वह है, जिसके सदस्य कम्यून
का नेतृत्व करते हैं। वे संवेदनशीलता, तीव्र उत्साह, विश्वास और आकांक्षा
के साथ प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते हैं। वे सच्चे अर्थ में कम्यून का नेतृत्व
करते हैं। परन्तु किसी आकस्मिक, खतरे के पैदा होने की स्थिति में अथवा
एक बड़े आन्दोलन को शुरू करते समय, उन्हें सदा अपने रिज़र्व समूह से
सहायता पाने की आशा रहती है, जिन्हें अभी सक्रिय नहीं, कमाण्डर नहीं
कहा जाता, किन्तु जो शीघ्र ही सहायता प्रदान करते हैं। यही रिज़र्व
समूह है, जो अन्ततः सक्रिय समूह का स्थान ग्रहण करता है।

उसके बाद ऐसे लड़के-लड़कियों का समूह था, जिसे मैंने अच्छे काम
में सहायक हो सकनेवाले निष्क्रिय समूह के रूप में अंकित किया था। उनके
विकास के लिए समय अपेक्षित था, परन्तु फिलहाल वे हमेशा कार्यकर्ता
थे, खेलकूद में भाग लेते थे, किन्तु समाचारपत्र में लिखते न और
सर्किलों का प्रवन्ध करते थे।

और अब हम "दलदल" शब्द के बारे में कुछ कहेंगे, जिसे हमने उक्राइनी भाषा से अपनाया था। पचास अथवा इससे कुछ कम या अधिक व्यक्तियों के समूह के साथ यह शब्द प्रयुक्त होता था, जो किसी प्रकार लड़खड़ाते हुए काम करता रहता था, बिना मन के अपना निर्धारित काम पूरा करता था और यह मालूम नहीं हो पाता था कि उसका मकसद क्या था, उसका दिल और दिमाग किस ओर लगा रहता था।

इस समूह को प्रगति करते हुए देखना सर्वाधिक आनन्ददायक और सुखकर बात थी। मान लीजिए, पेत्रोव अथवा कोई अन्य इस "दलदल" में था। हम उससे यही कहते कि वह "दलदल" में फंसा हुआ है, कि वह कुछ नहीं कर रहा है, किसी चीज में उसकी दिलचस्पी नहीं है, कि वह निस्तेज, स्फूर्तिहीन और सभी बातों के प्रति उदासीन है। और तब टुकड़ी उसे जगाने की कोशिश करती। शीघ्र ही उसे आप पहलकदमी प्रकट करते हुए, किसी चीज में दिलचस्पी लेते हुए और पुनः पहलकदमी प्रदर्शित करते हुए देखते और वह रिजर्व अथवा अच्छे काम में सहायक निष्क्रिय समूह में तरक्की पहुंच जाता।

हमारा सम्पूर्ण कार्यभार "दलदल" और "निकृष्ट" वर्गों को समाप्त करना था।

हमने "निकृष्ट टोली" के विरुद्ध सीधा प्रहार शुरू किया। इसमें कोई रहस्यात्मकता नहीं थी। यह उनके विरुद्ध खुला हमला था। हर छोटे-मोटे अपराध के लिए "निकृष्ट टोली" के सदस्य को डांटा-डपटा जाता था और उसे आम सभा के सामने पेश किया जाता था। इस काम को करने के लिए हमें दृढ़ता और सख्ती का व्यवहार करना पड़ता था।

अधिक दुःसाध्य वर्गों अर्थात् "दलदल टोली" और ह्रासशील वामपक्षियों के सम्बन्ध में व्यक्तिगत उपागम और विविध प्रकार के अन्य उपाय अपेक्षित थे।

अब हम व्यक्तिगत उपागम की चर्चा करेंगे। इस प्रसंग में अनुशिक्षकों और शिक्षकों का समुदाय सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पूर्णतया ठीक-ठीक शब्दों में इस कार्यभार की व्याख्या प्रस्तुत करना बहुत कठिन है। हमारे शिक्षाशास्त्र की शायद यह सबसे बड़ी समस्या है। हमारे शिक्षाशास्त्रीय साहित्य में अधिकांश मामलों में "अनुशिक्षक" शब्द का प्रयोग एकवचन में हुआ है: "अनुशिक्षक को इस प्रकार और उस प्रकार का होना

करते हैं। उनके काम से किस प्रकार के नतीजों की आशा की जा सकती है? समुदाय के विघटन के अलावा और किसी बात की आशा नहीं की जा सकती।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुशिक्षक का चयन बुनियादी महत्व की बात है। यह चयन किस प्रकार करना चाहिए? कतिपय कारणों से इस प्रश्न पर कम ध्यान दिया जाता है। हमारे बीच यह मत प्रचलित है कि कोई भी व्यक्ति यदि उसे अनुशिक्षक के पद पर नियुक्त कर दिया जाये और अनुशिक्षक की तनख्वाह दी जाये, तो अनुशिक्षक हो सकता है। किन्तु इस धारणा के बावजूद यह सर्वाधिक कठिन काम है, जिसके लिए एक व्यक्ति से न केवल अधिकतम प्रयास, बल्कि चरित्र की दृढ़ता और असाधारण योग्यता अपेक्षित है।

वास्तव में जिस ढांचे को खड़ा करने में मैंने वर्षों लगाये थे, उसे जितना एक अयोग्य अनुशिक्षक ने खराब किया, उतना किसी अन्य ने नहीं। और इस कारण बाद के वर्षों में मैंने उनके बिना काम करने अथवा उन्हीं अनुशिक्षकों का उपयोग करने की, जो सचमुच योग्य थे, अपनी दृढ़ नीति बना ली। निस्सन्देह, इससे मेरा काम बढ़ गया।

इसके बाद मैंने अनुशिक्षकों को रखने का विचार बिल्कुल त्याग दिया। सामान्यतया मैं स्कूल के शिक्षकों की सहायता ले लेता था, परन्तु सर्वप्रथम मुझे उन्हें प्रशिक्षित करना पड़ता था। मेरा ख्याल है कि एक व्यक्ति को किशोरों को पढ़ाने का काम सिखाना उतना ही आसान है, जितना उदाहरण के रूप में उसे गणित की शिक्षा देना अथवा पढ़ना या मेज को बनाना, और फलतः मैंने उन्हें शिक्षा दी।

आखिर यह सब कुछ मैंने कैसे किया? सर्वप्रथम एक अनुशिक्षक के चरित्र-निर्माण, व्यवहार, विशेष ज्ञान और उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी पड़ती है। ऐसा न होने पर वह अच्छा अनुशिक्षक नहीं हो सकता और उपयोगी काम नहीं कर सकता। अपनी वाणी का इस्तेमाल कैसे किया जाय, किशोरों से कैसे बातचीत की जाय और उनसे क्या और कब कहा जाय, इन्हें उसे जानना चाहिए। प्रशिक्षण अनिवार्य है। जो अनुशिक्षक, अपने चेहरे की अभिव्यक्ति अथवा अपने मनोभाव का नियंत्रण नहीं कर सकता, वह किसी काम का नहीं होता। कैसे खड़ा होवें, कैसे बैठा जाये, कैसे प्रसन्न अथवा नाराज प्रतीत हुआ जाये, इसे उसे अवश्य

हुए एकजुट होना है। ऐसा न होने पर वास्तव में कोई शैक्षिक प्रक्रिया हो ही नहीं सकती। इसलिए अपने-अपने मनोनुकूल, जैसा जो उचित समझता है, उसके अनुसार काम करनेवाले दस अच्छे अनुशिक्षकों की अपेक्षा एक ही विचार, सिद्धान्त और कार्य-विधि से अनुशासित एवं संयुक्त पांच मामूली अनुशिक्षकों का होना बेहतर है।

इस प्रसग में कई विभिन्न निरूपण हो सकते हैं। मैं समझता हूं कि आप यह जानते हैं कि एक प्रिय शिक्षक कौन होता है। अब मान लीजिए कि मैं स्कूल का एक शिक्षक हूं और सोचने लगूं कि मैं हरेक विद्यार्थी के लिए प्रिय हूं। स्वयं कोई ध्यान दिए बिना मैं किसी नीति का अनुसरण करना शुरू कर दूं। मुझे पसन्द किया जाता है और इस कारण मैं चाहता हूं कि विद्यार्थियों का प्रेम मुझे प्राप्त रहे। मैं उनसे खूब सम्मान प्राप्त करने की कोशिश करता हूं। मैं एक प्रिय शिक्षक बन जाता हूं और शेष शिक्षक किसी के सम्मान के पात्र नहीं बनते।

यह किस प्रकार की शैक्षिक प्रक्रिया है? शिक्षक ने अपने को समुदाय से अलग कर लिया है। उसे खुद इस पर गर्व हो जाता है कि उसे इतना अधिक पसंद किया जाता है कि अपने मनोनुकूल किसी भी ढंग से वह काम कर सकता है।

मैं अपने सहायकों का सम्मान करता था—उनमें कुछ अपने काम में सर्वथा निपुण थे—परन्तु मैं उन्हें यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करता था कि प्रिय अध्यापक होना उनकी महत्वाकांक्षा नहीं होनी चाहिए। व्यक्तिगत रूप से मैंने कभी भी बच्चों का प्रेम प्राप्त करने की कोशिश नहीं की और मेरे विचार से शिक्षक द्वारा अपनी खुशी के लिए उत्प्रेरित यह प्रेम एक अपराध है। हो सकता है कि कुछ कम्यूनार्ड मुझे विशेष रूप से सम्मान प्रदान करते रहे हों, परन्तु चूंकि मेरा मुख्य कार्यभार मेरे चार्ज में रखे गए पांच सौ लड़के-लड़कियों को नागरिक और सहज व्यक्ति बनाना था, इसलिए मैंने इसे उचित नहीं समझा कि स्वयं अपने लिए उनमें भावुक प्रेम की भावना प्रोत्साहित करके इस काम को अधिक जटिल बना दूं।

इस चोंचले, सर्वप्रियता के लिए इस प्रयास, अपने प्रति प्रेम पर इस घमण्ड से शिक्षकों और शिक्षा के काम दोनों का नुकसान होता है। मैंने स्वयं अपने और अपने साथियों को समझा रखा है कि हमारे जीवन में इस प्रकार की किसी चीज़ की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिये।

लिए केवल अवसर है, वह सभी बच्चों के आचरण और चरित्रों को "बुद्धिहीन, नीरस" कहती है और स्वयं अपने को बहुत ही योग्य और श्रेष्ठ बाल-अध्यापिका समझती है। उसके साथ काम करनेवाली अन्य अध्यापिकाएं और शिक्षक उसकी दृष्टि में निकम्मे हैं, एक दूसरी अध्यापिका के बारे अनाड़ी किसी बात को नहीं समझ पाता, दूसरा किसी चीज में कोई दिलचस्पी नहीं लेता, तीसरा बकवासी कामचोर है और चौथा बिल्कुल काहिल है, हेड-मास्टर घमण्डी और डिक्टेटर है। केवल वही पारंगत और सभी त्रुटियों से रहित है।

इससे भी खराब बात यह है कि यह सब कुछ बहुत ही सच मानके से लिखा गया है। पुस्तक में लम्बी उसांसें भरी गई हैं, सम्मान प्राप्त करने की लालसा प्रकट की गई है, प्रेम प्राप्त करने की उत्सुकता प्रकट की गई है और विद्यार्थियों का वर्णन बहुत ही दयनीय ढंग से किया गया है। और इससे ज्यादा एक दूसरी मजेदार बात यह है कि यौनभाव-सम्बन्धी प्रश्नों पर विशेष रूप से अनुपयुक्त ध्यान दिया गया है।

मेरी समझ से कथानक का सारांश इस प्रकार है: एक लड़के ने एक विशेष भाव से एक लड़की की ओर देखा, लड़की ने उसे एक छोटा पत्र लिखा और उस असाधारण बाल-अध्यापिका ने प्रेम के जाल में फंसने के इन प्रयासों को बहुत बुद्धिमानी से ध्वस्त कर दिया और सब की कृतज्ञता प्राप्त की।

इस प्रकार के घमंडी शिक्षक, जो अन्य शिक्षकों से संबंध रखे बिना अपने विद्यार्थियों और समाज के साथ नखरे करते हैं, किसी को शिक्षित नहीं बना सकते। स्कूल के शिक्षकों को जिम्मेदार एवं गंभीर अध्यापक बनाने का एकमात्र तरीका उन्हें एक समुदाय में आबद्ध करना, प्रमुख व्यक्ति–हेड-मास्टर के इर्द-गिर्द एकजुट करना है। यह भी एक गंभीर समस्या है, जिस पर हमारे बाल-शिक्षकों को अधिक ध्यान देना चाहिए।

मगर एक शिक्षक से इतनी अधिक अपेक्षाएं रखनी हैं, तो जो व्यक्ति उन्हें एक समुदाय में एकजुट करता है, उससे इसकी अपेक्षा और भी अधिक अपेक्षाएं रखनी चाहिए।

शिक्षकों का समुदाय कितने समय तक एकसाथ कार्य करता है, यह भी एक महत्त्वपूर्ण शर्त है, और मेरा ख्याल है कि हमारे बाल-शिक्षक इस प्रश्न पर पर्याप्त गंभीरता के साथ ध्यान नहीं देते। यदि औसतन पांच सात

होगी, परन्तु हर सूरत में स्टाफ़ में कम से कम एक गुणवान युवक और एक ख़ूबसूरत नवयुवती तो होनी ही चाहिए।

मैंने अपने स्टाफ़ के सदस्यों के चयन में इसी आदर्श को अपनाया। फ़र्ज़ कीजिए मेरे समुदाय में बाईस शिक्षक थे और एक स्थान ख़ाली था। यदि ये सभी बाईस शिक्षक मेरे समान साधारण आकृति के होते, तो मैं उक्त ख़ाली स्थान को भरने के लिए एक सुन्दर व्यक्ति को चुनता। रुचिपूर्ण दृष्टिकोण से भी विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों की सराहना करनी चाहिए। उन्हें उनके व्यक्तित्व पर भी कुछ मुग्ध होने दीजिए। यह लैंगिक नहीं, बल्कि रुचिपूर्ण, सुखद दृष्टिगत मोहकता होगी।

कितने शिक्षक ख़ुशदिल और कितने उदास होने चाहिए, इस प्रश्न का निर्णय करना भी आवश्यक है। मैं केवल रूखे व्यक्तियों से गठित समुदाय की बात सोच भी नहीं सकता। कम से कम एक ख़ुशमिज़ाज, कम से कम एक हंसमुख शिक्षक तो होना ही चाहिए। शिक्षक वर्ग के गठन को नियंत्रित करनेवाले नियमों के सम्बन्ध में भावी शिक्षाशास्त्र में एक पुस्तक का होना ज़रूरी है।

मेरे स्टाफ़ में तेर्स्की* नाम का एक शिक्षक था। यह सोचकर मैं डर जाता था कि कहीं कोई उसे प्रलोभित करके मुझसे अलग न कर दे। वह आश्चर्यजनक रूप से एक ख़ुशमिज़ाज व्यक्ति था। उसने हम सभी को– विद्यार्थी समुदाय को और स्वयं मुझे– अपनी उल्लासपूर्ण ख़ुशमिज़ाजी से अनुप्राणित कर रखा था। उसमें संगठन-शक्ति का अभाव था, परन्तु मुझे उसे एक सच्चा, एक श्रेष्ठ शिक्षक बनाने में सफलता मिली। वह कभी-कभी विलक्षण चीज़ें कर बैठता था। एक बार जब हम लोग ऑपेरा सुनने जा रहे थे, तो उसे अपने एक साल के बच्चे को गोद में लिये हुए देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गया। मैंने उससे पूछा: "तुम नन्हे बच्चे को अपने साथ क्यों ले

---

*वीक्तोर तेर्स्की– रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र के एक प्रतिष्ठित शिक्षक, जिन्होंने अ० से० माकारेन्को के साथ गोर्की बस्ती और दज़ेर्जीन्स्की कम्यून दोनों स्थानों में काम किया था। वह 'अ० से० माकारेन्को की शिक्षा-पद्धति में शुगल और खेलकूद' और 'बुद्धि-चातुर्य के अनुरूप स्कूली खेलकूद' नामक पुस्तकों के लेखक हैं। ये पुस्तकें सोवियत शिक्षकों को बहुत पसंद हैं। माकारेन्को ने अपने उपन्यासों में उनका नाम पेर्स्की रखा है।

उसने जो-जो दिलचस्प काम किए, उन सबको गिनाना सर्वथा असंभव है। दूसरी दफा उसने उन्हें चुनौती दी: अमुक तिथि को अमुक समय पर तुम लोगों को अपने उत्पादन-मैनेजर गोलोमोन बोरीसोविच.कोगन के जूते का फीता खोलना होगा। जो व्यक्ति इसे करने में सफल होगा, उसे इतने प्वाइंट मिलेंगे।

गोलोमोन बोरीसोविच एक सम्पन्न, सम्मानित व्यक्ति था, वह मोटा होता जा रहा था। उसने नोटिस को पढ़ लिया था और वह गुस्से में था। तीन बजे कम्यूनार्डों ने उसे घेर लिया। उसने उनसे पूछा, "क्या बात है, क्या तुम लोग मुझ पर प्रहार करने जा रहे हो? नहीं, यह कोई तरीका नहीं है।"

उसका कहना ठीक था, यह कोई तरीक़ा नहीं था। वास्तव में युक्ति का प्रयोग करना था। और एक लड़के ने होशियारी से उसके जूते का फ़ीता खोल देने में सफलता प्राप्त कर ली।

तेर्स्की में स्फूर्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी, और किशोरों को सदैव व्यस्त रखने का उसका अपना ही तरीक़ा था।

एक दिन उसने सम्पूर्ण समुदाय को सूचित किया:

"वास्तव में शाश्वत गति को उपलब्ध करना संभव है। मुझे यक़ीन है कि हम एक ऐसा यंत्र बना सकते हैं, जो सतत गतिशील रहेगा।"

उसने इतने विश्वास के साथ अपनी बात कही और अपनी भूमिका इतनी अच्छी तरह निभाई कि इन्जीनियर और प्रशिक्षक भी इस विचार से प्रभावित हो गए और सभी इस यंत्र को तैयार करने के काम में जुट गए।

मैंने तेर्स्की से पूछा:

"इसमें दूर की क्या सूझ है? सभी जानते हैं कि इस प्रकार का कोई यंत्र नहीं बनाया जा सकता।"

"कोई चिन्ता मत कीजिए, उन्हें कोशिश करने दीजिए," उसने उत्तर दिया। "हो सकता है कि उनमें से कोई इसे तैयार कर ले।"

और मैं स्वयं प्रायः यह विश्वास करने लगा कि शाश्वत गति संभाव्य है।

दूसरी ओर स्टाफ में कोई ऐसा भी व्यक्ति होना चाहिए, जो कभी भी न हंसता हो, जो बहुत सख़्त हो, जो कभी भी किसी क़सूर को क्षमा न करता हो और जिसकी आज्ञा की कभी अवहेलना न की जा सके।

"आपको विद्यार्थियों के सामने शिक्षक को नहीं डांटना चाहिए था। आप उसके अधिकार को खत्म कर रहे हैं।"

मेरा ख्याल है कि दायित्व से अधिकार प्रादुर्भूत होता है। यदि एक व्यक्ति को दायित्व का पालन करना पड़ता है और वह सम्मान के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाता है, तो उसे अधिकार प्राप्त हो जाता है। इसी ढंग से, इसी प्रकार आचरण करते हुए, उसे अपना प्रभाव जमाना चाहिए।

बाल-शिक्षक को प्रारम्भिक समुदाय से घनिष्ठतम सम्पर्क कायम करने, इसके सर्वोत्कृष्ट मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने और एक पुराने साथी की भांति इसका पथ-प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए। शैक्षणिक साधना सर्वथा एक जटिल और लम्बी प्रक्रिया है। उदाहरणार्थ, यदि कोई विद्यार्थी अनुशासन भंग करता, अपनी खराब आदतों को प्रकट करता, तो इस अवस्था में मैं सदा इस पर ज़ोर देता था कि शिक्षक को सबसे पहले टुकड़ी को उसकी हरकत की छानबीन करने देना चाहिए। शिक्षक का यह भी काम है कि वह टुकड़ी के कार्यकलाप को प्रोत्साहन प्रदान करे, व्यक्ति के प्रति अधिक सख्त होने के लिए समुदाय को प्रोत्साहित करे।

मैं अलग-अलग शिक्षक के काम के तरीकों के बारे में अब और अधिक विस्तार के साथ कुछ नहीं कहना चाहता, क्योंकि इसमें बहुत अधिक समय लग जायेगा, इसलिये मैं आपको केवल यह बताऊंगा कि स्वयं मैंने एक अनुशिक्षक के रूप में विभिन्न व्यक्तियों के साथ जैसे व्यवहार किया।

एक व्यक्ति के साथ अपने व्यवहार में मैंने उसके सामने ही सब कुछ कहने-सुनने का तरीक़ा पसन्द किया और दूसरों को भी यही ढंग अपनाने का सुझाव दिया। उदाहरणार्थ, यदि कोई लड़का कोई बुरा, घृणास्पद काम करता, तो मैं सीधे उससे कह देता :

"तुम्हारी हरकत निन्दनीय थी।"

जिस प्रसिद्ध शैक्षणिक युक्ति के बारे में बहुत कुछ लिखा जा रहा है, वह वास्तव में आपके विचार की यथार्थता ही होनी चाहिए : मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगा, मैं चिकनी-चुपड़ी बातें नहीं बकूंगा, मैं जो उचित समझता हूं, वही कहता हूं। यही सर्वाधिक सहज, सरल, आसान और प्रभावकारी ढंग है, परन्तु वस्तुतः सदा बोलना उचित नहीं होता।

मेरा ख्याल है कि बातचीत से सबसे कम मदद मिलती है। जब मैं अनुभव करता कि मेरी बातचीत से कोई लाभ न होगा, तो मैं चुप हो जाता था।

"अन्तोन सेम्योनोविच! क्या आपने मुझे बुलाया था।"

"अभी नहीं, रात के ११ बजे।"

वह अपनी टुकड़ी में वापस चला जाता और सभी उस पर प्रश्नों की बौछार लगा देते :

"क्या बात है? क्या डांट पड़ी है? किस लिए?"

और रात में ११ बजने तक वे टुकड़ी में उसे बहुत खरी-खोटी सुनाते। निश्चित समय पर वह मेरे कार्यालय में आता और उस वक्त उसका चेहरा पीला तथा दिन भर की बेचैनी के कारण वह अधीर दिखाई पड़ता।

मैं उससे पूछता :

"क्या तुमने सब कुछ समझ लिया है?"

"मैं समझ गया हूं।"

"तब जाओ।"

इसके अलावा और कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं थी।

दूसरे मामलों में मैंने सर्वथा भिन्न तरीके से काम किया। मैं सन्देशवाहक से कहता :

"उसे फ़ौरन मेरे पास आ जाने के लिए कहो।"

और जब वह मेरे पास आता, तो मैं उसके बारे में क्या सोचता हूं, सब कुछ उसे साफ़-साफ़ बता देता। परन्तु यदि वह मुझ में विश्वास न करनेवाला दुःसाध्य व्यक्ति होता, मुझसे शत्रुता का भाव रखता और मुझे कुछ सन्देह की दृष्टि से देखता, तो मैं उससे बातचीत करने की परेशानी मोल न लेता। इसके बजाय मैं दोषी लड़के के साथ ही कमांडर लड़कों को बुलवा लेता और सर्वाधिक औपचारिक, मधुर लहजे में उसे सम्बोधित करता। मैंने क्या कहा यह नहीं, बल्कि दूसरों ने उसे किस दृष्टि से देखा, यह मेरे लिए महत्त्वपूर्ण बात थी। वह काफ़ी साहस के साथ मेरी ओर तो अपनी नज़र उठा सका, परन्तु अपने साथियों की ओर शर्म के मारे न देख सका।

मैं कहता : "तुम्हारे साथी अब तुम्हें सभी चीज़ें समझायेंगे।"

मैंने उन्हें जो शिक्षा दी है, वे उससे सब कुछ बताते और वह सोचता कि यह उनका अपना ही विचार है।

कभी कभी विशेष तरीक़ा अपनाना पड़ता था। ऐसे भी मामले हुए थे, जब मुझे पूरी टुकड़ी को बुलाना पड़ता था, परन्तु यह बात सब सब

है कि सभी व्यक्ति खाना और पायदान बन्द कर दें। यह दण्ड सर्वथा उपयुक्त था। पूरी टुकड़ी को इससे ठेस पहुंची थी और दूसरे दिन सभी ने एक-दूसरे को यह कहकर चिढ़ाया : "चाय-पार्टी तो बहुत मजेदार रही!"

व्यक्तिगत सदुपचार के ये सभी तरीके हैं। यदि स्वयं विद्यार्थियों की ओर से पहलकदमी हो, तो ये तरीके विशेष रूप से प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। सामान्यतया लड़का या लड़की मेरे पास आती और कहती :

"मुझे आपसे अलग कुछ बातें करनी हैं, यह गुप्त बात है।"

यह सबसे हितकारी और सर्वोत्कृष्ट तरीका है।

परन्तु कुछ मामलों में मैंने मुंह के सामने ही भर्त्सना करने की जगह पाशविक ढंग अपनाने की कोशिश की। जब पूरा समुदाय एक व्यक्ति के खिलाफ़ होता, तो मैं यह तरीका अपनाने का प्रयास करता। इस दशा में दोषी को बुलाकर उसे बुरा-भला कहना उचित नहीं होता, क्योंकि किसी भी पक्ष से उस व्यक्ति को संरक्षण नहीं प्राप्त होता। समुदाय उसके विरुद्ध है और यदि मैं भी उसके खिलाफ़ हो जाऊं, तो वह बिल्कुल निराश हो सकता है।

हमारे समुदाय में लेना नाम की एक सुन्दर, अच्छी लड़की थी, परन्तु वह पथभ्रष्ट हो चुकी थी। शुरू में उसकी वजह से हमें काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा, परन्तु हमारे समुदाय में एक साल रहने के बाद उसमें सुधार होने लगा। और उसके बाद उसकी सबसे अच्छी सहेली को पता लगा कि किसी ने उसके बक्स से पचास रूबल चुरा लिये हैं। सबने कहा कि लेना ने ही चोरी की है। मैंने उन्हें उसकी चीज़ों की तलाशी लेने की अनुमति दे दी। उन्होंने तलाशी ली। तलाशी बेकार रही। मैंने सुझाव दिया कि इस मामले को खत्म समझा जाये।

परन्तु कुछ दिनों बाद वाचनालय में खिड़कियों को बन्द करने के लिए जो चीज़ थी, उसमें ठूसकर और पर्दे से छिपाकर रखे गए ये नोट मिल गए। कुछ किशोरों को एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक लेना को चक्कर काटते और उसे अपने हाथ में कोई चीज़ लिये हुए देख लेने की बात याद थी।

कमांडर परिषद् ने उसे बुलाकर पूछा :

"तुमने रूबल चुराये थे?"

मैंने इसे महसूस कर लिया कि उन्होंने ईमानदारी से इसमे यकीन किया। उन्होंने चोरी के अपराध मे उसे निकाल बाहर करने की माग की। मैं इसे भी समझ गया कि वहा एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था, यहा तक कि लड़किया भी नही, जो सामान्यतया अपनी सहेलियों का पक्ष लिया करती थी, जो उसके पक्ष मे होना पसद करता। यहा तक कि उन्होने भी उसे निकाल बाहर करने पर जोर दिया और मैं समझ गया कि वास्तव मे वही चोर थी। इस बारे मे कोई सन्देह नही था।

यह एक उसी प्रकार का मामला था, जिसमे पार्श्विक तरीका अपनाना पड़ता था।

मैंने उनसे कहा: "नही, तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण नही है कि लेना ने ही रूबल चुराये थे। मैं उसे निकाल बाहर करने की अनुमति नही दे सकता।"

उन्होंने आश्चर्य और क्रोध मे आकर मुझे विस्फारित नेत्रो से देखा। और तब मैंने कहा:

"मुझे यकीन है कि लेना ने चोरी नही की।"

और जब उन्होंने मेरे सम्मुख यह सिद्ध करने की कोशिश की कि लेना ही चोर है, तो मैंने इसे प्रमाणित करने के लिए बहुत ही प्रयास किया कि उसने चोरी नही की।

उन्होंने मुझसे पूछा:

"आप किस आधार पर इतने विश्वास के साथ ऐसा कहते हैं?

"मैंने उसकी आंखों को देखकर – उसकी भावनाओ का अध्ययन कर यह जानकारी प्राप्त की है।"

मैं अक्सर लोगों की निगाहों से अनुमान लगाया करता था और वे इसे जानते थे।

दूसरे दिन लेना मेरे पास आई।

"मेरी ओर से अभियोग का प्रतिवाद करने के लिए आपको धन्यवाद, मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार करना उनकी नीचता थी।"

"तुम कैसे यह कह सकती हो? तुम जानती हो कि तुम्ही ने रूबल चुराये थे।"

मेरा यह तरीका इतना अप्रत्याशित था कि उसका प्रतिरोध समाप्त हो गया। वह बिलख-बिलखकर रोने लगी और उसने सभी बातें स्वीकार

कर गीं। परन्तु यह एक ऐसी गोपनीय बात थी, जिसे केवल हम दोनों जानते थे कि अच्छी तरह इसे समझते हुए कि चोर वही है, मैंने उसे बचाने के लिए ग्राम सभा में असत्य भाषण किया था। इस गुप्त बात से वह पूर्णतया मेरे प्रभाव में आ गई और यथार्थतः शिक्षा प्राप्त करने योग्य बन गई।

मैंने झूठी बात कही। परन्तु मैंने यह अनुभव कर लिया था कि समुदाय ने बहुत निष्ठुर रुख अपना लिया था। सम्भवतः वे उसे निकाल बाहर करते और इस स्थिति को टालने के लिए मुझे यह युक्ति अपनानी पड़ी। मैं इस प्रकार के पाशविक उपायों के विरुद्ध हूं। ऐसा करना खतरनाक है, परन्तु इस मामले में लड़की ने इस तथ्य को महसूस किया कि मैंने उसे बचाने के लिए ग्राम सभा को धोखा दिया था, वह सब इसे जानती थी कि इस गोपनीय बात को हम दोनों ही जानते हैं और इससे शिक्षा के एक पात्र के रूप में वह पूर्णतया विकासमान बन गई। इस प्रकार के पाशविक उपाय काफी विषम और खतरनाक होते हैं। और केवल पग्ले सिरे के मामलों में यह जोखिम उठाना चाहिए।

चौथा व्याख्यान

कामकाजी प्रशिक्षण, समुदाय में सम्बन्ध, कार्य-पद्धति और वातावरण

कार्य-पद्धति और वातावरण-सम्बन्धी अन्तिम परिच्छेद की चर्चा करने के पहले मैं कामकाजी प्रशिक्षण के बारे में अल्प समय में ही कुछ कहना चाहता हूं।

जैसा कि आपको स्मरण होगा, क्रान्ति के बाद शुरू के वर्षों में हमारे स्कूल को श्रम-सम्बन्धी स्कूल की संज्ञा प्रदान की गई थी और हम सभी शिक्षण प्रणाली से उतना नहीं, जितना स्वयं "श्रम" शब्द और श्रम-सिद्धान्त से प्रभावित थे, जिसके प्रति हमारा विशेष आकर्षण था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि परम्परागत स्कूल की अपेक्षा बस्ती से औद्योगिक प्रशिक्षण को लागू करने के लिए अधिकाधिक अवसर सुलभ हुए, परन्तु गोर्की बस्ती और द्जेर्जीन्स्की कम्यून में अपने कार्य-काल के १६ वर्षों में श्रम की शैक्षिक भूमिका और श्रमिक प्रक्रियाओं के संगठन के प्रति अपनी मनोवृत्ति के विकास और यहां तक कि स्वयं श्रम-प्रक्रिया की अपनी समझदारी में मुझे कठिन मार्ग से गुजरना पड़ा।

१९२० में मैं १९३५–१९३६ के उस संगठन की कल्पना भी कभी नहीं कर सकता था, जो श्रम पर ज़ोर देने के साथ द्जेर्जीन्स्की कम्यून में उपलब्ध हो गया था।

मैं विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि श्रम-संगठन और इसके विकास के जिस पथ का मैंने अनुसरण किया, वह सही रास्ता था या नहीं, क्योंकि इस क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने में मैं असमर्थ था और अपने दृष्टिबिन्दुओं, परिवर्तनों और तरीकों को लागू करते हुए अस्थाई रूप से मेरे सम्पर्क में आनेवाले लोगों के अनेक विचारों और दृष्टिकोण के अनुरूप कार्य करना पड़ा। पूरे सोलह वर्षों तक मैं उनके विचारों के अनुकूल कार्य

करने और जिस परिस्थिति में मैं था, उसके अनुरूप अपने को ढालने के लिए विवश था। गोर्की बस्ती में अन्य किसी बात की अपेक्षा अभावजन्य परिस्थितियों के अनुरूप मुझे कार्य करना और आवश्यकतावश, ग़रीबी की स्थितियों में श्रम को लागू करना पड़ा। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में मुझे अपने को अपने वरिष्ठ अधिकारियों के मनोनुकूल ढालने और यहां तक कि उनके द्वारा शुरू की गई प्रवृत्तियों के ख़िलाफ़ संघर्ष भी करना पड़ा।

मेरा विचार है कि मेरे समुदाय के इतिहास में ऐसे क्षण रहे हैं, जिन्हें सर्वथा आदर्श समय कहने का मुझे कुछ हक़ हासिल है। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में १९३० अथवा १९३१ में ऐसा समय था।

मैं उस अवधि को आदर्श काल क्यों कहता हूं? उस समय तक मेरे सभी कम्यूनार्ड एक वास्तविक फैक्टरी में काम कर रहे थे, अर्थात् अपनी औद्योगिक और वित्तीय योजनाओं तथा एक वास्तविक कारख़ाने के सभी रूपों के साथ कार्यक्षम संगठन सहित यह एक उद्यम था: उत्पादन निर्योजन विभाग, रेट-व्यवस्थापन कार्यालय, सभी कामों में कुशल परस्परावलम्बन और तैयार पुर्ज़ों की संख्या, उत्पादन-दर और मानक का नियमित रूप में रखा जानेवाला लेखा।

उस समय अपने व्यय और कम्यूनार्डों पर होनेवाले ख़र्चे को पूरा करके हमारी फैक्टरी को आय होने लगी थी और वह परिसम्पत्ति जमा करने लगी थी। मेरे कहने का अर्थ यह है कि यह यथार्थ रूप में एक फैक्टरी थी। परन्तु कम्यूनार्डों को पगार नहीं मिलती थी। निस्सन्देह यह एक विवादास्पद प्रश्न है और आज भी यह विवाद का विषय बना हुआ है। मुझे किसी ऐसी संस्था की जानकारी नहीं है, जहां कभी भी इस प्रकार का प्रयोग किया गया हो।

उस समय मैं पगार देने के विरुद्ध था। मैं सबको इस बात में भरोसा दिलाने के सरल साधन द्वारा श्रम उत्साह को बढ़ाने में विश्वास करता था कि ऐसा करना समुदाय के हित में है, मैं एक अभियान के उत्साह में नहीं, अमुक सप्ताह अथवा अमुक महीने के छोटी योजना को प्राप्त करने के उत्साह में नहीं, बल्कि समग्र श्रम-सम्बन्धी उत्साह, समुदाय के दृष्टिकोण के लिए निश्चल, अविरल उत्साह में विश्वास करता था, जो बाल शिक्षक से मार्मिक, शारीरिक और सैद्धान्तिक दृढ़ता की अपेक्षा रखते हुए पूर्ण कार्यभार को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करता है...

मैं इस प्रकार के उत्साह का सर्वाधिक शैक्षिक महत्त्व का उत्साह मानता था और मुझे गहरा विश्वास था कि पगार से नैतिक कल्याण का यह चित्र अनिवार्यतः खराब होगा और कुछ हद तक भग हो जायगा।

मैं यह नहीं कहूंगा कि पगार देने की प्रथा लागू करने में किसी प्रकार की अतिरिक्त उपलब्धियां हासिल हुईं और इस कारण मैं अपने दृष्टिकोण का समर्थन करता रहा। मैंने इस बात की ओर संकेत किया कि जब कम्यूनार्ड बिना पगार के काम करते थे, तो योजना में निर्धारित काम से अधिक कार्य करते हुए कार्य दिवस के अपने निश्चित काम की अपेक्षा अधिक काम करते हुए, उनसे जो आशा की जाती थी, उसके अनुरूप सब कुछ करते थे, और यह कि अपने जीवन के भौतिक पक्ष के बारे में उन्हें कोई शिकायत नहीं थी।

परन्तु मैं ऐसे प्रबल विरोधियों से घिरा हुआ था, जो मेरी शैक्षणिक महत्त्वाकांक्षाओं में कोई कम अभिरुचि नहीं रखते थे, परन्तु जिन्हें यह दृढ़ विश्वास था कि पगार देने से कार्य-क्षमता बढ़ेगी और विद्यार्थियों को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और इनके दृष्टिकोण का मेरे वरिष्ठ अधिकारियों ने इतने सक्रिय रूप से समर्थन किया कि इस प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ने के लिए न तो मुझे अवसर प्राप्त हुआ और न मुझ में शक्ति ही थी और फलतः मेरे काम का आखिरी समय पगार देने की स्थितियों में गुजरा।

इसलिए अब मैं उसे त्याग सकता हूं, जिसे शायद मैं श्रम-शिक्षा की नकारात्मक परिस्थितियां कहना पसन्द करूं। मेरे कहने का अर्थ है उत्पादन की कमी, सामुदायिक श्रम का अभाव और उसकी जगह पृथक् प्रयास, जिसके द्वारा श्रम-शिक्षा प्रदान करने की कल्पना की जाती है।

अभी मैं कम्यूनार्डों के उद्योग में लग जाने के बिना ही उनकी श्रम-शिक्षा के बारे में कोई विचार व्यक्त नहीं कर सकता। मेरा अनुमान है कि श्रम के जरिये, जिसका स्वरूप उत्पादनकारी नहीं होता, लोगों को शिक्षित करना संभव है। गोर्की बस्ती के अस्तित्व में आने के बाद इसके शुरू के वर्षों में, अपेक्षाकृत अल्प अवधि में ही मुझे इसका अनुभव प्राप्त हो गया था, जब औद्योगिक क्षेत्र और औद्योगिक उपकरणों के अभाव के कारण मेरे सामने औद्योगिक स्वसेवा और उत्पादन प्रक्रिया से मिलती-जुलती प्रक्रिया से संतुष्ट होने के अलावा कोई चारा नहीं था . हर सूरत में मुझे पूरा यकीन है कि जिस श्रम का लक्ष्य मूल्योत्पादन नहीं है, वह शिक्षा का

नकारात्मक तत्त्व नहीं है और इसलिए जिस श्रम को औद्योगिक प्रशिक्षण कहा जाता है, उसे परिश्रम द्वारा अर्जित मूल्यों की धारणा पर आधारित होना चाहिए।

गोर्की बस्ती में केवल आवश्यकतावश मैं जल्दी में उत्पादन के लिए विवश हो गया। यह कृषि उपज थी। बाल-कम्यूनों की परिस्थितियों में खेती प्रायः एक घाटे का धन्धा होती है। परन्तु दो वर्षों में ही मुझे सफलता प्राप्त हो गई। हमारे फ़ार्म को—इस पर भी ध्यान दीजिए कि गल्ला पैदा करनेवाला नहीं, बल्कि पशुधन फ़ार्म को—लाभकर फ़ार्म बनाने का श्रेय कृषिशास्त्री नि० ए० फ़ेरे की उल्लेखनीय योग्यता और ज्ञान को है। हमारे फार्म में मुख्यतः सूअर-पालन का काम होता था। अन्ततः हमारे फ़ार्म में दो सौ सुअरियां और सूअर तथा उनके कई सौ बच्चे हो गये थे। इस फ़ार्म में बहुत ही आधुनिक साज-सामान था। विशेष रूप से निर्मित बाड़े शयनागारों की भांति साफ़-सुथरे रखे जाते थे, नियमित रूप से फ़र्श को धोया जाता था—पानी बहने की नालियां, मोरी, पाइप और अन्य भी सभी आवश्यक चीज़ों की व्यवस्था की गई थी तथा ताज़ी हवा पहुंचाई जाती थी। वहां ज़रा भी कोई दुर्गंध नहीं थी और सूअरों को पालनेवाले बहुत ठाठबाट से रहते थे। आधुनिकतम साधनों से युक्त और सूअरों के खाने की अच्छी व्यवस्था हो जाने की स्थिति में हमें इस फ़ार्म से काफ़ी आय हुई और हमने न्यूनाधिक भरा-पूरा जीवन व्यतीत किया। अच्छा खाना और अच्छे कपड़े के अलावा हम स्कूल के लिए आवश्यक सभी चीज़ें ख़रीद सके, पुस्तकालय को बढ़ा सके और रंगमंच का निर्माण और इसे सज्जित कर सके। सूअर-पालन के धन्धे के ज़रिये अर्जित धन से हमने अपने हवा-वाद्यों के आर्केस्ट्रा के लिए वाद्ययंत्र और फ़िल्म-कैमरा ख़रीदे—ये ऐसी चीज़ें थीं, जिन्हें हम इस सदी के तीसरे दशक में अपने बजट में सुलभ धन-राशि से कभी भी नहीं ख़रीद सकते थे।

इसके अतिरिक्त हमने अपने भूतपूर्व छात्रों, जिनकी संख्या बढ़ती जा रही थी, अपने उन विद्यार्थियों को, जो उच्चतर स्कूलों में पढ़ रहे थे और आर्थिक कठिनाई में थे, और उनको भी सहायता प्रदान की, जिन्होंने विवाह कर लिया था और अपना घर बसाना शुरू कर दिया था। यात्राओं पर जाना और मेहमानों की ख़ातिरदारी करना भी बहुत ख़र्चीली चीज़ें हैं। हम अक्सर थियेटर जाया करते थे और हम जीवन की सभी अच्छी

ोजों का आनन्द उठाते थे, जिसका अधिकारी एक मेहनतकश सोवियत ागरिक है।

जीवन के लिए जरूरी उन सभी अच्छी चीजों से, जिनका मैंने उल्लेख िया है, उत्पादिता को बढ़ाने मे इतनी विश्वस्त प्रेरणा प्राप्त हुई कि मैंने स समय पगार के बारे मे कुछ सोचा भी नही।

निस्सन्देह मैंने विद्यार्थियों को जेबखर्च देने की जरूरत महसूस की और दि पूर्ण रूप से विचार किया जाये, तो मैं जेबखर्च देने के औचित्य मे हुत यकीन करता हू... जब एक व्यक्ति लौकिक जीवन मे प्रविष्ट करता ;, तो उसे अपने निजी बजट के भीतर रहने का अनुभव प्राप्त होना ाहिए, अपना द्रव्य सर्वोत्कृष्ट ढंग से कैसे खर्च किया जाये, इसका ज्ञान ी उसे होना चाहिए। उसे सद्यः बोर्डिंग स्कूल से आई युवा कुमारी की ांति दुनिया में कदम नही रखना चाहिये, जिसे इस बात की ज़रा भी ानकारी नही होती कि द्रव्य क्या है। परन्तु उस समय सार्वजनिक शिक्षा ी उक्रइनी जन-कमिसारियत ने यह विश्वास करते हुए कि इस ढग से ां उन्हें धनलोलुप होने की शिक्षा दूगा, बस्ती मे रहनेवालों को कुछ भी ेबखर्च देने के विरुद्ध निश्चित दृष्टिकोण अपना लिया और इस कारण ां केवल एक ही ढंग से विद्यार्थी को जेबख़र्च दे पाता था और वह तरीका ह था कि मैं जेबखर्च देने से पहले उससे यह तय करा लेता था कि इस ारे में वह किसी से कुछ नही कहेगा...

किन्तु यह जेबखर्च विद्यार्थियों के उत्पादन के आधार पर नही, बल्कि ामान्यतया समुदाय के प्रति उनकी सेवा के आधार पर उन्हे दिया जाता था।

जब मैं द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में काम करने आया, तो यहा भी मैंने अपने ो उसी स्थिति में पाया, अन्तर केवल यह था कि यहां खेतीबारी का ही, बल्कि दस्तकारी का काम होता था। इस कम्यून में कम्यूनार्ड इस र और भी अधिक निर्भर थे कि वे कितना पैदा कर सकते हैं। प्रेषित खमीने के अनुसार गोर्की बस्ती को राजकीय धन-राशि प्राप्त होती थी, रन्तु द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून को एक पैसा भी नही मिलता था और मेरा ्याल है कि अपने पूरे अस्तित्व-काल में इसने राज्य से कुछ भी नही लिया। और इस कारण किसी अतिरिक्त आराम की चीजें खरीदने की बात तो छोड़िए, इतने खाने की व्यवस्था करना भी, ताकि हम सब भूखे न रहें, पूर्णतया इस पर निर्भर था कि समुदाय कितना पैदा करने में समर्थ था।

दृजेर्जीन्स्की कम्यून में जिन परिस्थितियों में मुझे काम शुरू करना पड़ा, वे बहुत ही विषम थीं, गोर्की बस्ती की अपेक्षा और भी अधिक कठिन थीं, क्योंकि उसे आखिरकार राज्य से सहायता प्राप्त होती थी। दृजेर्जीन्स्की कम्यून का गठन बृहत् पैमाने पर हुआ। शुरू में कुछ हद तक इसकी व्यवस्था दयालुता के आधार पर हुई। फ़ेलिक्स एद्मुन्दोविच दृजेर्जीन्स्की के स्मारक के रूप में भवन का निर्माण हुआ। यह एक बहुत ही ख़ूबसूरत इमारत थी, सोवियत संघ के सुविख्यात वास्तुकार की एक बहुत ही भव्य कृति थी, जिसकी परिकल्पना, अग्रभाग की डिज़ाइन, अलंकरण, खिड़कियों के आकार अथवा इसके किसी भाग में आज भी कोई त्रुटि नहीं पाई जा सकती। भव्य शयनागार थे, शानदार हाल था, अच्छे स्नानागार और स्कूल के कमरे बड़े तथा ख़ूबसूरत थे। कम्यूनार्ड महंगे ऊनी सूट पहनते थे और भावी पहनावे के लिए कपड़े की पर्याप्त व्यवस्था की जाती थी। परन्तु वहां एक भी अच्छी मशीन नहीं लगाई गई थी। फल एवं तरकारियों का कोई बाग़ नहीं था, ज़मीन का कोई टुकड़ा हमें उपलब्ध नहीं था और राज्य से कोई सहायता प्राप्त नहीं होती थी। यह आशा की जाती थी कि सभी चीज़ें अपने आप ठीक हो जायेंगी।

शुरू में उक्रइनी चेका के आदमियों ने अपनी तनख़्वाह से जो कुछ दान दिया, उसी पर कम्यून ने निर्वाह किया। वे अपने वेतन का ०.५ प्रतिशत दान में देते थे, जो कुल मिलाकर करीब दो हज़ार रूबल होता था। और स्कूल को शामिल कर चालू व्यय के लिए हमें प्रति मास चार–पांच हज़ार रूबलों की जरूरत पड़ती थी। दो अथवा तीन हज़ार रूबलों की जो कमी पड़ती थी, उसे कहीं से मैं प्राप्त नहीं कर सकता था, क्योंकि वहां काम करने के लिए कोई स्थान नहीं था। हमारे पास सिर्फ़ तीन वर्कशाप थे–*मोचीख़ाना*, *बढ़ईख़ाना* और *सिलाई का वर्कशाप*–जिनपर शुरू से ही सार्वजनिक शिक्षा की जन-कमिसारियत ने आशा लगा रखी थी। जैसा कि आप जानते हैं, ये तीनों वर्कशाप शैक्षिक श्रम-प्रक्रिया का आधार समझे जाते थे। मोचीख़ाने में कुछ जोड़े लकड़ी के कलबूत, कई तिपाइयां, कुछ सुतारियां और हथौड़े थे, परन्तु न तो एक भी मशीन थी और न चमड़े का कोई टुकड़ा ही। ख़्याल यह था कि हम ऐसे मोचियों को प्रशिक्षित करेंगे, जो हाथ से बने जूते तैयार करेंगे; दूसरे शब्दों में हम ऐसे ...रों को प्रशिक्षित करेंगे, जिनकी अब सर्वथा कोई उपयोगिता नहीं है।

बढ़ईख़ाने मे कई रन्दे सुलभ थे, अर्थात् कुल मिलाकर केवल यही ...ब वहा था और हमसे यह आशा की जाती थी कि हाथ से काम करनेवाले ...च्छे बढ़इयो को हम प्रशिक्षित करेगे।

मिलाई वर्कशाप भी क्रान्ति-पूर्व स्टैण्डर्ड के अनुरूप था, ख्याल यह था ...क हम सुयोग्य गृहणियों को तैयार करेंगे, जो पट्टियों का गोटा लगा लेगी, ...टे हुए कपड़े मे पैवन्द लगा लेगी अथवा सादे ब्लाउज़ सी लेगी।

इसके पहले गोर्की बस्ती मे इस प्रकार के वर्कशाप से मेरा दिल खट्टा ...ो चुका था और यहा मैं अपेक्षाकृत अधिक दुःखी हुआ। मेरी समझ मे ...ह बात नहीं आई कि आख़िरकार वहा इस प्रकार के वर्कशाप की व्यवस्था ...ा क्या उद्देश्य था। और इस कारण मेरी कमाण्डर परिषद् और मैंने अपनी ...रूरत के लिए कुछ यत्रो को रखकर एक सप्ताह के भीतर इन्हे बन्द कर ...या।

शुरू के तीन साल तक द्ज़ेर्जेन्स्की कम्यून को भीषण अभाव ...लना पड़ा। ऐसे भी समय आये, जब केवल सूखी रोटी को ...ोड़कर हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं होता था। आप इस ...थ्य से हमारी भीषण गरीबी का अन्दाज लगा सकते हैं कि वहा ...रु के आठ महीनो मे मुझे तनख़्वाह नहीं मिली और इस कम्यून के ...प सदस्यो की भांति मुझे भी केवल सूखी रोटी पर गुजर करना ...ड़ा... ऐसे भी क्षण आये, जब कम्यून मे एक पैसा भी नहीं होता था ...और तब हम "भीख मागने" को विवश हो जाते थे। और क्या आप ...ल्पना कर सकते हैं कि बावजूद इसके कि हमने इस अभाव को काफी ...ष्टदायक और अरुचिकर समझा, यह श्रम के विकास मे अपूर्व प्रोत्साहन ...सिद्ध हुआ। चेका के आदमियो ने न तो तख़मीने के आधार पर हमें रखने ...और न हमारे विद्यार्थियो पर होनेवाले व्यय के लिए जन-कमिसारियत से ...पये लेने की बात कहना स्वीकार किया – और मैं इसके लिए उनका बहुत ...ृतज्ञ हूं। उनके लिए आर्थिक सहायता मागना वास्तव मे शर्म की बात ...होती: कहा जाता कि उन्होने कम्यून का गठन तो कर लिया, परन्तु वे ...कम्यूनार्डो के भोजन की कोई व्यवस्था नहीं कर पाये। और इस कारण ...हमने स्वयं कुछ रुपये अर्जित करने मे अपना पूरा प्रयास लगा दिया – हम ...धन कमाने की स्पष्ट इच्छा से उत्प्रेरित हुए।

उस पहले साल हमने बढ़ईखाने मे कुर्सियां, बक्स और अन्य चीजें

तैयार करते हुए काफी परिश्रम किया। इन चीज़ों के ग्राहक भी थे। हमारी कारीगरी काफ़ी ख़राब थी, ग्राहक असंतुष्ट थे और सामान्यतया हमें नुकसान उठाना पड़ता था। हम जो मूल्य मांगते थे, उनसे किसी प्रकार सामग्रियों, बिजली, कीलों और सरेस पर होनेवाला ख़र्च निकल आता था और हम स्वयं मुफ़्त काम करते थे।

एक सुखद संयोग से हमें सहायता प्राप्त हो गई। हमने सोलोमोन बोरीसोविच कोगन को अपने उत्पादन-विभाग के मैनेजर के पद पर काम करने के लिए अनुरोध किया। जहां तक शिक्षण का सम्बन्ध था, वह सर्वथा सिद्धान्तहीन व्यक्ति था, परन्तु था बहुत ही कर्मठ। इस कामरेड के प्रति मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं और महसूस करता हूं कि प्रशिक्षण-सम्बन्धी अपने सिद्धान्तशून्य रुख़ के बावजूद उसने जो सर्वथा नये शैक्षणिक सिद्धान्त लागू किए, उनके लिए किसी समय मुझे उसके प्रति अपनी विशेष कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए।

उसने मुझसे जो पहली ही बात कही, वह मुझे विलक्षण प्रतीत हुई। वह तोंदियल, भारी-भरकम और बहुत ही उद्योगी व्यक्ति था।

"आख़िर यह भी क्या बात है? क्या डेढ़ सौ कम्यूनार्ड, तीन सौ हाथ अपने लिये एक कटोरा शोरबे के लिए भी पैसे अर्जित नहीं कर सकते? यह कैसे हो सकता है? उन्हें जीविकोपार्जन का तरीका जानना ही होगा, इससे भिन्न कोई बात नहीं हो सकती।"

यही वह सिद्धान्त था, जिसकी उपयुक्तता में मैं पहले सन्देह किया करता था। एक महीने के भीतर ही कोगन ने सिद्ध कर दिया कि उसका कथन ठीक था। यह सच है कि मुझे उसकी बात मानकर अपने कई शैक्षणिक विचारों को छोड़ना पड़ा।

वास्तव में उसने जोखिम का काम शुरू किया। निर्माण-संस्थान के कार्यालय में जाकर उसने कहा कि वह फ़र्नीचर के लिए आर्डर ले लेगा।

इस प्रकार का प्रस्ताव करने के लिए उसके पास सर्वथा कोई आधार नहीं था। हम फ़र्नीचर बनाना नहीं जानते थे और हमारे पास कोई साज-सामान, कोई यंत्र और कोई सामग्री नहीं थी। हमारे पास केवल सोलोमोन बोरीसोविच कोगन और डेढ़ सौ कम्यूनार्ड थे।

सौभाग्य से संस्थान के लोग विश्वास-प्रवण एवं सरल थे और उन्होंने सोलोमोन बोरीसोविच का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

कोगन ने कहा :

"तब आपको क्या-क्या चीजें चाहिए, उनका आर्डर दीजिए।"

आर्डर दे दिया गया—व्याख्यान कक्षों के लिए विभिन्न प्रकार की कई
ार चीजें, इतनी मेजें, इतनी कुर्सियां, किताबों को रखने की इतनी
लमारियां, इत्यादि। जब मैंने दो लाख रूबल के आर्डर देखे, तो मेरी
हली प्रतिक्रिया यह थी कि डाक्टर को फोन करके बुलाऊ अथवा कम-स-
म यह देखूं कि कोगन को कितना बुखार है।

मैंने उससे पूछा :

"इसे कैसे पूरा पाओगे?"

उसने उत्तर दिया :

"हम प्रबन्ध कर लेंगे।"

"परन्तु फिर भी हम कैसे काम शुरू करेंगे? हमें रुपयों की जरूरत
ड़ेगी और तुम जानते ही हो कि हमारे पास कुछ नहीं है।"

उसने कहा :

"यह तो सामान्य बात है। एक व्यक्ति सदा जो पहली बात कहता
है, वह यही कि 'परन्तु रुपये तो हैं नहीं'। और उसके बाद उसे वही
े यह प्राप्त हो जाता है और हम भी कुछ रुपये प्राप्त कर लेंगे।"

"परन्तु कहां से? कौन हमें रुपये देगा?"

"क्या इस दुनिया में हमें रुपये देनेवाले कोई भोले-भाले व्यक्ति
नहीं हैं?"

और क्या आप सोच सकते हैं कि उसे रुपये मिल गए। धृष्टता के
लिए क्षमा करें, उसे उसी संस्थान में एक भोला-भाला आदमी मिल गया,
जिसने कोगन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

कोगन ने उस आदमी से पूछा :

"हम जो फ़र्नीचर तैयार करेंगे, उसे कहां रखेंगे। आप तो अभी केवल
अपनी इमारत की नींव डालने के लिए खुदाई करवा रहे हैं। फर्नीचर शीघ्र
ही तैयार हो जायेगा, प्रश्न यह है कि उसे कहां जमा किया जाये।"

उस व्यक्ति ने कहा था :

"सचमुच इसे जमा करने के लिए कोई जगह नहीं है।"

"खैर, कोई बात नहीं, हम इसे अपने ही यहां रख लेंगे।"

"क्या इसके लिए तुम्हारे पास जगह है?"

"जगह तो नहीं है, परन्तु हम एक गोदाम बनवा सकते हैं। हमें इसके लिए ५० हजार रूबल की ज़रूरत होगी।"

"ठीक है, ये हैं पचास हजार रूबल," उस व्यक्ति ने कहा था।

ख़ैर, हमें पचास हजार रूबल प्राप्त हो गए और हमने इस धन से यंत्र और सामग्री ख़रीदी। कोगन ने संस्थान से पेशगी भुगतान के रूप में कुछ और रुपए प्राप्त कर लिए और कुर्सियां तैयार कराने का काम शुरू कर दिया, जो बनाई हमारे ग्राहक के लिए नहीं, बल्कि बाज़ार में शीघ्र बेचने के लिए तैयार की जा रही थी। वे साधारण कुर्सियां थीं। शुरू में वे बेढंगी और इस्तेमाल लायक बिल्कुल नहीं थीं, परन्तु कोगन ने कहा कि कम्यूनार्ड कुर्सी बनाना सीख जायेंगे और इस बीच वे कुर्सियों की पटिया तैयार कर सकते हैं। और उसने श्रम-विभाजन की प्रथा लागू की। मुझे इसके बारे में बहुत सन्देह था।

उसने श्रम का विभाजन इस प्रकार किया: एक लड़का लकड़ी पर रन्दा करके उसे चौरस करता, दूसरा उसे चीरकर पटिया बनाता, तीसरा काट-छांटकर ठीक करता, चौथा पालिश करता, पांचवा जांच करता, इत्यादि। किन्तु यह उन्हें धन्धा सिखाना नहीं था और उन्होंने कहना शुरू किया कि वे कुछ भी नहीं सीख रहे हैं। आम सभा में सब की राय यह थी कि जो काम वे कर रहे थे, वह उपयोगी था, उन्हें कम्यून की भलाई के लिए इसे करना ही था, परन्तु इसके साथ ही इससे उन्हें लाभ पहुंचना चाहिए और इस हुनर को सीखना चाहिए, जबकि केवल पटिया करने से वे कुछ भी नहीं सीख रहे हैं।

सोलोमोन बोरीसोविच कोगन ने सिद्ध कर दिया कि वह वास्तव में अपना काम जानता है। उसने एक कुर्सी तैयार करने के काम को दस हिस्सों में बांट दिया और प्रत्येक कम्यूनार्ड को अलग-अलग एक ही ख़ास काम करना पड़ता था। फलतः हम बहुत बड़ी संख्या में कुर्सियां तैयार करने लगे।

शीघ्र ही हमारा प्रांगण कुर्सियों से भर गया, जिनके सम्बन्ध में यह भी ज़रूर कहना चाहिये कि वे बहुत ही साधारण क़िस्म की थीं। शुरू में कोगन अधिकांशतः आख़िरी पालिश आदि पर भरोसा करता था, जिसे वह बाद में किया करता था: गोंद और बुरादों से उसने जोड़ने का विशेष मसाला तैयार किया और इससे कुर्सियों में जोड़ की जगहों पर जहां-तहां

सुराख रह जाते थे, उन्हे भर देता और तब लकडी पर पालिश कर दिया करता था, इत्यादि। किसी प्रकार उसने ५० हजार रूबल की प्रारम्भिक पूंजी का सदुपयोग किया और छ महीने मे हमारे पास दो लाख रूबल हो गए। उसके बाद उसने अधिक यत्न और सामग्री खरीदी और वह थियेटर-भवन का फ़र्नीचर तैयार करने लगा।

बाद मे सप्लाई मैनेजर के पद पर नियुक्त होने के बाद—यह ऐसा काम था, जिसमे वह अपने ज्ञान और प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट उपयोग कर सका—सोलोमोन बोरीसोविच हमारे बीच कम दृष्टिगोचर होता था। उसका स्थान ग्रहण करने के लिए एक नया इंजीनियर आ गया, परन्तु फिर भी मेरा यह विश्वास बना रहा कि कोगन का श्रम-विभाजन उपयोगी था। पहली दृष्टि मे यह अवसादकारी दृश्य प्रतीत होता है, परन्तु कुछ समय तक ध्यान देने पर आप महसूस करेंगे कि इसमे कोई विकटता नही है। प्रत्येक लड़का और लड़की कुछ समय तक एक ही प्रकार का काम करती है—आप सोचेंगे कि यह शायद ही कोई हुनर सीखना है—परन्तु कुछ साल बाद जब विद्यार्थी कई विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने का अभ्यास प्राप्त कर लेता है और उस अवस्था मे पहुच जाता है, जब यह विश्वास किया जाता है कि वह आखिरी तथा सर्वाधिक मुश्किल काम जैसे जोडने का काम ठीक ढंग से कर लेगा, तो यथार्थत: वह एक बहुत ही कुशलता प्राप्त ज्वाइनर हो जाता है और इस प्रकार के कुशल मजदूर की जरूरत केवल कुटीर उद्योग मे नही, बल्कि बड़े पैमाने के सामाजिक उत्पादन मे भी पड़ती है।

इसमे कोई सन्देह नही है कि यदि मै बढ़ईगिरी तक ही काम को सीमित रखता, तो मेरे कम्यूनार्ड केवल बढ़ईगिरी की फ़ैक्टरियों मे, और ध्यान दीजिए कि केवल उन फ़ैक्टरियों में, जहा कई हिस्सों में काम का विभाजन हुआ हो, काम करने के लिए उपयुक्त होते। परन्तु हमारा धन्धा इतना सफल रहा, मेरे कहने का अभिप्राय यह ... बढ़ाने मे हमे इतनी सफलता मिली कि हमारे ... काम करने के बाद ही हम चेका के ... धन्यवाद दे सके और सम्पन ... देने की बात उनमे ... लाख रूबल जमा

फर्नीचर बनाने में हमें इतनी सफलता मिली। और अब हमारी ट्रेगियल बैंक में हमारे छ: लाख रूबल जमा हो जाने से हम पर आश्रित रहनेवाली एक संस्था ही नहीं, बल्कि एक स्थिर उद्यम चलानेवाली संस्था भी हो गई थी, जिस पर यकीन किया जा सकता था।

बैंक ने हमें फ़ैक्टरी बनाने के लिए ऋण दिया। १९३१ में हमने अपनी पहली फ़ैक्टरी खड़ी की। सूक्ष्म ड्रिल, जिन्हें हम उस समय तक विदेश से मंगाते थे, तैयार करनेवाली धातुकर्मक उद्योग-सम्बन्धी यह एक व्यवस्थित फ़ैक्टरी थी। प्रत्येक ड्रिल का अपना मोटर, १९० पुर्जे और बहुत-से गियर-पहिये होते थे, जिनके लिये मिलिंग और गियर-कटिंग दोनों प्रकार की मशीनों की जरूरत थी, जुड़ाई और ढलाई का काम बहुत ही जटिल था, परन्तु इसके बावजूद श्रम-विभाजन के अनुभव पर भरोसा रखते हुए हमारे कम्यूनार्ड बहुत ही कम समय में धातुकर्म प्रक्रियाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हो गए। एक ही पुर्जे को तैयार करने में संलग्न तथा इस प्रक्रिया में दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील एक व्यक्ति का मनोभाव भी इस सम्बन्ध में उपयोगी सिद्ध हुआ। उन बहुत ही जटिल मशीनों को चलाने का ज्ञान प्राप्त करने में उन्हें छः हफ़्ते से अधिक समय नहीं लगा और आपरेटर तेरह अथवा चौदह वर्ष के लड़के-लड़कियां थीं।

इस उद्यम से हमें इतनी सफलता मिली कि हमने एक दूसरी फ़ैक्टरी, फोटोकैमरा तैयार करनेवाली फ़ैक्टरी को खड़ा करना शुरू कर दिया। इस बहुत ही जटिल फ़ैक्टरी में कम्यून-निर्मित उपकरण थे। वर्तमान फ़ैक्टरी कम्यून की अपनी ही है। यहां आप ऐसी मशीनों को देख सकते हैं, जो सभी फ़ैक्टरियों में नहीं होतीं। माइक्रान तक सूक्ष्म पुर्जों की अपेक्षा करनेवाली यह उत्पादन-प्रक्रिया बहुत ही जटिल है, अर्थात् इस उद्यम में विशेष यंत्रों के एक पूरे सेट और सत्यापन की बहुत ही कुशल तकनीक की आवश्यकता पड़ती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हमने श्रम-विभाजन करके कुर्सियां तैयार करने का अपना काम शुरू न किया होता, तो हम इस प्रक्रिया में दक्षता प्राप्त नहीं कर पाते। मैंने अनुभव किया कि किस चीज को तैयार करके आप अपना काम शुरू करते हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है, वास्तव में ख़ास बात है किसी उत्पादन का औचित्य, जो इन नवीनतम आधार-सामग्रियों पर आधारित है: श्रम-विभाजन और योजना।

जिस व्यक्ति का उद्योग से कोई सम्बन्ध नही है, उसके लिए यह समझना कठिन होगा कि उत्पादन-योजना क्या है। इसमें केवल यही बात निश्चित नही की जाती कि इतनी मेजें और कुर्सियां जरूर तैयार करनी है। यह कोटा और सम्बन्धो की सम्मिलित क्रिया है। यह विभिन्न भागो, विभिन्न पुर्जों, एक मशीन से दूसरी मशीन तक की गति की द्योतक सम्मिलित क्रिया है। योजना मे उपकरण, सामग्री की क़िस्म, इसकी डिलीवरी, यंत्रो की निकासी, कटर को तेज़ करने, स्टाक की पुन:पूर्ति तथा अन्तिम, परन्तु किसी भी दृष्टि से नगण्य नही, तकनीकी नियंत्रण की व्यवस्था की जाती है, जिसका अर्थ एक अच्छी फैक्टरी में उपायों, कोटा और परिस्थितियो का जोड भी है। मानवीय क्रिया-कलाप को विनियमित करनेवाली उत्पादन-सम्बन्धी योजना सर्वाधिक जटिल साधन है। और इस साधन की जटिलताओ की जानकारी प्रदान करने के लिए ही अपने नागरिकों को प्रशिक्षित करना चाहिए, क्योंकि वे कुटीर उद्योग में नहीं, बल्कि तकनीकी कार्य-क्षमता के सर्वोच्च स्तर पर संगठित बड़े पैमाने के गम्भीर

"गेओगराफ़र" बोलोद्या कोविन का जीवन-क्रम इसी प्रकार का था, जिसका काम पहले दूसरा किसी को मेरे सामने प्रस्तुत करना था।

इस रास्ते को पार करने में एक प्रौढ़ व्यक्ति को दस साल तक लग जाते, परन्तु एक लड़के अथवा लड़की को इसे पार करने में एक या दो साल से अधिक नहीं लगता। मैंने उनके लिए जो पथ चुना था, वह कठिन था, और शुरू में यह अविश्वसनीय प्रतीत हुआ कि वे इतनी तीव्र प्रगति करेंगे। जहां तक लड़कियों का सम्बन्ध है, मुझे यह कहना है कि वे लड़कों की भांति शीघ्र ही स्नातकोत्तरवर्ती स्तर पर पहुंच जाती हैं, लेकिन धातुकर्म में नहीं, बल्कि जुड़ाई, फिटिंग और अन्य हल्के शारीरिक काम, विशेष रूप से लेन्सों के उत्पादन में, अर्थात् जिस काम में सुनिश्चितता और सफ़ाई पर जोर दिया जाता है, वे उन कार्यों में लड़कों से बेहतर थीं। डिज़ाइन करने में लड़कों की प्रतिभा उनकी विशेषता थी और जटिल प्रक्रियाओं में सूक्ष्मता तथा कुशलता लड़कियों की खूबी थी। लेन्सों का उत्पादन उनका विशेष कार्य-क्षेत्र था, क्योंकि लड़के इस काम को पूरा करने में असमर्थ थे। सूक्ष्मतम पुर्जों को फिट करने की प्रक्रिया में गति की सुनिश्चितता और तीव्र दृष्टि के अलावा पटल पर पुर्जे ठीक क्रम से रखने की आवश्यकता है। और इस प्रक्रिया तथा उत्पादन के संगठन में लड़कियां लड़कों को बहुत पछाड़ देतीं।

सामान्यतया हमारे लड़के त्याग की भावना से काम करनेवाले धातुकर्मी थे। इसके विपरीत लड़कियों में धातुकर्म से भावनाएं नहीं जागृत होती थीं। लोहा, तांबा, निकल को देखने और उनके स्पर्श से ही सदा एक लड़के के हृदय का स्पन्दन हो जाता था। इसके प्रतिकूल लड़कियों ने मिलिंग मशीनों और विशेष रूप से ऐसी मशीनों से अपने को दूर रखने की कोशिशें कीं, जहां उन्हें अपने कपड़े पर तेल और मैल लग जाने की आशंका बनी रहती थी।

हमारी छात्राओं ने ढलाईघर में काम करने की कभी कोशिश नहीं की।

ख़ैर, वे इस प्रकार के काम थे, जिन्हें मेरे समुदाय ने अपने अन्तिम साल में करना शुरू किया था।

. यदि आप इस काम पर शैक्षणिक प्रक्रिया की परम्परागत समझदारी के दृष्टिकोण से विचार करेंगे, अर्थात् विद्यार्थी यहां है और उसका शिक्षक वहां है, तो शायद यह व्यवस्था ग़लत ढंग की लगे, परन्तु अगर आप

उसकी आंखें, हाथ और मशीनी औजार इतने अभ्यस्त तालमेल से काम करते कि उसके कार्य को जाचने की कोई जरूरत न होती। मशीनी औजार के बारे मे उसका ज्ञान परिपक्व था। उत्कृष्ट ग्राइडर अब एक शल्यचिकित्सक है और अब भी मैं उसके जीवन-दर्शन मे सूक्ष्मता के प्रति उसके बड़े सम्मान की भावना को अनुभव करता हूं। अन्य भूतपूर्व कम्यूनार्डों का अवलोकन करते समय मैं उनमें उन मनोभावों और प्रवृत्तियों की *अभिव्यक्ति पा सकता हू, जो उन्होंने हमारे विभिन्न संगठनात्मक* और औद्योगिक कामों के जरिये अर्जित की थी।

एक ऐसे समुदाय को, जिसकी अपनी फैक्टरी हो और इसके लिए जवाबदेह हो, संगठन का अभ्यास हो जाता है, जो सोवियत संघ के एक नागरिक के लिए शायद सबसे ज्यादा जरूरी है। प्रत्येक आम सभा, कमांडरों के प्रत्येक उत्पादन-सम्बन्धी सम्मेलन, सामूहिक एव निर्माणशालाओ की बैठको अथवा सर्वथा प्रतिदिन की बातचीत मे व्यवस्था करने की इस योग्यता का प्रयोग किया जाता है और अनिवार्यतः समुदाय प्रत्येक मजदूर और प्रत्येक कम्यूनार्ड से दायित्वपूर्ण रुख अपनाने की अपेक्षा रखने का आदी हो जाता है। अगर आपको उत्पादन की सभी जटिलताओं को दृष्टि मे रखना पड़ता है, तो उसी प्रकार आपको उत्पादन के प्रति एक व्यक्ति के मनोभावों की जटिलताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। आम सभा में, जिस मे यांत्रिक शाप, प्लास्टिक शाप, मशीनों के पुर्जे बनानेवाली शाप और औजार-निर्माण शाप के प्रशिक्षार्थी उपस्थित रहते थे, उसमे फर्ज कीजिए कुछ पुर्जों की न्यून सप्लाई का प्रश्न कोई उठा देता। मशीनों के पुर्जे जोड़ जानेवाले विभाग के लडके मंच पर बोलने आ जाते और *जिनका इस विषय मे कोई सम्बन्ध नही था, उन्हें यह कहने के* लिए निमन्त्रित करते कि उनका इस सम्बन्ध में क्या विचार है। वे खड़े हो जाते और अपने सुझाव प्रस्तुत करते, मेरे कहने का अर्थ यह है कि वे यह समझते थे कि किन पुर्जों की कम सप्लाई की गई है और उन्होंने सगठक के रूप मे भाषण किए।

उन्होंने वर्कशाप मे काम के दौरान अपनी संगठन-सम्बन्धी योग्यता का और भी अधिक इस्तेमाल किया। मिलिंग मशीनों को चलाने वाले में लेने भमर भी अच्छा संगठक और प्रबन्धक होना जरूरी है।

मैं महसूस करता हू कि इस प्रकार के उत्पादन की व्यवस्था करना

ज़िम्मेदार हूं। इस स्थिति में पगार किसी भी रूप में एक तरह
अतिरिक्त सन्तोष है और एक अच्छे समुदाय में वे बिना पगार के
अतिरिक्त सन्तोष प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें अपना पगार मुझे दे देने
मेरी अनुमति से इसे व्यय करने के प्रयास में मैं सफल हो गया। आम
ने इस आशय का प्रस्ताव पास किया। और कम्यूनार्ड सब के लिए
पगार पाने की अपेक्षा अपने बचत खाते में भविष्य के लिए अपने
को जमा करने में अधिक उत्सुक थे।

पिछले समय हमने प्रत्येक कम्यूनार्ड के लिए कमाण्डर परिषद् को
में अपने पगार का दस प्रतिशत दान देने का नियम बना दिया। यह को
छोटी बात नहीं थी. प्रत्येक व्यक्ति के मासिक पगार में दस प्रतिशत बा
रकम होती थी।

और इस प्रकार हमने बहुत शीघ्र एक कोष का निर्माण कर लिया। य
किसी की निजी सम्पत्ति नहीं थी, इसे व्यय करने का अधिकार कमाण्
परिषद् को था। सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति और भूतपूर्व कम्यूनार्ड
को सहायता प्रदान करने के काम में मुख्यतः इस द्रव्य का उपयोग किय
जाता था।

आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि कमाण्डर परिषद् द्वारा इस
प्रकार के निर्णय की घोषणा सुनकर कितनी ख़ुशी प्राप्त होती थी: "इवान
वोल्चेन्को में संगीत-सम्बन्धी अच्छी प्रतिभा है, उसे संगीत विद्यालय में
भेजना चाहिए और संगीत की शिक्षा प्राप्त कर लेने तक हम प्रतिमाह उसे
१०० रूबल अतिरिक्त देंगे।"

द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में इस प्रकार के दर्जनों वज़ीफ़े प्रदान किये जाते
थे। जिस साल मैं वहां से हटा, सौ लड़के-लड़कियों को अतिरिक्त मासिक
वज़ीफ़े मिलते थे। यदि किसी के मां-बाप और सम्बन्धी हों, तो राज्य
द्वारा प्रदत्त निर्वाह-वज़ीफ़ा पर्याप्त होता था। यदि एक व्यक्ति केवल अपने
पर ही निर्भर हो, तो यह काफ़ी नहीं है। कम्यूनार्डों के लिए विद्यार्थियों
को इस आधार पर पचास से सौ रूबल तक का वज़ीफ़ा देना कि वे अपना
कार्य किस प्रकार कर रहे हैं और वे किस साल में हैं, अच्छा और मानवीय
कार्य था।

इस कोष से उन भूतपूर्व कम्यूनार्डों को भी द्रव्य भेजा जाता था,
जो ज़रूरतमन्द होते थे, बशर्ते कि इसका कारण आलस्य नहीं,
हो। जब तक सभी प्रशिक्षित व्यक्ति अपने आप दुनिया में क़दम रखने

के लिए सर्वथा कुशल नहीं हो जाते थे, तब तक इस प्रकार के काम की बदौलत कम्यून उनके भविष्य को क्रमबद्ध रख पाता था।

कम्यूनार्ड इस द्रव्य को अर्जित करते थे। मैं उनके साथ जितने साल रहा, एक बार भी मैंने खुले या किसी संकेत से एक भी कम्यूनार्ड को अपने पगार का दस प्रतिशत उक्त कोष में देने पर कुढ़ते हुए नहीं सुना। मैं आपको यह भी बता दूं कि इस कोष से प्रत्येक कम्यूनार्ड के लिए बिस्तर, कम्बल, ओवरकोट, ६ कमीजें और एक सूट खरीदा जाता था। संक्षेप में घर से बाहर निकलते समय हर मां अपने बेटे के लिए जो कुछ खरीदती है, वे ही चीज़ें कम्यूनार्ड के लिए खरीदी जाती थी।

इस प्रकार का कोष, जिसके द्वारा कम्यूनार्डों के जीवन का दिशा निर्देश हो सकता है, हमारे ऐसे हज़ारों शैक्षणिक संस्थाओं में अच्छा है जिनकी व्यावहारिक उपयोगिता की अभी परख होना है।

उनके पगार का शेष ६० प्रतिशत बचत बैंक में सामान्यतया जमा कर दिया जाता था और प्रशिक्षण के समय तक प्रत्येक कम्यूनार्ड के पास एक हजार रूबल तक हो जाने की आशा रहती थी। कम्यून में वे नकद रुपया नहीं पा सकते थे और बिना मेरे हस्ताक्षर के वे बैंक से कुछ भी नहीं निकाल सकते थे। ऐसे भी कम्यूनार्ड थे, जो हमारे साथ रहते हुए पांच या छः साल में अपना प्रशिक्षण पूरा करने तक दो–ढाई हजार रूबल तक बचाकर प्राप्त करते थे। उनके पगार का छोटा अंश जेबखर्च के रूप में उन्हें दे दिया जाता था। हम हर साल यात्रा पर जाया करते थे। मैं इन यात्राओं को बहुत महत्त्वपूर्ण मानता था, जो साधारण यात्राएं नहीं, बल्कि अपने आप में बहुत बड़ा कार्य था। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून के कम्यूनार्डों ने इस प्रकार की छः यात्राएं कीं। हम उनकी योजना इस प्रकार बनाते थे: पहले हम ट्रेन से जाते थे, उसके बाद कम-से-कम ८० से १०० किलोमीटर की यात्रा पैदल करते थे, खेमे गाड़ देते थे और वहां कुछ समय तक रहते थे और फिर उतनी ही दूर पैदल पीछे वापस लौटते थे और तब ट्रेन से शेष दूरी तै करके कम्यून वापस आते थे। पतझड़ में हम यह तय करते थे कि किस रास्ते से यात्रा करेंगे। अगली गरमी के मौसम के लिए इसी प्रकार की संभावना का होना बहुत महत्त्वपूर्ण होता था। जब आप भी गरमी की छुट्टी व्यतीत करने की योजना बनायेंगे, इसके बारे में सोचेंगे और इसके लिए

तैयारियां करेंगे, तो आपके सम्मुख भी ठीक इसी प्रकार की सुखद समस्या प्रस्तुत होगी। हमारा समुदाय इसी प्रकार अपनी तैयारी करता था। जब गरमी की छुट्टी के लिए हमारी फैक्टरी बन्द होती थी, तो हम ठीक-ठीक यह जानते थे कि कैसे और कहां अपने अवकाश का समय व्यतीत करें।

मैंने उन यात्राओं को बहुत ही उपयोगी पाया। मैंने शैक्षिक वर्ष के दौरान विभिन्न विद्यार्थियों तथा समुदाय को एकजुट कर सकने के आधार के रूप में भावी यात्रा का इस्तेमाल किया, मेरे कहने से वे इसके लिए द्रव्य बचाते थे और सांस्कृतिक कार्य आदि सहित विविध प्रकार की तैयारियां करते थे। उदाहरणार्थ, हमने जाड़े का एक पूरा मौसम अपनी कावेशिया–व्लादीकाव्काज़, त्बीलिसी, बातूमी–यात्रा की योजना बनाने में व्यतीत किया। यहां तक कि हमने अपने एक चर को सब कुछ पता लगाने के लिए भेजा, ताकि हम पहले से ही जान लें कि हमें कहां विश्राम और भोजन करना है। उक्त चर एक कम्यूनार्ड था। बाद के वर्षों में हम अपनी यात्राओं की विस्तृत योजना इस तरह तैयार करते थे कि उदाहरणतः हमें ज्ञान रहता था कि हम पांच सौ व्यक्ति ख़ार्कोव से बाहर जाने पर ठीक-ठीक किस मील के पत्थर के पास कम्यूनार्ड इवानोव कम्यूनार्ड पेत्रोव को आगे ले जाने के लिए तुरही पकड़ायेगा। इवानोव अकेले ४०० किलोमीटर लम्बे फ़ौजी जार्जियाई मार्ग पर इसे नहीं ले जा सकता था, हां जब उसे बजाना पड़ता था, तो वह उसे बजाता था, परन्तु दूसरे कम्यूनार्डों में प्रत्येक इसे दस किलोमीटर तक ढोता था। उनमें से प्रत्येक इसे ठीक-ठीक जानता था कि किस मील के पत्थर के पास उसे यह बाजा दूसरे को देना है और आगे ढोनेवाला व्यक्ति कौन है।

इस प्रकार की छोटी-मोटी बातों की योजना पहले से बनानी पड़ती थी, ताकि यात्रा में थकान न महसूस हो। और जहां तक अधिक आवश्यक बातों का सम्बन्ध है–कहां ट्रेन पकड़ी जाये, कहां रात व्यतीत की जाये, ताकि ठहरने के लिए कोई इमारत सुलभ हो, पास ही में पानी की व्यवस्था हो और ऐसे लोग सुलभ हों, जिनसे हम बातचीत कर सकें तथा मुलाक़ात हो सके–किसी को हर बार पहले से जाना पड़ता था और सभी बातों का पता लगाना पड़ता था।

हमारी यात्रा का सबसे लम्बा पथ–ख़ार्कोव, निज़्नी नोव्गोरोद, स्तालिनग्राद, सोची, ओदेसा, ख़ार्कोव था। इस यात्रा में छः सप्ताह लगे

प्रतिदिन बढ़ती जा रही है—तो उत्पादन से इसका सम्बन्ध आवश्यक नहीं है, और यहां तक कि इस प्रकार के किसी सम्बन्ध का न होना ही उपयोगी होता है।

मुझे पक्का यकीन है कि स्कूल और उत्पादन के बीच सम्बन्ध कायम करने के बारे में जो उपदेश दिये जाते हैं, वह मिथित प्रणाली में बचा-खुचा विश्वास है, जिसे मैंने सदा नापसन्द किया, क्योंकि यह मेरा पक्का विचार है कि सम्बन्धों के स्वतंत्र गठन की निर्दिष्ट भूमिका को कायम रखना चाहिए और इस स्वतन्त्र गठन से व्यक्तित्व उदार एवं अनुपम हो जाता है, जबकि जहां भी साझेदारी के सम्बन्ध के जरिये अधिकाधिक क्रियाशीलता की भावना पैदा करने की कोशिश की जाती है, तो केवल स्फूर्तिशून्य और अरुचिकर व्यक्तित्व का ही निर्माण हो पाता है।

इसलिए मैं अपने व्यावहारिक कार्य मे अपने इस सिद्धान्त से एक ही बार डिग सका—प्रत्येक कक्षा के लिए एक सप्ताह मे आलेखन के केवल दो घंटे का समय देना। शेष अन्य बातों मे किसी भी दूसरे स्कूल की भांति हमारे स्कूल का सचालन शिक्षक परिषद् द्वारा होता था और उत्पादन से इसका कोई भी सम्बन्ध नहीं था। ज्ञान, विद्या और शिक्षण के प्रत्येक क्षेत्र मे हमारे अपने नियम, अपेक्षाएं और लक्ष्य थे और सभी अवस्थाओं मे इन आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता था।

फलतः सर्वथा उपयुक्त और स्वाभाविक सम्बन्ध कायम हुए। विद्यार्थी को उत्पादन, उसकी व्यवस्था और प्रक्रिया की अच्छी जानकारी हासिल हो जाती थी और इसके अलावा माध्यमिक शिक्षा पाकर वह एक शिक्षित व्यक्ति हो जाता था।

और जब सैद्धान्तिक विचार के प्रतिनिधियों ने इस पर आपत्ति की, तो मैंने उनसे कह दिया कि माध्यमिक शिक्षा और मिलिंग-मशीन आपरेटर की सर्वोच्च योग्यता मे अनुपम सामजस्य है और इसके साथ अन्य कोई योग्यता जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। अन्ततः यह कोई शिकायत की बात नहीं है कि एक व्यक्ति मशीन को चलाना जानता है।

मेरा विश्वास है कि यदि पूर्ण रूप से विचार किया जाये, तो केवल पूर्ण माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने की स्थिति मे ही चरित्र को नये सांचे में ढाला और बाल-अपराधी को सही रास्ते पर लाया जा सकता है। जैसा कि मैंने कहा है, दस-साला स्कूल की पूरी शिक्षा प्राप्त करने पर जो

प्रभावित कर दिया गया था। हैसियत, धन, दयालुता और निर्ममता पर निर्भरता–यह थी पराश्रयता की वह शृंखला, जिसके लिए लोगों को प्रशिक्षित किया जाता था।

हम भी अपने विद्यार्थियों को निर्भरता की निश्चित शृंखला के लिए तैयार करते हैं। यह सोचना भारी भ्रम है कि एक बार पूंजीवादी समाज की पराश्रयता की शृंखला, अर्थात् शोषण और भौतिक सुविधाओं के असम वितरण से मुक्त होने के बाद, एक विद्यार्थी किसी भी निर्भरता की शृंखला से पूर्णतया मुक्त हो जाता है। सोवियत समाज में निर्भरता की शृंखला भिन्न प्रकार की है, इस समाज के सदस्यों के परस्परावलम्बन से वे न केवल संयुक्त हो जाते हैं, बल्कि संगठित जीवन व्यतीत करते हैं और एक सुनिश्चित ध्येय को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। और हमारे इस संगठन में ऐसी प्रक्रियाएं एवं तत्त्व हैं, जो सोवियत जन की नैतिकता और उसके आचरण को निर्धारित करते हैं।

सोवियत समाज में रहनेवाले हम सभी लोग एक समुदाय के सदस्य के रूप में, अर्थात् निर्भरता की सुनिश्चित प्रणाली के अन्तर्गत रहनेवाले लोगों के रूप में शिक्षित और परिष्कृत होते हैं। मैं नहीं जानता कि क्या मैंने अपने काम में अनिवार्य रूप से इस बात को छानबीन की है अथवा नहीं, परन्तु शिक्षा के इस पहलू में मेरी सदा सर्वाधिक अभिरुचि रही है। अनुशासन का उल्लेख करते समय सहोत्र में मैं इसकी भी चर्चा कर चुका हूं।

इस समस्या पर अधिक स्पष्टता के साथ गौर करने के लिए, आइए, हम एक [illegible] समुदाय, मेरे कहने का अभिप्राय है एक और नहीं, बल्कि समुदाय, अर्थात् सुनिश्चित सामान्य लक्ष्योंवाले समुदाय पर दृष्टिपात करें। इस समुदाय में निर्भरता बहुत ही स्वाभाविक है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों की आवश्यकता से अपनी आवश्यकता का मेल बिठाना पड़ता है [illegible] एक समुदाय की आवश्यकताओं से और दूसरे, अपने [illegible] समुदाय की आवश्यकताओं से अपनी आवश्यकताओं का ऐसा मेल बिठाना पड़ता है कि उसका किसी बड़े समुदाय के सामान्य लक्ष्यों से [illegible] न हो। [illegible] सामान्य लक्ष्यों के आधार पर ही किसी के [illegible] का [illegible] [illegible]। सामूहिक और किसी [illegible] का [illegible] व्यक्तित्व [illegible] को [illegible] करता है। [illegible]

करते, बल्कि समुदाय के प्रति अपने दायित्वों अथवा अपने सम्बन्धों, समुदाय के प्रति अपने कर्तव्य, समुदाय के सदस्य के नाते अपनी प्रतिष्ठा और समुदाय के सम्बन्ध में अपने कार्यों से बंधे हुए हैं। एक समुदाय के सदस्यों के दूसरे समुदाय के सदस्यों के प्रति इस संगठित रुझान को हमारे शैक्षिक ढांचे में निर्णायक भूमिका अदा करनी चाहिए।

एक समुदाय क्या है? यह केवल भीड़ अथवा परस्पर प्रभाव डालनेवाले व्यक्तियों का समूह नहीं है, जैसा कि पेडालोजी विशेषज्ञ बताया करते थे। यह एक स्पष्ट उद्देश्य का अनुसरण करनेवाले और अपने सामुदायिक संगठनों से नियमित व्यक्तियों का एक संगठित समूह है। यदि एक समुदाय समुचित रूप से संगठित हो, तो इसके पास सामुदायिक निकाय और समुदाय के प्रतिनिधियों द्वारा अधिकृत संगठन होगा और अपने साथी के प्रति एक व्यक्ति का रुझान दोस्ती, स्नेह अथवा अच्छी निकटता का प्रश्न नहीं, बल्कि दायित्वपूर्ण निर्भरता का सवाल है। अगर साथी समान हैसियत के हों, कन्धे से कन्धा मिलाये हुए चल रहे हों और प्रायः एक ही प्रकार का काम कर रहे हों, तो भी वे केवल दोस्ती से नहीं, बल्कि धन्धे के प्रति अपने सामूहिक दायित्व और समुदाय के काम में अपनी संयुक्त साझेदारी द्वारा एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं।

उन साथियों के सम्बन्ध विशेष अभिरुचिपूर्ण हैं, जो एक ही कार्य क्षेत्र में नहीं, बल्कि विभिन्न कार्य क्षेत्रों में संलग्न हैं और उन साथियों के सम्बन्ध इससे अधिक अभिरुचिपूर्ण हैं, जो एक-दूसरे पर समान रूप से निर्भर नहीं हैं, क्योंकि एक-दूसरे के अधीन काम करता है। बच्चों के एक समुदाय में समानता के नहीं, बल्कि मातहती के सम्बन्धों को पैदा करना सबसे कठिन काम है। हमारे शिक्षक सबसे अधिक इसी से डरते हैं। एक विद्यार्थी को अपने साथी की आज्ञा मानने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए, उसे केवल आज्ञा ही नहीं माननी चाहिए, बल्कि आज्ञा मानने की क्षमता भी प्राप्त करनी चाहिये।

और इसी प्रकार उसे यह भी जानना चाहिए कि अपने साथी को कैसे आदेश दिया जाता है, अर्थात् कैसे उसे कुछ काम सौंपा जाता है और उसे पूरा करने की अपेक्षा की जाती है।

एक साथी की आज्ञा मानने की क्षमता—शक्ति, धन अथवा दयालुता के सम्मुख नतमस्तक होने की नहीं, बल्कि एक समुदाय के समानाधिकार-

इस ढंग को प्रयोग में लाने का एक भी मौका मैंने नहीं खोया। मैं इस सम्बन्ध में जिस पहले उदाहरण को पेश करता हूं, उसे आपके सम्मुख प्रस्तुत करूंगा। नव दीक्षित नये लड़के-लड़कियों के आने के फलस्वरूप पुनर्वर्गीकरण आवश्यक हो जाने पर निवासियों को एक शयनागार से दूसरे शयनागार में हटाना पड़ता। इसका उल्लेख कर देना चाहिए कि नवागन्तुकों को सदा पुरानी टुकड़ियों में बांट दिया जाता था। कमांडर परिषद् यह निर्णय करती थी कि अमुक समय पर एक शयनागार से दूसरे शयनागार में हटने का काम शुरू होगा। केवल बिस्तर अपने साथ हटाया जा सकता था, चारपाइयां, मेजें, अलमारियें और सन्दूकें जहां की तहां छोड़ दी जाती थीं। एक सदस्य, उसे कोलिय के नाम से पुकार लीजिए, हटने की व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार बना दिया जाता था। शुरू में वह इसे बहुत कठिन काम महसूस करता था। लड़के उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर देते थे, वे हाथ हिलाकर उसकी आज्ञा को टाल जाते थे और वह समझ नहीं पाता था कि कैसे इन चार सौ लड़के-लड़कियों को आज्ञा मानने को मजबूर किया जाये।

बाद के वर्षों में मैंने ऐसी समुचित व्यवस्था कर दी कि केवल कोलिय ही नहीं, बल्कि दूसरों को भी ज्ञान हो गया था कि उन्हें क्या करना है। अपनी उंगली के इशारे से, एक दृष्टि से अथवा अपनी तनी हुई भृकुटी से हटने की व्यवस्था को नियन्त्रित करते हुए कोलिय गलियारे में खड़ा रहता था और सभी इसे महसूस करते थे कि सफलता की जिम्मेदारी कोलिय पर थी, अगर कोई सर्वोत्कृष्ट चित्र को अपने नये शयनागार में उठा ले जाये, तो इसके लिए कोलिय जवाबदेह होगा, उसे अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने के लिए जवाब देना होगा।

फर्ज कीजिए कि शाम की किसी ट्रेन से मुझे पथ से भटके हुए बीस लड़कों को उतारकर लाना था। कमांडर परिषद् इस कार्य के लिए सदा पांच या छः व्यक्तियों की एक टोली का चयन करती थी। मान लीजिये कि जेम्ल्यान्स्की इस टोली का कमांडर नियुक्त हुआ। वह अच्छी तरह इसे समझ जाता कि वही कमांडर है और पांच या छः व्यक्तियों की टोली बिना चूं किए फौरन उसके आदेशों का पालन करती थी। इस व्यवस्था

- कुछ प्रसन्नता होती थी, उनके पथ-प्रदर्शन के लिए किसी मुख्य

भी किसी को इसका इन्चार्ज बनाना चाहिए। पूरे समुदाय के दायित्व के साथ इस व्यक्तिगत जिम्मेदारी का सामंजस्य होना चाहिए। अगर यह समन्वय न कायम किया गया, यदि जिम्मेदार व्यक्तियों के बीच पूर्ण तालमेल स्थापित न हुआ, तो सारी बात खिलवाड़ के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकती।

इन्हीं सब तरीकों, इन्हीं सब नियत कार्यों के जरिए कार्य की शैली, समुदाय की शैली गठित की जाती है। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूं इस विषय पर निबन्ध लिखे जाने चाहिए।

मेरा विचार है कि सोवियत बाल-समुदाय में कार्य-शैली की निम्नांकित विशेषताएं होनी चाहिए:

सर्वप्रथम उल्लासपूर्ण भावनाएं होनी चाहिए। मैं इस गुण को बुनियादी बात मानता हूं। सतत धैर्यशीलता, उदास व मनहूस चेहरे नहीं, विक्षुब्ध अभिव्यक्तियां नहीं, कार्य के लिए सतत तत्परता और अच्छी मनोवृत्ति, मेरे कहने का अर्थ है, दिखावे की चुहल नहीं, बल्कि प्रसन्न और प्रफुल्ल मनोभाव। बाल-समुदाय के सदस्यों को उपयोगी काम, उद्देश्यपूर्ण दिलचस्प और विवेकपूर्ण कार्य करना चाहिए तथा कभी भी आवारागर्दी, चीख-चिल्लाहट एवं पशु-तुल्य व्यवहार नहीं करना चाहिए।

मैं चीखने, शोर करने और दौड़-धूप जैसे व्यवहार को बहुत ही नापसन्द करता हूं। द्ज़ेर्जीन्स्की कम्यून में, जहां हमारे पास पांच सौ लड़के-लड़कियां थीं, कभी आपको कोई शोरगुल नहीं सुनाई पड़ सकता था। परन्तु इसके बावजूद आप उन्हें सदा प्रसन्न, उत्फुल्ल आशान्वित और विश्वासपूर्ण देख सकते थे।

इस में कोई सन्देह नहीं है कि यह प्रसन्नता किसी विशेष तरीके से नहीं पैदा की जा सकती : यह सर्वोपरि रूप में समुदाय के काम के फलस्वरूप प्राप्त होती है, जिसकी चर्चा मैं पहले कर चुका हूं।

शैली की दूसरी विशेषता आत्मसम्मान की भावना है। निस्सन्देह, यह तत्काल नहीं पैदा की जा सकती। समुदाय के महत्व की समझदारी, अपने निजी समुदाय में गर्व की भावना से अपने में यह भावना पैदा होती है।

अगर आप कम्यून में पधारें, तो बड़ी विनम्रता, बड़े सौजन्य के साथ आपका स्वागत किया जायेगा। यह अनोखी बात होगी कि कोई भी लड़का

बिना अभिवादन किये आपके पास से गुजर जाये। आपकी भेंट जिस पहले व्यक्ति से होगी, वह निश्चित रूप से कहेगा:

"आप कैसे हैं? कृपया बताइये कि आप किससे मिलना चाहते हैं?"

और सभी सावधान होते हैं।

"आपका शुभनाम क्या है, और आप किस काम से पधारे हैं?"

कम्यून के बारे में आपसे कोई शिकायत नहीं करेगा। इस प्रसग में मैंने कुछ आश्चर्यजनक बातों का अवलोकन किया है। एक ऐसे कम्यूनार्ड को ही लीजिए, जिसे किसी बात के लिए डाटा गया हो और जो अभी काफ़ी परेशान हो। अचानक उसकी भेंट एक अजनबी, एक आगन्तुक से हो जाये। तत्काल उस में परिवर्तन आ जायेगा, वह प्रसन्न और उल्लसित नजर आयेगा तथा आप जहा भी जाना चाहेंगे, वहा आपको ले जाने के लिए तैयार हो जायेगा। यदि अन्दर के लिए अनुमतिपत्र की जरूरत होगी, तो वह कहेगा:

"कृपया इजाजतनामा लेने के लिए मेरे साथ आइए।"

अगर वह अपनी निजी परेशानियों, अथवा उधेड़-बुन में होगा, तो भी वह उन सभी बातों को उस समय गौण समझेगा और आपको कभी यह भापने भी न देगा कि एक मिनट पहले वह दु:खी था। यदि आप उससे पूछेंगे:

"कहो, क्या हालचाल हैं?"

वह उत्तर देगा:

"बहुत ठीक है।"

वह खुश करने के लिए नहीं, बल्कि समुदाय के प्रति अपने दायित्व की भावना महसूस करने के कारण ऐसा करता और दण्ड पाने के बावजूद भी अपने समुदाय पर उसे गर्व होता।

अथवा फिर यह फर्ज़ कीजिए कि एक लड़के को किसी गलती के लिए सजा दी गई है और तभी दर्शक-मंडली पहुंच गयी।

"कितना अच्छा लड़का है! क्या वह ठीक ढंग से काम कर रहा है?"

कोई इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहता कि उसे सजा दी गई है। यह बुरी प्रवृत्ति समझी जाती थी, उनका दृष्टिकोण यह होता है कि यह अपना मामला है और आगन्तुकों को हम उसे नहीं बतायेंगे।

इस मर्यादापूर्ण वातावरण को पैदा करना बहुत कठिन है, वर्षों में

यह पैदा होता है। निस्सन्देह प्रत्येक आगन्तुक के प्रति, प्रत्येक साथी प्रति पूर्ण विनम्रता का व्यवहार होना चाहिए। परन्तु इस विनम्रता के सा ही समुदाय में प्रवनतियों, सटरगश्ती करनेवाले आवारों और सबसे अधि शत्रुओं के चुपके से घुसने के प्रयासों का प्रतिरोध करने की तत्परता भ होनी चाहिए। और इसी कारण, गोकि कम्यूनार्ड बड़ी विनम्रता के सा आगन्तुक का अभिवादन करते और जहां भी आप जाना चाहते, वहां आपको ले जाते, वे सबसे पहले आपसे यह पूछते:

"आप कौन हैं? आप किस काम से आये हैं?"

और यदि वे महसूस करते कि वहां आपके आने का कोई वास्तविक कारण नहीं है, तो वे उसी प्रकार विनम्रता के साथ आपसे कहते:

"हमें दुःख है, हम आपको अन्दर नहीं आने देंगे। परन्तु यदि आप किसी कार्यवश अगली बार आयेंगे, तो बड़ी खुशी के साथ आपको अन्दर आने देंगे।"

ऐसे आवारागर्दों की कमी कोई कमी नहीं थी, जो निष्प्रयोजन केवल सटरगश्ती के लिए वहां आना चाहते थे।

इस प्रकार की विनम्रता सर्वाधिक मूलभूत योग्यता से प्रादुर्भूत होती है, जिसे हमें अपने प्रत्येक नागरिक में विकसित करनी चाहिए। यह परिस्थिति को भांपने की योग्यता है। शायद किसी बाल-समुदाय या भीड़ में इसकी कमी को और आपका ध्यान गया हो। एक व्यक्ति उसी चीज को देखता है, जो उसकी आंखों के सामने हो और उस पर ध्यान नहीं जाता, जो उसके पीछे छिपा हुआ रहता है।

आपके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है, आप किससे परिवृत हैं, दूसरे कमरों में क्या हो रहा है, जिन्हें आप नहीं देख सकते, उसे महसूस करने, जीवन के लहजे को, उस खास दिन के व्यवहार को अनुभव करने की योग्यता प्राप्त करना बहुत कठिन है और इसके लिये बहुत प्रयास तथा सतत चिन्तन अपेक्षित है। हम बाल-समुदाय में अक्सर जो शोरगुल सुनते हैं, उसमें परिस्थिति भांपने की भावना की पूर्ण कमी, स्वयंभाव और अपनी ही गति के अनुभव के अलावा और कुछ नहीं सिद्ध होती है। वातावरण का कोई अनुभव नहीं होता। परन्तु वास्तविक सोवियत नागरिक को पूरी दृढ़ता के साथ यह अनुभव करना चाहिए कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। पुराने दोस्तों के बीच होना एक भिन्न बात है। उस स्थिति में आप किसी

माम ढग से व्यवहार करने के लिए स्वतंत्र हैं। परन्तु नये विद्यार्थियों के बीच होना बिल्कुल दूसरी बात है, जिन में से कुछ केवल कल ही लाये गये हों। यदि कम्यूनार्ड को यह ज्ञात हो, तो नवागन्तुकों को जो बातें नहीं बतानी चाहिये, वह उनसे कुछ भी नहीं कहेगा। अथवा फिर यह फर्ज कीजिये कि एक महिला या एक युवती पास से गुजर रही हो। वह उसके लिए नगण्य है, परन्तु फिर भी उसे परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए। यदि मैं वहां कहीं आस-पास हूं, तो कम्यूनार्ड को यह जानना तथा महसूस करना चाहिए कि समुदाय का प्रधान, मैं, वहां पास ही हूं। यदि कोई अन्य, एक शिक्षक, एक प्रशिक्षक, एक इंजीनियर अथवा एक अधिकारी हो, तो भी उसे परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए।

इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे किसी के अनुकूल अपने को ढालना अथवा किसी का कृपापात्र बनना है। इसका मतलब यह है कि समुदाय के विभिन्न सदस्यों को यह अनुभव करना है कि आवेष्टित करनेवाली विभिन्न परिस्थितियों में उसका व्यवहार कैसा होना चाहिए।

मैंने इसे देखा है कि बाल-सदनों में रहनेवाले अधिकांश लड़के-लड़कियां आगन्तुकों से बातचीत करते समय अनुचित लहजा अपनाते हैं। जिस व्यक्ति को उन्होंने पहले कभी देखा भी नहीं है, उसके शिक्षकों, अधीक्षकों और एक-दूसरे के खिलाफ शिकायतें करते हुए अपनी तकलीफों की कहानी सुनाने लगते हैं। मैंने अजनबियों को रामकहानी सुनाने की यह आदत दूर करने का काम शुरू किया। स्वयं अपने दोष-गुण पर विचार करने की बात तो ठीक थी, परन्तु किसी भी अजनबी की उपस्थिति में कष्ट-कथा सुनाना, शिकायत करना और, जैसा कि कम्यूनार्ड कहा करते थे, चीखना-चिल्लाना बर्दाश्त नहीं करना चाहिये।

कम्यूनार्ड अक्सर किसी न किसी बात से नाखुश रहते थे। वे कमांडर परिषद् में अपनी शिकायतों की चर्चा करते थे, परन्तु वे अजनबियों से कभी भी कोई शिकायत नहीं करते थे, जिनके सम्मुख समुदाय को पूर्णतया अविभक्त रूप में अपने को प्रस्तुत करना था। शिकायत करने की प्रवृत्ति आत्म-आलोचना करने के समान नहीं है। यह किसी उस व्यक्ति की मनोदशा की द्योतक है, जो समुदाय में अपने को दुःखी महसूस करता है, इससे प्रकट होता है कि स्वयं समुदाय और इसके कुछ सदस्यों की

गुटमुट [illegible] करने की आदत हो गई है। आत्मविश्वास की भावना समुदाय में प्रमुख स्थान देता है और यह उसकी शैली सुन्दर बनाने समर्थ है। अलग-अलग प्रत्येक व्यक्ति से दोस्ती रखते हुए, उनके अलग-पहचान करने तथा छोटे-मोटे समस्याओं के लिए प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षा की भावना प्रदान कर समुदाय में संघ के जरिये इसे विकसित करना है।

आत्मविश्वास की यह भावना अनुभव से प्राप्त होती है। मैंने इस बात को पैदा करने में इतनी सफलता प्राप्त की कि दस अथवा बारह साल के सबसे अधिक कमजोर स्वभाव के लड़के-लड़कियां भी समुदाय के सब सदस्यों से अपने को हीन नहीं समझते थे। जहां तक काम का सम्बन्ध था, तो वे जरूर यह समझते थे कि वे छोटे हैं, परन्तु व्यक्तियों के रूप में वे अपने को हीन नहीं मानते थे। उन में आत्मविश्वास था, क्योंकि वे अपने को पूर्णतया सुरक्षित महसूस करते थे, वे यह अनुभव करते थे कि कोई भी उन्हें आघात नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि यदि उसे किसी व्यक्ति का खतरा रहता, तो उससे उसको उसकी टुकड़ी, उसकी कार्यटोली, समूह और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे दिखाई पड़ जानेवाला पहला साथी बचाता था।

स्पष्ट रूप से यह प्रकट होगा कि आत्मविश्वास की भावना अपने आप नहीं पैदा होती, इसे पैदा करना पड़ता है, इसके लिए प्रयास करना पड़ता है। तीव्र उत्साह, स्फूर्ति, क्रियाशीलता और गति को प्रोत्साहन प्रदान करने के साथ ही विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार गति धीमी करने, संयम की शिक्षा भी देनी चाहिए। साधारण कोटि का शिक्षक यथार्थतः इस गुण को विरले ही अपना पाता है। अपने ऊपर और विशेष रूप से बचपन में नियंत्रण लगाना बहुत कठिन बात है। यह स्वतःस्फूर्त रूप से पैदा नहीं होता, इसलिए इसे सिखाना पड़ता है। और इसकी शिक्षा देने का दायित्व शिक्षक पर है, क्योंकि एक बच्चा अपने मन से इस गुण को कभी भी विकसित नहीं कर सकता। एक व्यक्ति को हर क़दम पर अपने को संयम में रखना चाहिए, और यह आदत बन जानी चाहिये। प्रत्येक शारीरिक एवं मानसिक क्रिया और विशेष रूप से बहस तथा झगड़ों में संयम अभिव्यक्त हो जाना चाहिए। हम अक्सर यह देखते हैं कि केवल इस गुण की कमी के कारण बच्चे आपस में लड़ा करते हैं। और हमारे कम्यूनार्डों ने यह

अच्छी तरह महसूस कर लिया था कि आत्मनियंत्रण के बिना एक व्य
टूटे हुए इंजन के समान है।

एक बच्चे में अपने साथी की आज्ञा मानने का गुण विकसित कर
बहुत कठिन काम है। समुदाय के कल्याण की गंभीर चिन्तना से
लक्ष्य को प्राप्त करने में मुझे सहायता मिली। बच्चों के संयम
बाहर होने के पहले ही मैं नियंत्रण लगा देता—रोक देता—और
प्रकार झगड़ा नहीं होने पाता। झगड़ों और इससे भी अधिक मारपी
दोषारोपण और चुगलखोरी दूर करने में मुझे सफलता मिली।
मेरी सफलता का एकमात्र कारण यही था कि वे आवश्यकतानुसार
पर नियंत्रण लगाना, संयम की भावना अपनाना जानते थे, मैं
कहते हुए कि तुम ठीक हो और तुम गलत हो, उनके पीछे नहीं
जाता था।

आप सभी लोग यह अच्छी तरह समझते हैं कि मैं किन बातों
और संकेत कर रहा हूं और इसके क्या नतीजे हो सकते हैं। इस में
सन्देह नहीं है कि बाह्य व्यवहार के नियम और कायदे को मिला
सामुदयिक जीवन का प्रत्येक पहलू इस शैली और उसकी विशेषताओं
परिपूर्ण होना चाहिये। मेरे काम का विश्लेषण करते समय कइयों ने ब
व्यवहार के नियमों का मजाक उड़ाया और उन्हें स्वीकार करने से इनक
किया।

मैं आज भी इसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण नियम मानता हूं कि एक कम्यून
को सीढ़ियों की रेलिंग को पकड़े बिना चलना चाहिए, कि उसे दीवाल
सहारे नहीं खड़ा होना चाहिए अथवा मुझसे या अन्य किसी व्यक्ति से
ढंग से खड़े होकर बात नहीं करनी चाहिए; मैं इसे भी बहुत महत्त्व
मानता हूं कि उसके कमांडर की हैसियत से मैं उसे जो भी आदेश
हूं, उसके उत्तर में उसे "जी!" कहना चाहिए और यह कि जब तक
ऐसी प्रतिक्रिया नहीं प्रकट करता, तब तक आदेश के सम्बन्ध में उस
समझदारी स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

यह सब कुछ बहुत महत्वपूर्ण है। हमने इसे नियम बना दिया
फ़र्ज़ कीजिए जेम्ल्यान्स्की घर पर किये जानेवाले काम का इनचार्ज
वह दूसरे लड़के से कहता:

"निकोलाई, जाकर जरा मेरे लिए पेंसिल और कागज तो ले आओ

मगर निकोलाई यह सुनकर केवल दौड़ पड़ता, तो ज़ेम्ल्यान्स्की उससे कहता :

"तुम्हारा उत्तर क्या है?"

इस पर वह कहता :

"जी!"

यह बाहरी चुस्ती, नियमानुकूल आचरण की यह भावना व्यवहार के अन्दरूनी अन्तर्य को भी स्थिर करती है। ज़ेम्ल्यान्स्की और निकोलाई दोनो शायद दिन के शेष समय गेंद-बल्ले का खेल अथवा फ़ुटबाल एक साथ खेलते, परन्तु ठीक उसके बाद ही उन में एक कमांडर तथा दूसरा उसका मातहत होता। और उनके सम्बन्धों को सुनिश्चित बाह्य रूप ग्रहण करना पड़ता था।

अगर मैं किसी को सज़ा देता था, तो जब तक वह लड़का "जी!" नहीं कहता था, तब तक मैं यह नहीं समझता था कि उसने इसको स्वीकार कर लिया है।

व्यावहारिक सम्बन्धों में विनम्रता का यह व्यवस्थित ढंग बहुत ही उपयोगी बात है, क्योंकि इससे इच्छा-शक्ति गतिशील होती है, कार्य-कुशलता और चुस्ती की भावना पैदा होती है, वास्तविक व्यावहारिक सम्बन्धों को बल मिलता है और दोस्ती, अच्छे घनिष्ठ सम्बन्धों, स्नेह, सौहार्द और प्रयोजन में विभेद करने की शिक्षा प्राप्त होती है।

मेरा ख़्याल है कि इसके बिना भी काम निकाला जा सकता है, परन्तु व्यावहारिक प्रशिक्षण का यह सर्वाधिक हितकर रूप है, व्यावहारिक सम्बन्धों का बाह्य रूप है। और बाहरी रूप बहुधा स्वयं अन्तर्य का निर्धारण करता है।

अन्ततः यह ऐसी सामान्य, सहज नियमित बात हो जाती है, जैसे इससे भिन्न कोई बात हो ही नहीं सकती। सबसे छोटे बच्चों में अभिवादन का प्रभाव इतना प्रबल हो जाता था कि कोई भी इसे खेल या मज़ाक़ की बात नहीं समझता था और ज्योंही वे व्यावहारिक सम्बन्धों के क्षेत्र में प्रविष्ट होते थे, त्योंही सहजतः और शीघ्रता से उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण का प्रभाव भी पड़ता था।

एक लड़का मैदान में कोई बहुत ही दिलचस्प खेल खेलता होता। ड्यूटी पर तैनात कमांडर के पास से तेज़ी से गुज़रते हुए वह उसे कोई छोटा-सा देते हुए सुनता। लड़का तत्काल सावधान होकर खड़ा हो जाता।

अगर कोई आम निश्चित शैली न हो, तो बाह्य व्यवहार के ये सभी नियम व्यर्थ हैं। यदि विद्यार्थियों को परिस्थिति भापने की क्षमता, संयम, दायित्व, कार्यक्षमता, प्रबन्ध तथा आत्मविश्वास की शिक्षा नहीं दी जायेगी, तो सिर्फ अच्छा बाह्य व्यवहार लागू करने की बात खोखली बात होगी। यह औपचारिक विनम्रता, जो शायद कुछ-कुछ सैन्यीकरण से मिलती-जुलती है, परन्तु वस्तुत: जो युवा पायनियर आन्दोलन के सिद्धान्तों से आगे नहीं जाती, तभी अनिवार्य, उपयोगी और समुदाय के लिए शोभा है, जबकि इस समुदाय में कार्य की निश्चित शैली और निश्चित लहजा हो।

मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता कि बाहुल्य एक अनाकर्षक समुदाय में कैसे कोई बच्चा रहना चाहेगा। मनोहरता जीवन का एक पहलू है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। और इसके बावजूद भी हम शिक्षकगण बहुधा सौन्दर्यशास्त्र के प्रति शून्यवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं।

सुरुचिपूर्ण व्यवहार की भांति एक पोशाक, एक कमरे, सीढ़ी और एक मशीनी औज़ार का सौंदर्य भी महत्त्वपूर्ण है। सौंदर्यशास्त्र के दृष्टिकोण से कौन-सा व्यवहार सुरुचिपूर्ण होता है? वही व्यवहार सुरुचिपूर्ण माना जाता है, जो आचारानुकूल हो, क्योंकि रीति अपने आप में उच्चतर संस्कृति की द्योतक है।

और इस प्रकार हमारे लिए एक अन्य परेशानी पैदा होती है : सौन्दर्यशास्त्र को विशिष्टताओं की परिणति, संकेत मानकर हम इसे स्वाभाविक रूप से शिक्षा का कारक मानने लगते हैं।

रुचिकर जीवन के लिए क्या बातें आवश्यक हैं, मैं उनकी सूची आपको नहीं दे सकता, परन्तु निश्चित रूप से जीवन आकर्षक होना चाहिए। एक बच्चे का आकर्षक जीवन और एक प्रौढ़ का रुचिकर जीवन – ये दोनों सर्वथा भिन्न बातें हैं। बच्चों की भावुकता का अपना ही ढंग है, उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति का अपना ही अन्दाज़ है। और एक बाल-समुदाय की वही विशेषता नहीं हो सकती, जो एक प्रौढ़ समुदाय की होती है।

उदाहरणार्थ, मनोरंजन को ही लीजिए। एक बाल-समुदाय में मनोरंजन की व्यवस्था होनी ही चाहिए। यदि खेल-तमाशा न हो, तो वह एक वास्तविक बाल-समुदाय नहीं है। और खेल से मेरा अभिप्राय केवल यह नहीं है कि एक लड़का कुदाल अथवा कोई अन्य खेल खेलता है, मेरे कहने

…र्थ यह है कि वह अपने जीवन के प्रति क्षण कुछ खेलता ही रहता है, वह अपनी कल्पनाओं में कुछ ऊंची उड़ानें भरता है, मनोरंजक कल्पनाएं करता है, वह कुछ क्रियाशील होता है और जैसा है अपने को खेल में उससे बड़ा महसूस करता है। सिर्फ मनोरंजन करनेवाले समुदाय में बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति को विकसित कर सकते हैं। और शिक्षक होने के नाते मुझे उनके साथ कुछ खेलना ही होगा। अगर मैं पढ़ाने, अपेक्षाएं रखने और अड़े रहने के अलावा और कुछ नहीं करता, तो मैं एक बाहरी तत्त्व हो जाऊंगा, हो सकता है कि यह आवश्यक हो, परन्तु फिर भी मैं उनके लिए अजनबी हो जाऊंगा। मेरे लिए एक शिक्षक के नाते कुछ खेलना अनिवार्य है और मैंने अपने सभी सहयोगियों से भी यही अपेक्षा की।

इस में कोई सन्देह नहीं है कि जब मैं आप लोगों के सम्मुख व्याख्यान दे रहा हूं, तो मैं एक भिन्न व्यक्ति हूं, परन्तु बच्चों के साथ रहने पर मैं अधिक प्रसन्न रहता हूं, अधिक हंसने-हंसानेवाली बातें करता हूं एवं खूब खुश रहता हूं और अनुग्रह अथवा इसी प्रकार की किसी अन्य भावना से प्रेरित होकर नहीं हंसता, बल्कि यह केवल सुखद और पर्याप्त रूप से भावनापूर्ण मुस्कान है। मुझे सिर्फ समुदाय पर हावी नहीं होना चाहिए, खुशी के साथ शिक्षा प्रदान करने के लिए इसका सदस्य भी होना चाहिए। रुचिपूर्ण ढंग से मुझे उन्हें प्रभावित करना चाहिए और इस कारण मैं कभी एक बार भी अपने विद्यार्थियों के सम्मुख बिना पेटी से बंधी कमीज अथवा बिना पालिश किया हुआ जूता पहनकर नहीं गया। मुझे भी निस्सन्देह अपनी प्रतिभा के अनुकूल चमकना था। मुझे भी समुदाय की भांति खुश रहना चाहिए। मैंने कभी भी अपने चेहरे से चिन्ता की भावना नहीं प्रकट होने दी। मैंने अपने को इस प्रकार अभ्यस्त कर लिया था कि बच्चे कभी यह भांप न पावें कि मैं किसी बात से चिन्तित या अस्वस्थ हूं।

दूसरी ओर मुझे फटकारने में भी सक्षम होना था। किस लहजे में विद्यार्थियों से बातचीत करनी चाहिए, उस बारे में पिछले साल अध्यापन-शास्त्रीय पत्रिका में मैंने एक लेख पढ़ा था। उस लेख में कहा गया था कि एक शिक्षक को विद्यार्थी से शान्ति के साथ बातचीत करनी चाहिए। इस प्रकार क्यों बातचीत करनी चाहिए? शान्ति के साथ क्यों? मुझे डर है कि यह इतना उबाऊ हो जायेगा कि विद्यार्थी शीघ्र ही उनसे

नफरत करने लगेंगे। यह ठीक नहीं है, मेरा कहना है कि एक शिक्षक को प्रफुल्लित, सजग होना चाहिए, और यदि कुछ अनुचित बात हो, तो निश्चय ही उसे नाराज होना चाहिए, बहुत जोर से डाटना चाहिए, ताकि विद्यार्थी महसूस करे कि शिक्षक सचमुच बहुत क्रुद्ध है न कि वह उन्हें केवल शिक्षाशास्त्रीय उपदेश दे रहा है।

मैंने अपने स्टाफ के सभी सदस्यों से यही अपेक्षा की। मैंने उत्कृष्ट शिक्षकों को बिना किसी पश्चाताप के नौकरी से हटा दिया, गोकि उनका केवल यही दोष था कि वे सदैव उदासीन आवाज़ में शिक्षाशास्त्रीय उपदेश दिया करते थे। एक बाल-समुदाय में काम करनेवाले वयस्क व्यक्ति को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और अपनी परेशानियों को अपने ही तक सीमित रखने की युक्ति मालूम होनी चाहिए।

एक समुदाय को बाहरी शोभा की भी आवश्यकता होती है। इसी कारण जबकि अभी हमारा समुदाय बहुत गरीब था, तो भी मैंने शुरू में ही छोटा नहीं, बल्कि अनुमानतः एक हेक्टर में फैली फूलों की क्यारियों सहित बड़ा पौधाघर निर्मित करवाया और व्यय की कोई परवाह नहीं की। और मैंने गुलाब तथा गुलदाउदी को लगाने पर जोर दिया तथा कभी भी साधारण किस्म के फूल नहीं लगाने दिये। बच्चे और मैं फूलों को महत्त्व प्रदान करना पसन्द करते थे। और वस्तुतः हमने एक हेक्टर के क्षेत्र में फूल उगाये, असली सबसे अच्छे फूल उगाये। सोने के कमरों, खाने के कमरों, कक्षाओं, अध्ययन-कक्षों में और यहां तक कि सीढ़ियों पर भी गुलदस्तों से हंसते हुए फूल दिखाई पड़ते थे। हमने टिन काटकर बास्केट तैयार किए और उन्हें सीढ़ियों पर रख दिया। यह बहुत ही अच्छी सूझ थी। एक टुकड़ी को अधिक फूल लेने के लिए लिखित अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती थी। जब फूल कुम्हला जाते थे, तो कोई पौधाघर में चला जाता था और एक या दो गमले उठा लाता था।

एक बाल-समुदाय में ये सभी फूल, स्वच्छ कमरे, साफ कपड़े और जूते बहुत आवश्यक हैं। जूते चमकदार होने चाहिए, अन्यथा सोचा जायेगा कि यह शिक्षा किस प्रकार की है? बच्चों को नियमित रूप से अपने दांत साफ करने चाहिए और जूतों पर पालिश करानी चाहिए। उनके कपड़ों पर धूल का एक कण भी नहीं होना चाहिए। सर के बाल सवारना नितान्त आवश्यक है। लड़के अपने बाल को किसी भी तरीके से सवारने के लिए स्वतंत्र

थे। इस नियम को लागू करने के लिए सफ़ाई आयोग का एक सदस्य
लिये महीने में एक बार शयनागारों का चक्कर लगा आता था।
कोई अपना बाल नहीं संवारे होता, तो वह तत्काल कैंची से उसके
काट देता: यह व्यक्ति नाई की दुकान में जाकर ठीक से अपने बाल कट
के लिए विवश हो जाता था। इस ढंग को अपनाने से सहायता मिली
सभी लड़के बाल संवारने की बात पर समुचित ध्यान रखने थे।

सफ़ाई-सम्बन्धी इन सभी नियमों को बड़ी सख़्ती से लागू करना पड़
था। दुब्रेनॉव्स्की कम्यून छोड़ने के छः महीने बाद मैं कीयेव से निरीक्षण
के लिए वहां गया। सभी लोग दौड़ते हुए आये, उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया
और सामान्यतया मेरा अच्छा स्वागत किया। मैं शयनागारों को देखने
गया। वहा कुछ चीज बिल्कुल ठीक नहीं थी: कमरे में धूल थी, एक गन्दा
रूमाल मेरे सर्वोत्कृष्ट कमांडर यानोव्स्की की चारपाई के पास वाली मेज
पर पड़ा हुआ था और जब मैंने उनका सन्दूक खोला, तो उस में गन्दी
चीजों का पूरा ढेर दिखाई पड़ा। उस समय मैंने शान्त स्वर का इस्तेमाल
नहीं किया, मैंने अपने कड़े स्वर में कहा: "यानोव्स्की को दस घण्टे
की गिरफ़्तारी की सज़ा; मैं आज किसी अन्य शयनागार का निरीक्षण
नही करने जा रहा हूं, मैं कल सुबह देखने आऊंगा।" उन्होंने दूसरे दिन
भोर में ही मुझे लाने के लिये कार वापिस भेज दी और जब मैंने कमरों
का निरीक्षण किया, तो मैंने धूल का एक कण भी नहीं पाया। मैंने उनसे
पूछा: "इतना जल्दी तुम लोगों ने सफ़ाई कैसे कर ली?" उन्होंने उत्तर
दिया: "हम सोये नहीं।"

बेशक मैं इस बात के बारे में वाक़िफ़ हूँ कि मेरी अपेक्षाएं एक है
और किसी दूसरे की और। यदि मैं इस प्रसंग में कम सख्त होता, तो
वातावरण और कार्य-शैली समाप्त हो गई होती। इन बातों को ध्यान में
रखना पड़ता है। उदाहरणार्थ, जब पाठ शुरू होता है, तो सफ़ाई आयोग
का ड्यूटी पर तैनात सदस्य शिक्षक से पूछता: "क्या आप हमारी कक्षा
की सफ़ाई से सन्तुष्ट हैं?" अध्यापक अपने को दुविधा में पाता: यदि वह
कहता कि वह प्रसन्न है, तो सफ़ाई आयोग अनेक दोष ढूंढ निकालता
कोने में धूल जमी हुई है, नाखून गन्दे हैं, किसी की डेस्क पर इन
से छुरी से काटने का चिह्न बना हुआ है। और इस प्रकार शिक्षक को
इस कक्षा में अनिवार्य रूप से सफ़ाई की अपेक्षाएं रखनी पड़ती थीं।

शिक्षक मैला-कुचैला कपड़ा पहने रहता, तो मैं उसे सबक शुरू ा। और इस कारण स्कूल जाते समय हम अपने सबसे अच्छे के अभ्यस्त हो गये थे। मेरे पास भी जो सबसे अच्छा सूट हनना था। हम सभी साफ-सुथरे दिखाई पड़ते थे।

महत्त्वपूर्ण बात है। खाने की मेज को ही लीजिए। मोमजामा ासानी से साफ हो जाने के कारण उचित है; आप इस पर सकते हैं, इसे धो सकते हैं और फिर यह बढ़िया तथा साफ परन्तु सफेद मेजपोश से ही किशोरों को कायदे से खाना खाने प्त हो सकती है, जबकि मोमजामा से उनकी आदत खराब शुरू में मेजपोश सदा गन्दा और धब्बेदार हो जाता है, हीने में वह खाना खाने के बाद भी साफ बना रहेगा। आप ों को सफेद मेजपोश नहीं देते, तब तक उन्हें खाने का ढग कते।

छोटी-मोटी चीज में भी गंभीरता से हाथ डालना चाहिए, हर निवार्य रूप से स्वच्छता की अपेक्षा रखनी चाहिए। कोई भी को चाबकर नुकीली क्यों बनावे? एक पेंसिल को सदा चाकू नाना चाहिए। निब पर जंग क्यों लगी है, दावात में पड़ी हुई है? आपके दिमाग में जो अनेकानेक शैक्षणिक ही से हो, उन में इन छोटी-मोटी बातों को भी शामिल कर ही व्यक्ति के लिए यह सब कुछ करना बहुत मुश्किल है, ूरा समुदाय मदद करे और इन छोटी-मोटी बातों का महत्त्व ो यह काम आसानी से किया जा सकता है।

दरवाजे पर राइफल लिये हुए एक लड़के को पहरे पर खड़ा ह अपना सबसे अच्छा सूट पहने रहता था। उसे इस पर ध्यान था कि प्रत्येक पांवदान पर अपने पांव साफ़ कर ले। पानी ो या धूप निकली हो, कोई भी व्यक्ति अपने पांव साफ किये नहीं जा सकता था। पहरा देनेवाला कम्यूनार्ड यह अच्छी तरह कि उसे क्यों यह नियम लागू करना पड़ता था. उसे स्वयं ो साफ करना होता था और वहां आनेवाले सभी व्यक्ति अगर ने पांव पोंछ लिया करते, तो वहां कम गर्द होती। कम्यूनार्डों को याद दिलाने की जरूरत नहीं पड़ती। कभी-कभी आगन्तुक पूछ बैठते.

"मैं तो साफ़ पक्की सड़क से होकर आ रहा हूं, पांव पोंछने की क्या जरूरत है?"

और लड़के को उन्हें समझाना पड़ता:

"यह तो ठीक है, परन्तु फिर भी कुछ धूल तो लगी ही होगी।"

एक दूसरी छोटी बात—रूमाल को ही लीजिए। मेरा ध्यान है कि यह बिलकुल स्पष्ट है कि प्रत्येक दिन हरेक को साफ़ रूमाल देना चाहिए। परन्तु इसके बावजूद मैंने ऐसे बाल-सदनों को देखा है, जहां एक महीने में एक बार रूमाल बदला जाता है, दूसरे शब्दों में वे बाल-कुम्हार लड़कों को गन्दे चिथड़े से नाक साफ़ करने की बात सिखाते थे। परन्तु निश्चित रूप से इस पर बहुत कम व्यय होता है।

थूकदानी का ही प्रश्न है। निरोग रहने का एक साधन—हर कोने में थूकदानी होनी चाहिए। परन्तु किसी को थूकना ही क्यों चाहिए? साके भी यही कहा करते थे:

"क्या तुम थूकना चाहते हो? तब तुम अस्पताल जाओ, तुम बीमार हो, स्वस्थ व्यक्ति कभी नहीं थूका करते।"

"परन्तु मैं धूम्रपान करता हूं।"

"यदि तुम धूम्रपान के ऐसे व्यसनी हो, तो शीघ्र ही सिगरेट पीना छोड़ दो, जो अच्छे सिगरेट पीनेवाले हैं, वे थूका नहीं करते।"

यदि लड़का थूकने की आदत नहीं छोड़ता, तो उसे अंतरंगी डाक्टर के पास ले जाकर उसकी स्वास्थ्य-परीक्षा करवाई जाती थी। डाक्टर लड़के को यह समझाते हुए कि यह अनिवार्य क्रिया के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सामान्यतया यह आदत छुड़ाने में सहायता प्रदान करता।

एक कोने में रखी थूकदानी यह संकेत करती है कि यहां थूकने की इजाज़त है। और सामान्यतया थूकदानी के पीछे की दीवार गन्दी हो जाती है।

समुदाय के जीवन में छोटी-मोटी ये बातें प्रकट हैं और इन्हीं से सुरुचिपूर्ण आदतें बनती हैं। जो लड़का थूकता नहीं और नाक को उंगली से साफ़ नहीं करता, वह एक अच्छी आदतवाला लड़का माना जाता है। इन छोटी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्णता पूरी होनी चाहिए और इनके अतिरिक्त इन पर समस्त रूप से ध्यान देना चाहिए तथा कुछ सामान्य सिद्धान्तों से इनका सम्बन्ध दिखाना चाहिए। इस प्रकार की अनेक छोटी-मोटी बातें हैं, जिनकी गणना नहीं गिनाई जा सकती, परन्तु वे मुख्य,

पूरी की जा सकती है और सामान्यतया समुदाय की प्रगति
सकती है।

पथ के साथ ही अपना व्याख्यान समाप्त करूंगा। मुझे पक्का
मेरे सहयोगियों और मैंने जो कुछ किया, उसे सोवियत संघ
त करते हैं। अन्तर केवल यह है कि सब से यही अपेक्षा
आकांक्षा है, मैं इन सामान्य नियमों को, अपने निजी नियमों
क उन नियमों को, जिन्हें सोवियत संघ में अनेकानेक शिक्षकों
लिए निर्धारित किया है, समझाने की उत्कण्ठा महसूस करता

ों को क्रमबद्ध करने की भी उत्सुकता मैं महसूस करता हूं।
कई स्कूलों को बहुत अच्छा काम करते हुए देखा है, हमारे देश
केन्द्र, अपनी शैली और अपनी ही चारुता के साथ भव्य रूप
कृष्ट समुदाय है। मेरा ख्याल है कि इस अनुभव को क्रमबद्ध
श्यकता है। यदि इन बीस वर्षों का यह प्रचुर सोवियत शैक्षिक
चला जाये, तो यह खेदजनक बात होगी। इसी कारण मैं
ने अनुभवों को लिपिबद्ध करना अपना कर्तव्य मानता हूं।
हुत कुछ अभी अस्पष्ट है और इसमें बहुत-सी भूलें हैं। परन्तु
णिक अनुभव को लोकगम्य बनाना एक उद्देश्य है, जिसे पूरा
।

चार है कि इस अनुभव का निष्कर्ष निकालना और सर्वोत्कृष्ट
क्षक संस्थाओं के तरीकों को प्रचलित करना आपका, मेरा
र्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवाले व्यक्तियों का विशेष

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और इसकी डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिए:

प्रगति प्रकाशन
२१, जूबोव्स्की बुलवार
मास्को, सोवियत संघ